जैन तीर्थवंदना

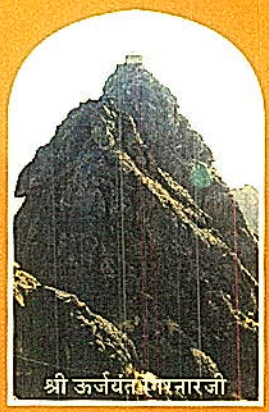

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2544

VOLUME : 8 | ISSUE : 4 | MUMBAI, OCTOBER 2017 | PAGES : 40 | PRICE : ₹25

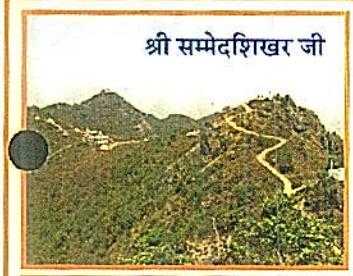

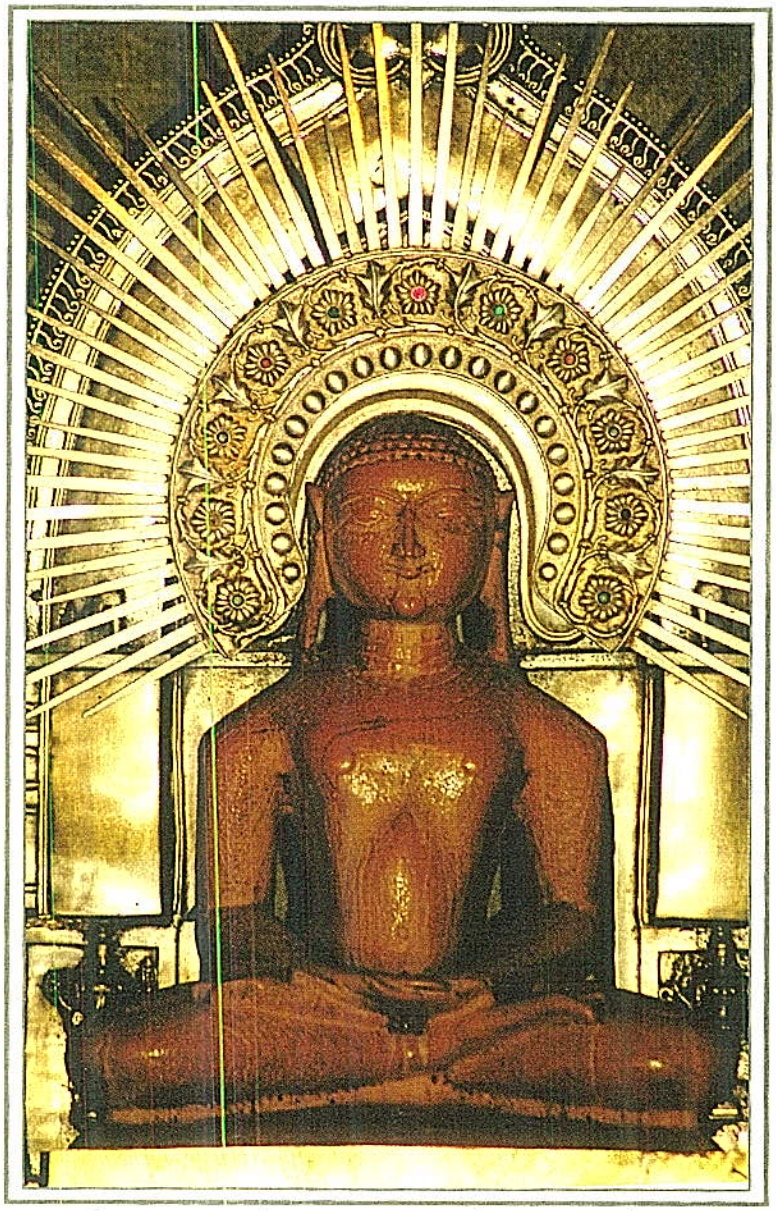

श्री 1008 महावीर भगवान, धर्मस्थल (कर्नाटक)

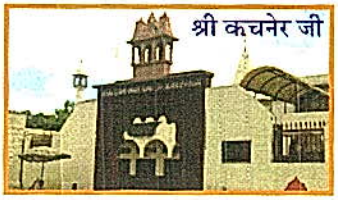

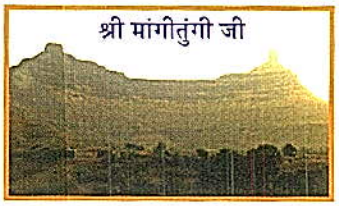

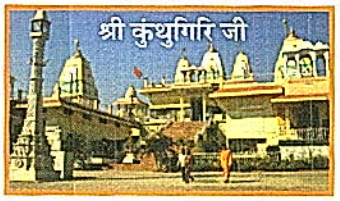

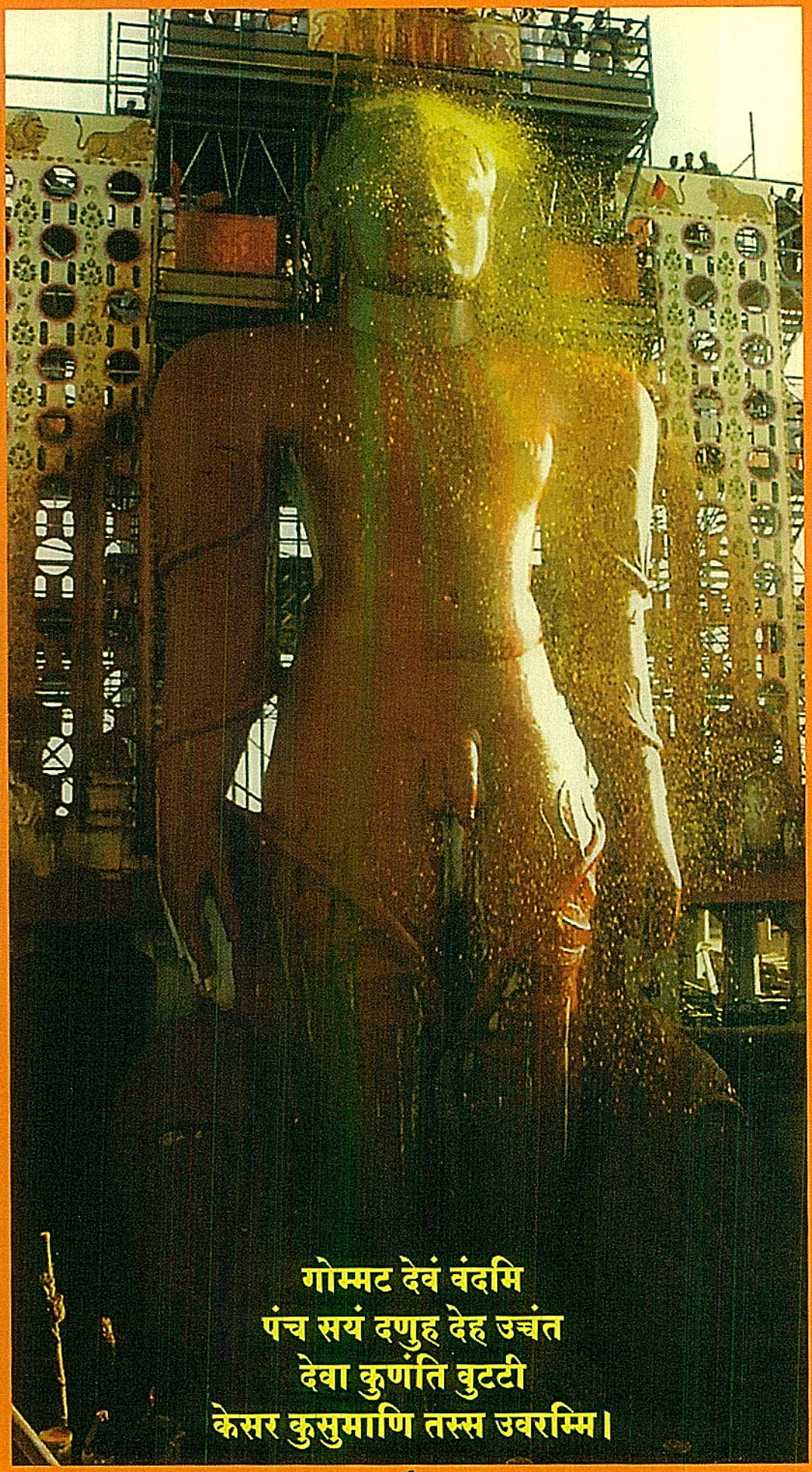
गोम्मट देवं वंदमि
पंच सयं दणुह देह उच्चंत
देवा कुणंति वुटटी
केसर कुसुमाणि तस्स उवरम्मि।

महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु में

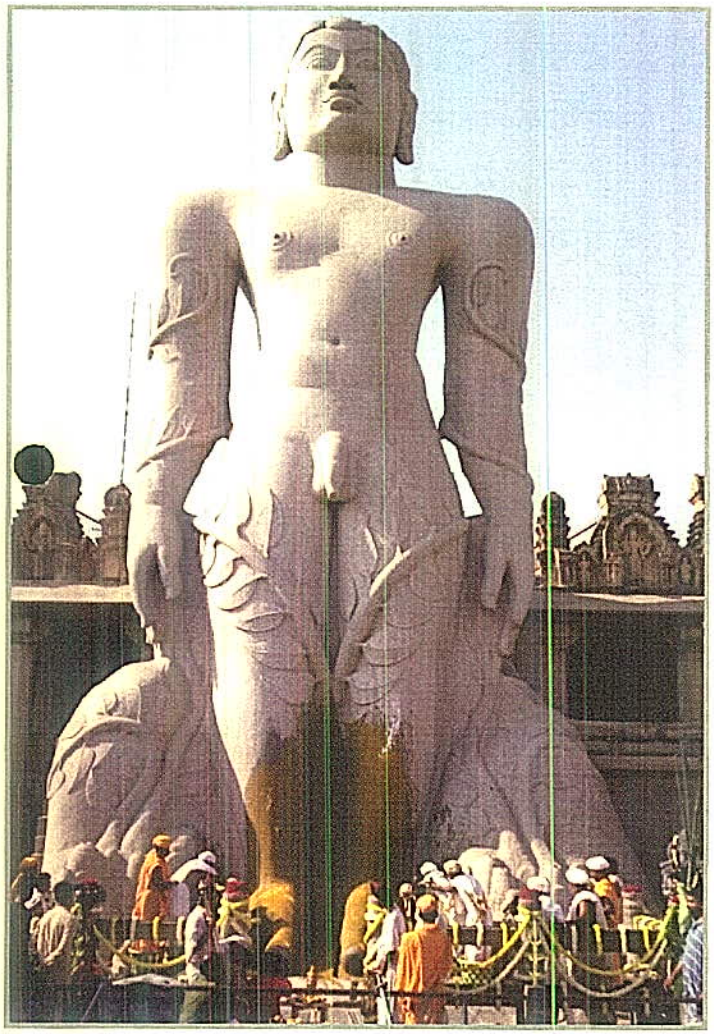

तीर्थवंदना का यह अंक जब आप पढ़ रहे होंगे तब दीपावली आपके द्वार पर दस्तक दे रही होगी। सर्वप्रथम आपको दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

हम लोग दीपावली क्यों मनाते हैं, यह आप सभी जानते हैं, भारतीय संस्कृति पर्व प्रधान संस्कृति है, यहाँ हर कार्य में आनंद लिया जाता है। हमारी दिगम्बर श्रमण संस्कृति में जन्म से ज्यादा मृत्यु का आनंद होता है, यह मृत्यु महोत्सव है, निर्वाण है। जिसका मृत्यु महोत्सव हो गया समझो उसका जीवन धन्य हो गया। उसी मृत्यु महोत्सव को प्राप्त किया था तीर्थंकर महावीर ने तो हम निर्वाण का उत्सव दीपावली पर मनाते हैं। बड़ा आश्चर्य लगता है, अन्य लोगों को कि मृत्यु को भी महोत्सव के रूप में मना रहे हैं, भगवान निर्वाण को प्राप्त हो गए और ये लड्डू चढ़ा रहे हैं, नाच-नाचकर आनंद ले रहे हैं। बंधुओं! यही हमारी संस्कृति की विशेषता है, कि जीवन जीने की कला तो सब सिखाते हैं, मरने की कला जैन दर्शन सिखाता है, जिसे मरने की कला आ जाती है उसका प्रत्येक दिन उत्सव बन जाता है। जैन दर्शन का सारा सार निर्वाण कल्याणक पर केन्द्रित है। हमारी आराधना, हमारी भक्ति, हमारी पूजन, आरती, श्रद्धा-आस्था-विश्वास सभी कुछ निर्वाण के लिए ही है। सबके जीवन में निर्वाण हो सबका जीवन 'मोद' से भर जाए, आनंद आ जाए यही कामना है हमारी भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर।

मैं निवेदन करना चाहती हूँ कि इस पावन दिन हम अपनी संस्कृति की चर्चा में व्यतीत करें, बच्चों के साथ बैठें और बतायें कि हम दीपावली क्यों मनाते है। प्रातः चार बजे हम मंदिर में दीपक क्यों लगाते हैं, पूजन क्यों करते हैं। लड्डू क्यों चढ़ाते हैं। जब हम बच्चों को ये सब बतायेंगे तो वे मानेंगे कि हमें पटाखे नहीं फोड़ना है, हमें तो निर्वाण कल्याणक मनाना है।

अपने नगर - ग्राम के मंदिर में पूजन अभिषेक लड्डू चढ़ाकर आसपास स्थित तीर्थ

पर भी अवश्य जायें। वहाँ पर भी लड्डू चढ़ायें और अपने भावों को निर्मल करने का कार्य अवश्य करें। हमारा परम सौभाग्य है कि हमें इन पर्वों को मनाने का सौभाग्य मिला है। विगत दिनों शरद पूर्णिमा पर जैन जगत के तपोनिधि, संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज व पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न १०५ श्री ज्ञानमती माताजी का ८४वाँ जन्म दिवस अत्यन्त हर्षोल्लास से मनाया गया। आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की मुनि दीक्षा का संयम स्वर्ण जयंती वर्ष चल रहा है।

सारे देश में उत्साह की लहर है। श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक को भी तीन माह शेष है, समय अधिक नहीं है। श्रवणबेलगोला में महोत्सव पूर्व सम्मेलनों का दौर जारी है। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के बाद राष्ट्रीय जैन विद्वत सम्मेलन १ से ५ अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ। ५०० से अधिक जैन विद्वानों ने सपरिवार पधारकर महोत्सव में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। विद्वान हमारे मुकुटमणी है, सभी ने जो आलेख पढ़े वे स्तुत्य है।

आप सब दीपावली मनायें और सबके साथ अपनी संस्कृति का भी ध्यान रखें। कार्तिक कृष्ण अमावस्या की प्रत्यूष बेला में भगवान महावीर स्वामी इस संसार से मुक्त हुए और शाम को उनके गणधर गौतम स्वामी ने केवलज्ञान प्राप्त किया। ऐसे ही महावीर स्वामी हमें हमेशा दृष्टि दिखाते रहें तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा। आप और हम सब मिलकर कुछ दीपक मेरे कहने पर भी जलाएँ और उसमें स्नेह का घी भरकर समर्पण की बाती रखें और कामना करें

- तीर्थों के विकास की
- तीर्थों के संरक्षण की
- तीर्थों के संवर्धन की
- हम कामना करें आपसी सद्भावना की
- सबकी खुशी की
- सबके बीच समन्वय की
- गोम्मटेश बाहुबली के महामस्तकाभिषेक में कलश करने की

इन सबकी सफलता के लिए आप सभी मेरी ओर से एक दीपक जलाएँ, आईये!

एक दीपक हम जलायें
एक दीपक तुम जलाओ
कुछ अंधेरा हम मिटायें
कुछ अंधेरा तुम मिटाओ।

ज्योति पर्व की इस श्रृंखला में दीप से दीप जले, आपसी प्रेम-स्नेह, मेल-मिलाप, समन्वय - सद्भावना - संगठन मजबूत हो। वीर निर्वाण वर्ष २५४४ सबके जीवन में शुभ हो।

इसी कामना के साथ।

Sarita Jain

-सरिता एम.के. जैन

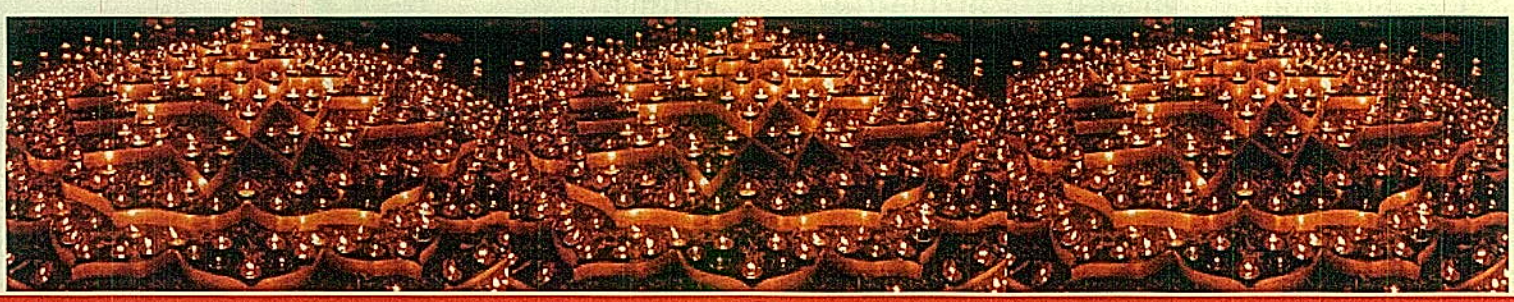

श्रवणबेलगोल का विद्वत् सम्मेलन एवं हमारा दायित्व

सम्पूर्ण विश्व में दिगम्बरत्व का गौरव बढ़ाने वाले भारत के एक प्रमुख तीर्थ श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोल के महामस्तकाभिषेक का पर्व(फरवरी–18) अब बिल्कुल निकट आ गया है। सम्पूर्ण देश में इसका वातावरण बनाने की दृष्टि से महामस्तकाभिषेक रथ का प्रवर्तन तो श्री सुरेश जैन'मारोरा' के नेतृत्व में हो ही रहा हैं। किन्तु कन्नड़,संस्कृत आदि भाषाओं के विद्वानों के सम्मेलनों के बाद महिला सम्मेलन(11–13 अगस्त 2017) एवं इसी अक्टूबर माह में [illegible]5 अक्टूबर 17 के मध्य विद्वत् सम्मेलन सम्पन्न हुआ। स्वयं मुझे 1–2 अक्टूबर 2017 को इस सम्मेलन में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। अ.भा. दि. जैन शास्त्रि परिषद के यशस्वी अध्यक्ष **डॉ. श्रेयांसकुमार जैन** की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सम्मेलन में लगभग 550 विद्वानों एवं उनमें से अधिकांश के सपरिवार आने से यह दि. जैन विद्वानों का महाकुंभ बन गया था। दि. जैन समाज के तीन शीर्ष विद्वत् संगठनों अ.भा.दि.जैन शास्त्रि परिषद, अ.भा.दि.जैन विद्वत् परिषद एवं तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ के साथ ही टोडरमल स्नातक परिषद के विद्वानों की भी उपस्थिति से यह राष्ट्रीय जैन विद्वत् सम्मेलन बहुआयामी बन गया था। सम्मेलन के शुभांरभ में ही विद्वत् संगठनों के शीर्ष पदाधिकारियों का परमपूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज के नेतृत्व में मंच पर विराजित विशाल मुनि–आर्यिका [illegible] की पावन उपस्थिति में भट्टारक महास्वामी जी के नेतृत्व में महोत्सव की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम. के जैन(चेन्नई) एवं विद्वत् सम्मेलन आयोजन उपसमिति के अध्यक्ष श्री अशोक बड़जात्या द्वारा अत्यन्त गरिमापूर्ण ढ़ंग से सम्मान किया गया। 'सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग': के सूत्र से युक्त चाबी का मोमेन्टो कुतूहल का केन्द्र रहा। विद्वत् जगत के प्रतिनिधियों द्वारा आयोजन समिति के साथ मिलकर 4 कलशों की स्थापना की गई जो जिनवाणी के उपासकों एवं जैन साहित्य के अध्ययन को जीवन समर्पित करने वालों के प्रति स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी जी (श्रवणबेलगोल) के सम्मान को प्रदर्शित करती हैं। सर्वाध्यक्ष **डॉ. श्रेयांसकुमार जैन** को सपत्नीक रथ पर एवं वरिष्ठ विद्वानों को सम्मान सहित ट्राले पर बिठाकर जब लगभग 4 कि.मी. लम्बी भव्य शोभायात्रा निकाली गयी तब का यह दृश्य अविस्मरणीय था। संलग्न चित्र में डॉ. जयकुमार जैन(मु.नगर) ,डॉ.शीतलचन्द्र जैन(जयपुर),पं. शिवचरनलाल जैन(मैनपुरी) ,डॉ.अनुपम जैन(इन्दौर),प्रो. कमलेश कुमार जैन(वाराणसी) आदि विद्वान दिखाई दे रहे हैं। एक अन्य ट्राले पर प्रो. प्रेमसुमन जैन (उदयपुर), ब्र.जयकुमार निशान्त(टीकमगढ़), डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल(जयपुर),डॉ. ऋषभचंद फौजदार (वैशाली) आदि बैठे थे।

विद्वत् सम्मलेन के उद्घाटन में पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच. डी देवेगौडा की उपस्थिति में सभी को गौरवान्वित होने का अवसर दिया। ज्ञातव्य है श्रवणबलगोला के संसदीय क्षेत्र हासन से सांसद श्री देवगौडा के सक्रिय सहयोग से हासन–श्रवणबेलगोल–बैंगलोर रेल मार्ग तैयार होकर उस पर ट्रेन भी चलने लगी हैं। यशवंतपुर(बैंगलोर) से श्रवणबेलगोला की ट्रेन तो इस महोत्सव की पूर्वबेला में ही मिली हैं।

उद्घाटनोपरान्त प्रथम मुख्य सत्र(Plannary Session) की अध्यक्षता डॉ. शीतल चन्द्र जैन ने की । इस सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. प्रेमसुमन जैन, वक्ता प्रो.अनुपम जैन,प्रो. जयकुमार जैन एवं प्रो. नलिन के. शास्त्री ,डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये। शीर्ष विद्वानों के अनुभवजन्य ज्ञान से समृद्ध यह सत्र बहुत ही सराहा गया। खचाखच भरे सभागृह में सहस्त्राधिक ज्ञान पिपासुओं की उपस्थिति मन को पुलकित कर रही थी।

सम्मेलन में डॉ. हुकमचंद भारिल्ल एवं पं. शिवचरनलाल जैन ,मैनपुरी के प्रवचन की शैली में दिये गये व्याख्यानों ने भी युवा विद्वानों को खूब झकझोरा। प्रश्न पर प्रश्न श्रोताओं की संजीदगी एवं उनके गहन अध्ययन को प्रतिबिंबित कर रही थी। उल्लेखनीय बात यह रही कि दोनों शीर्ष विद्वानों के सुर समन्वयात्मक एवं अनेकान्तवादी थे। गूढ विषयों पर बोलते हुए दोनो विद्वानों ने एक–दूसरे के विचारों के प्रति जो सम्मान का भाव व्यक्त किया वह जैन दर्शन की विशेषता ही दर्शा रहे थे। दि. 2.10.17 को अलग अलग कक्षों में चले सत्र भी गम्भीर,ज्ञानवर्द्धक एवं राष्ट्रीय जैन विद्वत् सम्मेलन की गरिमा के अनुरुप थे।

सम्मेलन के अवसर पर एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमे श्री सुरेन्द्र बाकलीवाल,श्री डी.के.जैन,श्री जैनेश झांझरी एवं डॉ. संगीता विनायका ने करीने से सैकड़ो अभिनन्दन/स्मृति ग्रंथों,पांडुलिपियों एवं विद्वानों के परिचय के पोस्टरों को प्रदर्शित किया।

इस सम्मान के प्रत्युत्तर में विद्वानों का भी कर्तव्य है कि

ट्राले पर उपस्थित वरिष्ठ जैन विद्वान

तीन शीर्ष विद्वत् संगठनों के प्रमुख प्रो. जयकुमार जैन(अ.भा.दि.जैन विद्वत् परिषद),डॉ.अनुपम जैन(तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ) एवं डॉ.श्रेयांसकुमार जैन (अ.भा.दि.जैन शास्त्रि परिषद), मंच पर एक साथ

सम्मेलन के प्रथम सत्र का दृश्य मंचासीन प्राचार्य शीतलचंद जी, प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्रो. अनुपम जैन एवं प्रो. जयकुमार जी

प्रथम सत्र को संबोधित करते हुए डॉ.अनुपम जैन,इन्दौर

श्री क्षेत्र की श्रीवृद्धि एवं प्रगति में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह करें। श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोल हमारा तीर्थ है एवं विद्वानों से मेरा आग्रह हैं कि–

1. वे जहाँ भी निवास करते हैं उसके समीप के क्षेत्र के जीर्णोद्धार विकास, प्रचार–प्रसार में अपना सक्रिय सहयोग दें।

2. गोम्मेटेश्वर भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक फरवरी–2018 में भाग लेने हेतु प्रेरणा देने में अपनी वाणी का सदुपयोग करें। सभी दि. जैन भाई/बहनों को कलश अवश्य करने चाहिए। ज्ञातव्य हैं कि कलशाभिषेक से प्राप्त राशि से जनकल्याणकारी योजनान्तर्गत 200 बेड का सुपर स्पेशलिटी हास्पिटल बनाया जायेगा।

3. आपकी तीर्थ वन्दना का जनवरी–18 अंक श्रवणबेलगोला एवं दक्षिण के जैन तीर्थ विशेषांक के रुप में प्रकाशित किया जायेगा। अतः इसमें प्रकाशनार्थ सामग्री 30 नवम्बर 2017 तक मेरे निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें।

सहयोग की आशा में

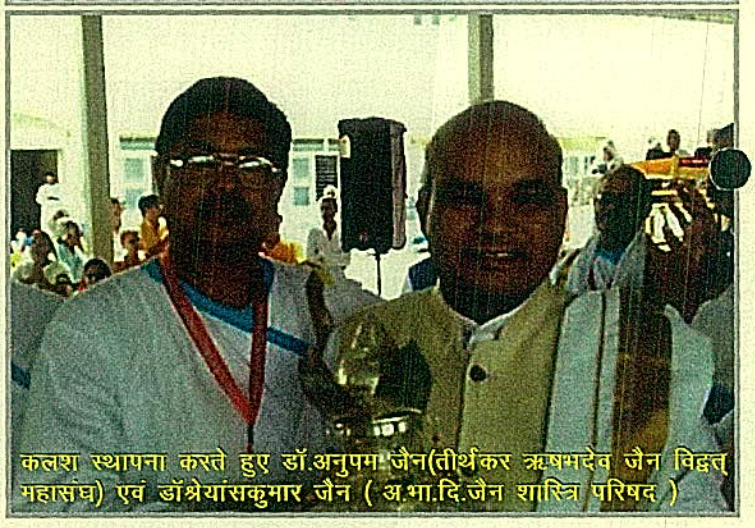

कलश स्थापना करते हुए डॉ.अनुपम जैन(तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ) एवं डॉश्रेयांसकुमार जैन (अ.भा.दि.जैन शास्त्रि परिषद)

डॉ. अनुपम जैन
प्रधान सम्पादक
'ज्ञानछाया', D-14, सुदामा नगर,
इन्दौर–452009 (म.प्र.)
anupamjain3@rediffmail.com

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 8 अंक 4 अक्टूबर 2017

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री हुकम जैन 'काका'	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

प्रो. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु में	3
श्रवणबेलगोल का विद्वत् सम्मेलन एवं हमारा दायित्व	5
दीपावली का दीप, देता है संदेश	8
मरणशील मिट्टी की देह में आत्मा की ज्योति जलायें	9
दीपमालिकाओं के उज्ज्वल प्रकाश में खुद के निहारने का एक अवसर है दीपावली	10
ऊपरगांव का जैन मंदिर एवं उसका जीर्णोद्धार	12
चलो यात्रा प्लान करें: श्रवणवेलगोला	14
भगवान बाहुबली की विशाल मूर्ति	17
'गोमटेश दर्शन से हो जाती है सारे तनावों से मुक्ति'	19
गोमटेश बाहुबली भगवान	21
पंथवाद से विमुक्त हो विद्वानों ने किया भगवान बाहुबली का अक्षराभिषेक	26

अनुरोध

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली– श्रवणबेलगोल के आगामी महामस्तकाभिषेक 2018 के निमित्त सम्पूर्ण देश में उत्साह का वातावरण है। लाखों की संख्या में धर्मनिष्ठ श्रावक–श्राविकायें इस निमित्त आगामी 4 माहों (नवम्बर 17–फरवरी 18) में श्रवणबेलगोल महातीर्थ की यात्रा का कार्यक्रम बना रहे हैं। जैन तीर्थों के संरक्षण, संवर्द्धन, प्रचार एवं प्रसार हेतु समर्पित आपकी पत्रिका '**जैन तीर्थ वन्दना**' ने भी इस पावन अवसर पर अपने दायित्व को स्मरण करते हुए दक्षिण भारत पर विशेष सामग्री देने का निश्चय किया है। जुलाई–2017 से यह क्रम प्रारम्भ हो चुका है।

सभी पाठकों विशेषतः सुधी लेखकों/ विद्वानों से अनुरोध है कि वे दक्षिण भारत के तीर्थों से सम्बद्ध अपने आलेख, महामस्तकाभिषेक एवं श्रवणबेलगोला से सम्बद्ध यात्रा विवरण, समीक्षात्मक, सर्वेक्षणात्मक, शोधात्मक लेख या अन्य समायोजित सामग्री हमें महामस्तकाभिषेक तक नियमित रूप से भिजवायें। हम एतदर्थ आपके आभारी रहेंगे।

डॉ. अनुपम जैन

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

दीपावली का दीप, देता है संदेश

- आर्यिका 105 स्वस्तिभूषण

दीप चाहे सोने का हो या रत्नों का या दीप चाहे पीतल का हो या मिट्टी का उसमें से निकलने वाले रोशनी और उसकी लौ सब में एकसी होती है। दीप चाहे श्मशान में रखा हो या प्रभु के सामने, अथवा घरों में रखा हो या द्वार, महलों में रखा हो या झोपड़ी में दीपक का काम हर जगह एक ही होता है प्रकाश देता और प्रकाशित होना।

दीपक किस वस्तु का बना है अथवा कहाँ पर रखा महत्व इस बात का नहीं है वह कितनी कम है या ज्यादा ज्योति अधिक होगी उजाला अधिक होगा और ज्योति टिमटिमा रही होगी उजाला तब भी होगा। दीपक तब भी होगा। दीपक महत्व उसकी ज्योति से है। इसी लिये इसी मिट्टी के शरीर रूपी दिये में आत्मा रूपी ज्योति प्रकाशित हो रही है। शरीर गोरा हो या काला, शरीर सुंदर होया असुंदर, शरीर लंबा हो ठिगना, शरीर मोटा हो या पतला फर्क इससे पड़ता ज्योति तो सबके अंदर बराबर है। शरीर कितने मंहगे कपडे पहते है या सस्ते, शरीर ने कितो रत्नो के या सोने आभूषण पहने है कर्क इससे नहीं पड़ता। ये बाहर की सुंदरता है। आत्मा स्वयं के प्रति कितना जागरुक है और उसके अंदर की ज्ञानज्योति का वह कितना उठा पा रहा है अंतर यहाँ पैदा है।

दीपक कितनी डिजाइनो में सजा किन्तु उसमें ज्योति नहीं तो वह मात्र देखने दिया है पर कार्य रुप दीपक नही हैं। ढीक ऐसे ही इस शरीर को कितना सजा लो अपनी आत्मा की ज्ञान ज्योति जागृत नहीं करी केवल शरीर को ही सजाते रहे तो अपने पुद्गल पर ही मेहनत की है अपनी आत्म ज्योति पर नहीं है। समय रहते जागृत हो जाओ आत्मा के महत्व का पहचानो और उसी ज्योति की उपासना प्रारंभ कर दो।

हजारो बुझे सुंदर दीपक रात्रि के अंधकार को नहीं मिटा सकते वहीं एक वे नन्हा सा जला हुआ दीपक आ जाये तो वह दीपक अंधकार भी दूर करेगा और हजारो बुझे दीपक में रोशनी देने स्वयं की सच्ची राह पर चलकर हजारों अज्ञानियों को सच्ची राह पर चलकर हजारों अज्ञानियों को सच्ची राह दिखाने में समर्थ हो सकता है। ज्ञायी स्वयं प्रकाशित है इसके में भी रोशनी भर सक सकता है।

ऊपर की ओर उठती हुई दीपक की लौ ये संदेश देती है कि सदा उच्च विचार रखो, सदा ऊपर की ओर का ही चिंतन करो। ऊँचे विचार ऊपर की ओर ले जायेगे। निम्न विचार नीचे की ओर ले जायेगे। दीपक की लौ हमें समझा रही है, कि हे आत्मन तुझे सबसे ऊँचा मोक्ष, तुझे वहीं जाना है इसी लिये अपनी ज्ञान ज्योति को जाग्रत करी। सम्मान दिये का नहीं ज्योति का करो। चिंतन शरीर का नहीं चतन का करो। दिये को अनंत काल तक सजा लेना कोई सफलता सुख शांति नहीं मिलेगा। एक बार बस एक बार आत्मा को उसके ज्ञान दर्शन गुणो की संतार लो जब दिये को सजाने का झंझट ही खत्म हो जायेगा।

जैसा कि भगवान महावीर ने अपनी आत्मा को सँवारा, शरीर ही छूट गया। दीपक की लौ सूरज जैसा प्रकाश है दीपक तो समझाने का उदाहरण है। आत्मा की लौ से प्रारंभ होती है और केवल ज्ञान रुपी सूर्य में परिवर्तित हो जाती है। जिससे सारा लोक जगमगा जाता है। सारा अज्ञान अंधकार नष्ट हो जाता है। दु:ख शोक, संताप, आधि व्याधि-उपाधि पीड़ा, दर्द सभी का नामो निशान खतम हो जाता है। आत्मा आनंद के सागर में डूब जाता है। कबायों का अंधेरा और पापो के मगमच्छ जाने कहाँ भाग जाते है। जीवन सुख की रोशनी से भर जाता है। आत्मा की उपासना करने वाला एक मंजिल पर पहुँच ही जाता है।

कार्तिककृष्ण अमावस की घनी अंधेरी रात भी आत्मा में उजाला होने से नहीं रोक पाई। संसार के लिये अभावस थी और भगवान महावीर के लिये पूरमासी हो गई। कार्तिक कृष्ण अभावल को भगवान महावीर आठो कर्मों का नाश करके मोक्ष चले। हम भक्त इस निर्वाण महोत्सव को छोटे-छोटे दिये की रोशनी में इस पर्व को मनाते है। जबसे भगवान महावीर मोक्ष गये तबसे ये दीप आज तक जल रहे है और जलते रहेंगे, लेकिन इन छोटे दीपक से शिक्षा ले आगे बढे तो निर्वाण कल्याणक मनाना सार्थक हो जायेगा।

तपस्या में बाहुबली का
बागों में कली का
त्योहारों में दीवाली का
बड़ा ही महत्व है।
मोती में सीप का
गाड़ियों में जीप का
दीपाली में दीप का
बड़ा ही महत्व है।

छोड़ने में इच्छा का
संतों की दीक्षा का
दीप सेलेने में शिक्षा का
बड़ा ही महत्व है।
धनुष में बाण
मंदिर के निर्माण का
प्रभु महावीर के निर्वाण का
बड़ा ही महत्व है।

ऊठो की मनाने का
मेहमान को जिमनि का
प्रभु वीर के मोक्ष जाने का
बड़ा ही महत्व है।
भोजन में खीर का
धनुष में वीर का
तीर्थंकरों में महावीर का
बड़ा ही महत्व है।

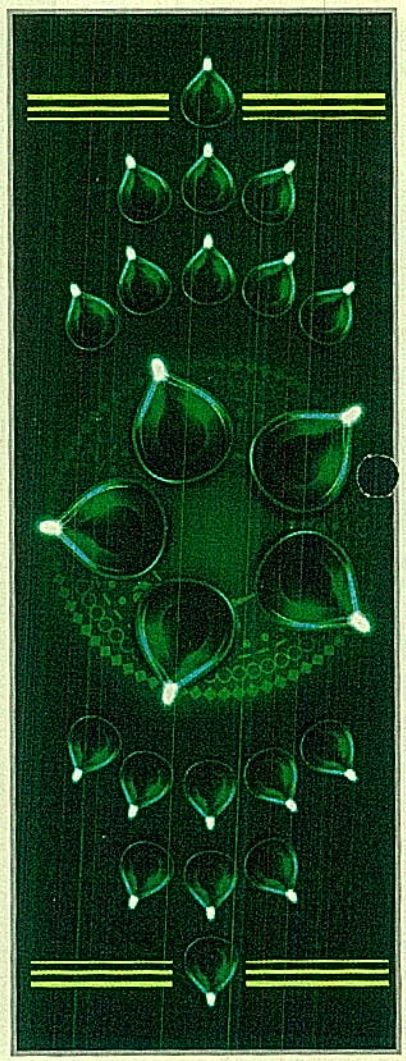

मरणशील मिट्टी की देह में आत्मा की ज्योति जलायें

–डा. सुनील जैन 'संचय'

पर्व हमारी संस्कृति के पोषक हैं, जीवन शक्ति है। दीपावली भारतीयों का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण पर्व है। हिन्दू और जैन परंपरा में दीपावली का खासा महत्व है।

दीपक की भांति मनुष्य की देह भी मिट्टी ही है, किंतु उसकी आत्मा मिट्टी की नहीं है। वह तो इस मिट्टी के दीपक में जलने वाली अमृत ज्योति है। हालांकि, मनुष्य लोभ, मोह, मद, अहंकार की मोटी परतों से दबा–ढका अपने स्वरूप को भुला बैठा है, वह स्वयं को मात्र मिट्टी की देह समझ बैठा है और मिट्टी की इस देह का श्रृंगार करने में इतना अलमस्त हो गया है कि आत्मज्योति का चिरंतन सच अंधकार में कहीं खो गया है। दीपक की मिट्टी में ज्योति जब तक न उतरे वह अपनी सचाई से वाकिफ नहीं हो सकता। जैसे कि हम अपने वास्तविक स्वरूप से दूर–दूरतम रहने के कारण इंद्रियों से विनिर्मित देह में विचरण करने लगते हैं और इस भ्रम को सच मान लेते हैं। भ्रम का यह आवरण हमें सघन अंधकार में जीने को विवश करता है। इससे जिंदगी की घुटन और छटपटाहट फिर से तीव्र और घनी हो जाती है।

आज चारों ओर का वातावरण भयावह है और हरेक व्यक्ति आगे बढ़ने की होड़ में अपनों को ही पछाड़ना चाहता है। आज महाभ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी, आतंकवादी कियाशील हैं। इनकी करतूत और कारनामों से अतीत के सारे आतंक कमतर नजर आते हैं। क्या हमने कभी अपने उन भाइयों की ओर तनिक भी ध्यान देने का प्रयास किया है जिनको दो वक्त की रोटी भी सुकून से नहीं मिल पा रही है, परिवार आर्थिक तंगी का शिकार है। हम लाखों करोड़ो रूपयो को पटाखों के चलाने में व्यर्थ ही खो देते हैं, जिससे हमारा पर्यावरण भी प्रदूषित तो होता ही है साथ ही अनेक घटनाएं जान–माल की हानि की भी देखी जाती हैं। क्या हमने कभी दीपावली पर यह संकल्प लेने का मन बनाया है कि अंधकार में जीने वाले उन लोगों के प्रति सहयोग करने की भावना भायी है। क्या जो हम पटाखों में लाखों रुपये व्यर्थ बर्बाद करते हैं वह धन अपने बेसहारा असहाय और गरीब भाइयों की जिंदगी में नया सवेरा भरने में नहीं लगा सकते? आज हम पुण्योदय से आर्थिक रूप से मजबूत हैं, तो इसका मतलब यह तो नहीं कि हमारा जो भाई पापोदय से आज आर्थिक संकट के कारण दुख में है तो हम उसकी सहायता नहीं कर सकते? आज बड़ी विडम्बना है कि हम अपने ही लोगों को आगे बढ़ता नहीं देख सकते।

बड़े अजीब से आजकल इस दुनिया के मेले हैं।
दिखती तो भीड़ है, पर चलते सब अकेले हैं।।

जीवन एवं समाज के इस अवसाद और अंधेरे को सदा–सर्वदा के लिए दूर करने के लिए दीपक के सच की अनुभूति का गहरा अनुभव आवश्यक है।

दीपावली पर दीपक जलाते समय दीपक के सच को समझना आवश्यक है। अन्यथा दीपावली की प्रकाशपूर्ण रात्रि के पश्चात् केवल बुझे हुए मिट्टी के दीपक हाथों में रह जाएंगे, आकाशीय अमृत–आलोक खो जाएगा। दीपक का सच उसके स्वरूप में है। दीपक मरणशील मिट्टी का होकर भी इस ज्योति के अवतरण को धारण करने का सबल माध्यम है। दीपक जलता है, आलोक बिखरेता है और तत्पश्चात अपनी मरणशील मिट्टी में समा जाता है। मोल है जलते हुए प्रदीप्त दीपक का, मोल बुझे दीपकों का नहीं होता। दीपक का तात्पर्य है– अपनी वर्तिका में अग्नि को धारण कर प्रकाश बिखेरना।

यह घटना असाधारण है और असाधारण है तिल–तिल जलने–गलने का वह संकल्प, जो उसकी मरणशीलता में अमृत घोलता है। इस मिट्टी की ज्योति तो अमृतमय आकाश की है। जो धरती का है, वह धरती पर ठहरा है, लेकिन उर्ध्वगामी ज्योति तो निरंतर आकाश की ओर भागी जा रही है।

जब तक अंतर गगन में दीपक का प्रेम, करूणा, दया, सेवा, सहयोग एवं परोपकारिता वाला प्रकाश जगमगाएगा नहीं, मानवता के इस अंध एवं काले तमस् को दूर नहीं किया जा सकता है। जिस दिन मानव के अंतर को दीपोत्सव पर्व की एक कोमल, जगमगाती रोशनी छू लेगी, उसी दिन से जीवन की कुहासा–निराशा छंटने लगेगी और जीवन आलोक का नया प्रतीक, पर्याय बन जाएगा। इस आलोक में ही जीवन का लक्ष्य दृष्टिगोचर हो सकता है और इस लक्षित लक्ष्य का सघन मर्म समझ में आ सकता है।

दीपावली पर जलने वाले दीपकों की संख्या एक–दो नहीं, हजारों होती है, परंतु इससे बाहर का अंधकार मिटता है, अंतर का अंधकार तो यथावत् बना रहता है। अच्छा हो कि इस दीपावली में दीपक के सच की इस अनुभूति के साथ हम एक दीपक जलाएं, ताकि इस मरणशील मिट्टी की देह में आत्मा की ज्योति मुस्करा सके।

मिट्टी के दीपक में मनुष्य की जिंदगी का बुनियादी सच समाया है। ऐसा सच जो हमारा अपना है। ऐसा सच जिसमें हमारा अनुभव पल–पल धड़कता है। यह सच ही हमारी धरोहर एवं थाती है, जो कहता है कि तुम स्वयं ज्योतिस्वरूप हो, आत्मस्वरूप हो। अपने अंदर की ओर झांको! अंतर्यात्रा करो!! अंदर में ही सब कुछ समाया हुआ है। दीपावली की अनेक पौराणिक कथाएं हैं। इस दिन भगवान राम आतंक के महापर्याय रावण का वध करके जब अयोध्या नगरी लौटे तो उनका स्वागत प्रकाश महोत्सव के रूप में हुआ। उस दिन हर आंगन में दीपों की कतार लगाई गई। जैनधर्म के अनुसार इस दिन तीर्थंकर महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति हुई थी और गौतम गणधर को केवलज्ञान की उपलब्धि प्राप्त हुयी थी। इस अवसर पर जैन समुदाय निर्वाण लाडू चढ़ाकर और दीपक प्रज्जवलित कर अपनी खुशी का इजहार करता है। ऐसी अनेक और भी पौराणिक कथाएं हैं। इन कथाओं से हम सभी सुपरिचित हैं, परंतु परिचय की इस लंबी प्रक्रिया में हम यदि किसी चीज से अपरिचित रह जाते हैं तो इस महापर्व के गहरे मर्म से। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली धूमधाम से मनाई जाएगी। दीप जलाए जाएंगे। मिठाइयां बांटी जाएंगी। नए–नए अलंकार एवं परिधानों का उपयोग किया जाएगा। श्रृंगार अपनी चरम सीमा को स्पर्श करेगा। उमंग एवं प्रकाश से मिश्रित इस महोत्सव में ऐसा होना तो समृद्धि का प्रतीक है।

दीपावली का मूल मर्म है कि दीपक का प्रकाश हमारे अंदर भी प्रकाशित हो और बाहर भी आलोकित हो।

"है अगर विश्वास तो, मंजिल मिलेगी यकीनन।
शर्त यह है कि, बिन रुके चलना पड़ेगा।।
जिस तरह भी हो, अंधेरे की हुकूमत,
उस जगह पर दीप सा जलना पड़ेगा।।"

दीपमालिकाओं के उज्ज्वल प्रकाश में खुद के निहारने का एक अवसर है दीपावली

- श्री ध्रुवकुमार जैन

अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर का 2544 वाँ निर्वाणोत्सव 19 अक्टूबर 2017 को पूरा राष्ट्र मना रहा है। अलैकिक एवं आकर्षक दीपों की जगमगाहट के साथ एक सुनहरे और चमकदार दुनिया का आभास कराने वाले इस पर्व की जैन धर्म में एक अलग पहचान है और वह है मुक्ति-पथ को आलोकित करने का। जैन धर्म का प्रत्येक पर्व आध्यत्मिक शिक्षाओं का संग्रह है। इस धर्म के किसी भी पर्व में भोग का स्थान नहीं है। भगवान महावीर का निर्वाण पर्व भी हमें आत्म-दर्शन की ही शिक्षा देता है। अपने व्यवहारिक घर के साथ-साथ आत्मिक घर को भी प्रकाशित करो यह इस पर्व का स्पष्ट आदेश है।

भगवान महावीर ने अपने दिव्य जीवन में अहिंसा, विश्व मैत्री और आत्मोद्धार का उत्कृष्ट आदर्श उपस्थित कर 42 वर्ष की उम्र में ही आत्मा के प्रबल शत्रु घातिया कर्मों को नष्ट कर लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान प्राप्त किया और भव्य जीवों को दिव्य ध्वनि द्वारा आत्म-उद्धार का मार्ग बतलाया। कार्तिक कृष्ण अमावस्या की पावन तिथि को स्वाती नक्षत्र में प्रात: काल के समय भगवान महावीर ने पावापुर के मनोहर वन में अनेक सरोवरों के बीच एक शिलापट्ट पर विराजमान होकर 72 वर्ष की आयु में इस नश्वर शरीर को त्याग कर मोक्ष पद प्राप्त किया। उसी दिन रात्रि को ही इन्द्रभूति गणधर को भी केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

भगवान महावीर के निर्वाण गमन का समाचार पाकर समस्त इन्द्र, देवी, देवता व श्रावक वृन्द उनके अन्तिम दर्शनों को आये। इन्द्रों ने भगवान का निर्वाण कल्याणक मनाया, निर्वाण पूजा की। उस समय देवताओं द्वारा भगवान के निर्वाण की खुशी में रत्नों की ऐसी दीप जलायी गयी कि पूरा नगर और आकाश जगमगा उठा। तभी से भारतवर्ष की पावन धरा पर भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में दीपावली मनाई जाने लगी।

यदि हम दीपावली की ऐतिहासिकता पर विचार करें तो शास्त्रीय आधार पर सबसे प्राचीन ग्रन्थ आचार्य श्री जिनसेन जी द्वारा लिखित हरिवंश पुराण का नाम आता है, जिसकी रचना विक्रम सम्वत् 785 में हुई थी। हरिवंश पुराण में उदधृत है कि महावीर का निर्वाण होने पर कार्तिक अमावस्या के दिन उनकी निर्वाण भूमि पावापुरी में दीपमालिका उत्सव मनाया गया और देवताओं तथा राजा ने महावीर भगवान की आरती और पूजा की। उसी तिथि पर प्रतिवर्ष इस उत्सव को मनाने की प्रथा चल पड़ी।

इससे इतना तो अवश्य ही स्पष्ट हो जाता है कि दीपावली का उत्सव इस ग्रंथ की रचना से भी कहीं पहले से भारतवर्ष में मनाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त लगभग 1300 वर्ष पूर्व रचित इस ग्रन्थ में जो दीपावली का वर्णन किया गया है, उसके विरुद्ध इतना पुराना कोई और विवरण किसी अन्य प्राचीन ग्रन्थ में नहीं मिलता। यदि इसी को प्रामाणिक मान लिया जाये तो दीपावली का आरम्भ ईसा से लगभग 530 वर्ष पूर्व हुआ मालुम होता है।

यदि दीपावली की महता पर विचार करें तो यह भारतवर्ष का पहला पर्व है, जिसका आदर लगभग सभी धर्मों में है। सभी धर्मानुयायी इसे प्रेम उत्साह और भाईचारे के साथ-साथ अपने-अपने धर्म को मान्यतानुसार मनाते हुए अनेकता में एकता प्रदर्शित करते हैं। जैन धर्म के अतिरिक्त हिन्दू धर्म, सिक्ख धर्म, आर्य समाज धर्म, एवं ईसाई धर्म में इसे मनाने की अपनी अलग-अलग परम्परायें और मान्यतायें हैं।

हिन्दू धर्म में मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी का दशहरे के दिन रावण का वध करना और दीपावली के दिन अयोध्या वापस आना, इसी दिन श्री कृष्ण द्वारा नरकासुर का वध करना और इसी दिन भगवती दुर्गा देवी जी का अपने पति के गृह जाना दीपावली मनाने का प्रमुख कारण है। सि धर्म में सिक्खों के छठे गुरु श्री हरिगोविन्द सिंह जी का मुगल बादशाह की कैद से छूटना दीपावली मनाने का कारण है और आर्य समाज में दीपावली के दिन ही स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा रामकृष्ण परमहंस का निर्वाण होना दीपावली मनाने का प्रमुख कारण है। इसके अतिरिक्त व्यापारी नया वर्ष आरम्भ करने के अभिप्राय से दीपावली पर लक्ष्मी गणेश की पूजा करके दीप जलाते हैं। एक विश्वास यह भी है कि वर्षाऋतु में तमाम जीव-जन्तु मच्छर आदि पैदा हो जाते हैं। अतएव दीपावली का आयोजन इसलिए भी किया जाता है कि मकानों के वर्षा के बाद लीप-पोतकर स्वच्छ कर दिया जाये और फिर कड़वे तेल के दीपक जलाकर निवास स्थान को मच्छर और कीटाणुओं से मुक्त कर दिया जाये।

आरम्भ चाहे जो भी हो, परन्तु यह तो सत्य है कि दीपावली भारतवर्ष का एक अद्भुत पवित्र एवं झिलमिलाते हुए आकर्षक दीपों का पर्व है। दीपावली यह केवल नाम ही मन में अथाह खुशियाँ एवं उमंग भर देने में सक्षम हैं। यह

पर्व खुद को जैन धर्म की दीपावली बताने पर जोर देता रही है। क्योंकि हटडी भगवान के समवशरण की प्रतीक है, खिलौने समवशरण में स्थित लोगों की प्रतीक है, दीपों का प्रकाश केवलज्ञान का प्रतीक है और लक्ष्मी मोक्षलक्ष्मी की प्रतीक है।

अन्त में दीपावली एक प्रकाश पर्व है, जिसका संदेश है कि अपने व्यवहारिक घर के साथ-साथ आत्मिक घर की भी प्रकाशित करो, कुप्रथाओं और कुरीतियाँ से बचो, तथा ब्रह्माण्ड में प्रकट हो रहे अद्भुत दीपमालिकाओं के प्रकाशपुंज से भीतर के अन्धकार को मिटाने का प्रयास करो। भगवान महावीर ने कहा है कि, इस पवित्र पर्व पर आत्मा की गहराई में उतर के देखो, एक दीपक वहाँ भी है, उसे प्रकाशित करो। यह दीपक महावीर के नाम को जपने से नहीं बल्कि उसमें डूबने से जलेगा और यदि यह जल गया तो मोक्ष का पथ आसानी से दिख सकेगा।

आइये दीपावली के इस पावन पर्व पर आत्म दीपक से विषय-कषायों को जलाकर राख कर दें, कुरीतियों-कुप्रथाओं को दूर करें और सच्चे मन से ज्ञान की दीपमालिकाओं को हृदय में उतारें। भगवान महावीर के अहिंसा धर्म को जन-जन तक पहुंचायें और खुद भी हिंसक होने से बचें। यही सच्ची पूजा है भगवान महावीर को उनके निर्वाण उत्सव पर।

जयजिनेन्द्र।

अतिशय क्षेत्र कचनेरजी यात्रा महोत्सव 2017

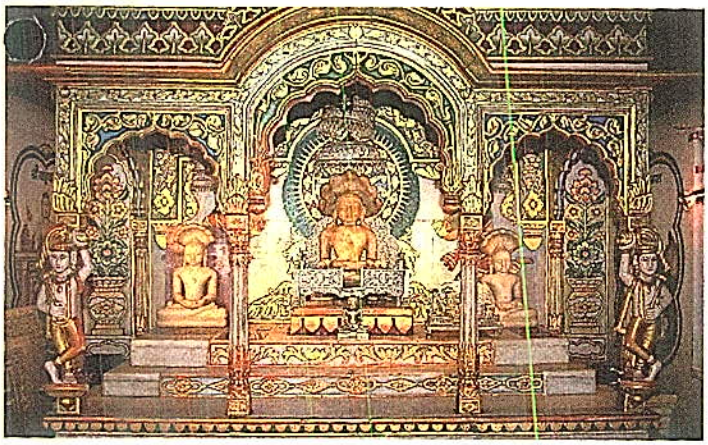

कचनेर:- श्री 1008 चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर तालुका औरंगाबाद जिल्हा औरंगाबाद महाराष्ट्र का वार्षिक यात्रा महामहोत्सव दिनांक 02 नोव्हेंबर 2017 से दिनांक 05 नोव्हेंबर 2017 के बीच होने जा रहा है। मुख्य समारोह परिसर में स्थित सभी त्यागी गण ससंघ के सानिध्य में होने जा रहा है। मुख्य समारोह कार्तिक पूनम दिनांक 04 नोव्हेंबर 2017 शनिवार को होने जा रहा है। यात्रा महोत्सव प्रसंग पर चार दिवसीय महाप्रसादी का आयोजन धर्मानुरागी दानशूर श्री प्रमोदकुमारजी जम्मनलालजी कासलीवाल (अध्यक्ष तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल), धर्मानुरागी दानशूर श्री मनोजकुमारजी दुलीचंदसा साहुजी (कोषाध्यक्ष तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल), दानशूर श्री सुनीलकुमारजी सुंदरलालजी पाटणी परिवार की ओर से किया गया है। यात्रा महोत्सव 15 ते 20 हजार भक्त पैदल आते है। पंचामृत अभिषेक मुख्य आकर्षण होता है। भक्तो के आवास निवास की व्यवस्था करी जाती है। विविध यात्रा महोत्सव समीति यो के माध्यम से एवं कार्यकर्ता के सहयोग से यात्रा आयोजन होता है। यात्रा समय देड से दो लाख भक्तों का आवागमन होता है। यात्रा समय पर सहपरिवार आने का आमंत्रण विश्वस्त एवं कार्यकारिणी मंडळ की ओर से मॅनेजींग ट्रस्टी श्री सुरेशकुमार कासलीवाल एवं महामंत्री भरतकुमार ठोळे ने किया है।

प्रतिक्रियाएँ

प्रेमचन्द जैन, बून्दी (राज.)

तीर्थरक्षा के लिए समाज के बचाना जरुरी। लेखक बहुत ही मार्मिक, सारगर्भित एवं समाज सुधार की दृष्टि से काफी अच्छा लगा।

प्राय: जो समाज में दोष, बुराईया बढ़ती जा रही है, आखिर इसको कोई तो सुधारने में आगे आये, यह सभी बुद्धिजीवियों की भावना है। बिना अंकुश लगाये या मापदण्ड तक किये बिना, इस रोग से मिलना मुश्किल है- असंभव नहीं।

आपके सुझाव पर प्रबुद्धजन क्या प्रयास करते है? यह तो भविष्य ही बतायेगा। इस पर तत्काल प्रभावी कदम उठाने की वर्तमान की मांग हैं, जिसका उत्तरदायित्व आप संभाल सकते हैं और इस दिशा में मेरा तो एक चिंतक के रूप में यही सुझाव है कि राष्ट्रीय स्तर पर एक बार, समाज के प्रधान संरक्षक, अध्यक्षों को बुलाकर एक मंच पर आमंत्रित किया जावे, तो धीरे-धीरे प्रांतीय स्तर पर भी ऐसी बैठकें, प्रभावशाली हो सकती है।

वर्तमान में जो चल रहा है, वह केवल गरीब ही नहीं बड़े-बड़े व्यक्ति भी अपने पुत्र-पुत्रियों के भविष्य को ध्यान में रखकर अपनी मर्जी से या बच्चों की इच्छा से विजातीय संबंधी को बढावा दे रहे है।

लड़कियों की बाहर पढ़ाई, एक साथ नौकरी करने से भी यह समस्या बढ़ती जा रही है। जो लड़कियाँ अपनी स्वेच्छा से यह दुष्प्रास कर चुकी हैं और दुख भरे पत्र समाज को बहिनों को लिख रही है, जो बड़े ही दुख की बात हैं।

मेरा तो अन्त में यही निवेदन है, कि आप पुन: इस विषय पर गहन चिंतन करे, कमेटी अध्यक्ष सरिताजी व महामंत्री पेंढारीजी से मिलकर सम्मिलित प्रयास करें ताकि यह बीमारी नासूर बनने से पहले ही, ठीक हो सकें।

यह सभी की भावना है, आप और हम रहे न रहे आगे की पीढ़ियाँ, इसकी तकलीफ उठायेगी और इसके लिए वर्तमान नेतृत्व ही जिम्मेदार होगा।

ऊपरगांव का जैन मंदिर एवं उसका जीर्णोद्धार

शांतिलाल जैन (जांगड़ा)

वर्षों से उपेक्षित रहे डूंगरपुर जिले के हरियणजी मंदिर के जीर्णोद्धार कराये जाने के बारे में आचार्य श्री समतासागरजी महाराज का ध्यान आकर्शित हुआ है। राजस्थान के डूंगरपुर जिला मुख्यालय से 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित ऊपरगांव नामका एक छोटा सा गांव है। वर्तमान में इस गांव में कोई भी जैन परिवार नहीं रहता है। इस गांव में भगवान श्री श्रेयांसनाथ का दिगम्बर जैन मंदिर रहा है। यह मंदिर जीर्ण–शीर्ण हो चुका है। श्रेयांसनाथ को स्थानीय वागड़ी भाषा में हरियणजी कहा जाता था अतः यह मंदिर हरियणजी मंदिर के नाम से जाना जाने लगा। पहले हरियणजी को वागड़ एवं संबद्ध क्षेत्र के प्रमुख पांच अतिशय क्षेत्रों अथवा वहां की पंचतीर्थी के अन्तर्गत माना जाता था।

इस मंदिर से संबंधित एक प्रशस्ति लेख, जो वर्तमान में डूंगरपुर के राजकीय संग्रहालय में है, से ज्ञात होता है कि विक्रम संवत् 1461 (सन् 1404) में नरसिंहपुरा जाति में उत्पन्न प्रहलाद एवं उसके परिवार जनों ने काष्ठसंघ–नंदीतटगच्छ के भट्टारक रत्नकीर्ति के उपदेश से इस मंदिर का निर्माण करवाकर इसमें 52 जिन बिंबों की प्रतिष्ठा करवाई। कालान्तर में इस गांव में जैन आबादी नहीं रहने एवं मंदिर के जीर्ण–शीर्ण हो जाने पर क्षुल्लक श्री धर्मसागरजी (कुराबड़ वाले) के निर्देशानुसार माघ शुक्ला पंचमी वि. सं. 2005 (3 फरवरी, सन् 1949) को मंदिर में विद्यमान रही सभी जिन प्रतिमाओं को एक भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ डूंगरपुर के तीन दिगम्बर जैन मंदिरों में विराजमान करवा दिया गया। मंदिर के प्रशस्ति लेख को तत्कालीन डूंगरपुर महारावल लक्ष्मणसिंह ने अपने पास मंगवा लिया, बाद में उन्होंने उसे सन् 1976 में डूंगरपुर के राजकीय संग्रहालय एवं कला केन्द्र को भेंट कर दिया।

इस मंदिर से संबंद्ध दो जिन प्रतिमाएं एवं एक पाषाण स्तंभ डूंगरपुर से 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित सुरपुर गांव के श्री पार्श्वनाथ मंदिर में विद्यमान हैं। सुरपुर मंदिर के खेला मंडप में दायीं ओर एक जिन प्रतिमा के परिकर में नीचे की ओर संवत् 1461 का लेख उत्कीर्ण है जिसके अनुसार श्रेष्ठी पाहला (प्रहलाद) ने श्रेयांसदेव बावन बिंब मंदिर का निर्माण करवाकर प्रतिष्ठा करवाई। परिकर के मध्य में जो प्रतिमा है, वह परिकर से भिन्न ज्ञात होती है। इससे कहा जा सकता है कि परिकर तो निश्चित रूप से हरियणजी मंदिर की मूलनायक प्रतिमा से संबद्ध रहा है। हरियणजी मंदिर से संबंधित प्रशस्ति लेख के अनुसार प्रहलाद डूंगरपुर नरेश रावल प्रतापसिंह के प्रवर प्रधान अर्थात प्रधानमंत्री थे। सुरपुर मंदिर में संवत् 1522 में प्रतिष्ठापित एक शीतलनाथ भगवान की प्रतिमा विराजित है, यह प्रतिमा भी हरियणजी मंदिर से संबंधित है। सुरपुर मंदिर में मंदिर के प्रवेश द्वार के अंदर सीढ़ियों के बाद ऊपर की ओर पांच फीट की ऊंचाई का एक पाषाण स्तंभ भी है। इस पाषाण स्तंभ पर 24 तीर्थंकरों एवं काष्ठासंघ–नंदीतट गच्छ परंपरा के आचार्य एवं भट्टारकों की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। यह पाषाण स्तंभ भी हरियणजी मंदिर से लाकर यहां स्थातिप किया गया है। हरियणजी मंदिर से संबंधित

चित्र 1

डूंगरपुर जिले के 'ऊपर' गांव में स्थित
हरियणजी (श्रेयांसनाथजी) के मंदिर का एक दृश्य

कुछ जिन प्रतिमाएं डूंगरपुर के दिगम्बर जैन शामलाजी ऊंडा मंदिर एवं घांटी स्थित दिगम्बर जैन मल्लिनाथ–नेमिनाथ युगल जिनालय में भी विराजित हैं।

हरियणजी मंदिर जैन संस्कृति की ऐतिहासिक पुरा धरोहर है। मंदिर के चारों ओर एक विशाल भूभाग और इसमें एक

चित्र 2

सुरपुर के दि. जैन मंदिर के खेलामंडप में दायीं ओर विराजित भगवान श्रेयांसनाथ की प्रतिमा।

कुआ है जो इसी मंदिर की संपत्ति है। जीर्ण–शीर्ण मंदिर की मरम्मत एवं जीर्णोद्धार जैन संस्कृति के संरक्षण के लिए अत्यन्त आवश्यक कार्य था। डूंगरपुर संग्रहालय के स्टोर में रखे हुए इस मंदिर के प्रशस्ति लेख का क्रमांक 80/22 है। इसकी लम्बाई चौड़ाई 57 सैं.मी. X 48 सैं.मी. है। यह प्रशस्ति लेख संस्कृत के 39 श्लोकों में निबद्ध है। लगभग दस वर्श पूर्व मुझे इतिहास के कुछ विवरणों से हरियणजी मंदिर एवं इसके प्रशस्ति लेख के बारे में जानकारी हुई। इस बारे में मैने जैन पत्र–पत्रिकाओं में लेख लिखकर प्रकाशित कराये। डूंगरपुर के दिगंबर जैन समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों से भी मंदिर के जीर्णोद्धार कराये जाने एवं संरक्षण की आवश्यकता के बारे में निवेदन किया। परंतु किसी ने भी पहल नहीं की। मंदिर के जीर्णोद्धार की ओर यकायक आचार्य समतासागरजी का ध्यान आकर्षित हुआ है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ऊपर गांव (असेला) में सन् 2017 का अपना चातुर्मास संपन्न करने का निर्णय लिया। यद्यपि मंदिर के आस–पास वर्तमान में जैन समाज का कोई घर नहीं है। क्षेत्रीय विधायक देवेन्द्र कटारा और ग्रामवासियों ने आचार्य श्री समतासागरजी से वर्त्त 2017 का चातुर्मास इसी ग्राम में करने हेतु निवेदन करते हुए श्रीफल भेंट किया।

उदयपुर जिले में स्थित सीपुर गांव है वहां पर भी पूर्व में जैन समाज की बस्ती नहीं थी। वहां पर भी एक दिगम्बर जैन मंदिर है। इस मंदिर को भी तीर्थ रूप देने की प्रेरणा भी आचार्य समतासागरजी द्वारा प्रदान की गई थी। उन्होंने वर्ष 2005 का चातुर्मास सीपुर में संपन्न किया था। सीपुर के मंदिर को तीर्थ रूप में विकसित करने में श्री नितीनजी जैन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आचार्य श्री समतासागरजी की प्रेरणा, श्री नीतिनजी जैन के निर्देशन, क्षेत्रीय विधायक श्री देवेन्द्रजी कटारा, आसपास क्षेत्रों के दिगम्बर जैन समुदाय एवं ऊपर गांव (असेला) के ग्रामवासियों के सहयोग से हरियणजी मंदिर के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ हो चुका है। यह एक बहुत ही शुभ कार्य है।

Smt. Sarita and Shri Mahendra K. Jain's son Anurag Jain at Dallas & his Jain friends helped to collect $500,000/- to establish Jain Professorship chair at University of North Texas, USA.

The University of North Texas has named George Alfred James a distinguished faculty member in the depaerment of Philosophy and Religion as it's first Bhagwan Adinatha Professor of Jain studies.

Economic Times 15th Sept 2017

चलो यात्रा प्लान करें: श्रवणबेलगोला

- डॉ. आर.के.जैन, कोटा

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में भगवान बाहुबली के सन् 2018 में होने वाले महामस्तकाभिषेक में देश-विदेश से लाखों यात्री पहुचेंगे। इसके पूर्व आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी का चातुर्मास भी श्रवणबेलगोला में ही होने जा रहा है। इस क्षेत्र के आसपास कई विश्वस्तरीय धार्मिक एवं पर्यटक स्थल है। यात्री बंधु महामस्तकाभिषेक के पूर्व या उपरोक्त अन्य स्थानों की यात्रा का लाभ ले सकते है और अपनी यात्रा को सुविधापूर्वक एवं सुनियोजित प्लान कर सकते हैं।

श्रवणबेलगोला

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रवणबेलगोला 7 से 8 हजार की आबादी वाला एक छोटा कस्बा है जो लगभग 2 कि.मी. में फैला हुआ है। क्षेत्र चैन्नरायपट्टन तहसील तथा हसन जिले में स्थित, कर्नाटक का प्राचीन एक पवित्र जैन तीर्थ है। यहाँ बैंगलोर, मैसूर, आरसीकेरे, मेंगलोर आदि निकटतम स्थानों से हवाई जहाज रेल,बसों एवं निज के साधन से पहुँचा जा सकता है।

कैसे पहुँचे:-

क्षेत्र बैंगलौर से 145, मैसूर से 89, हसन से 50, चैन्नरायपट्टन से 12 एवं आरसीकेरे से 70 किमी है। मेंगलोर से 222 किमी पर क्षेत्र हैं। निकटतम बेंगलोर, मेंगलोर, मैसूर, चेन्नईएयपोर्ट है। उपरोक्त सभी स्थान भारत के प्रमुख एयरपोर्ट से कनेक्टेड है। अंत यात्री जयपुर, इंदौर, दिल्ली, कोलकत्ता, भुवनेश्वर, हैदराबाद, मुम्बई, कोचीन, त्रिवेन्दम, गोवां, चेन्नई, कोयम्बटूरं आदि शहरो से बेंगलोर, मेंगलोर पहुँचकर बस, ट्रेन के साधन से क्षेत्र पर पहुँच सकते है।

ट्रेन के बारे में:-

हाल ही में प्रारम्भ ट्रेन स. 22679 बैंग्लोर (यशवतपुर स्टेशन से) साय प्रतिदिन गाड़ी सायं 6.15 पर रवाना होकर श्रवणबेलगोला रात्रि 8.10 पर पहुँचती है, वापिसी में हसन से आकर श्रवणबेलगोला से प्रात: 7.06 पर रवाना होकर प्रात: 9.15 पर बैंगलोर पहुँचती है।समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र

धर्मस्थल-180

वेणूर-180

मूडविंदी-200

कारकल-225

सुविधायें:-

क्षेत्र पर लगभग 30 अतिथि निवास एवं धर्मशालायें है, जहाँ 2 से 3 हजार यात्रियों के ठहरने की सुविधा है। क्षेत्र पर कई होटल/यात्री निवास के अतिरिक्त कई शासकीय भवन है तथा हसन चैन्नरायपट्टन में हर स्तर के होटल है। जैनमठ में भोजन निशुल्क है और बाजार में भी शुद्ध भोजन

उपलब्ध हो जाता है।

महत्व:-

9वीं से 11 वीं शताब्दी का समय कर्नाटक का स्वर्णकाल था। इस काल में विपुल साहित्य रचा गया और एक से बढ़कर एक भव्य एवं विशाल मंदिरों का निर्माण हुआ। शालवाइन कदम्ब एवं गगवंशीय राजाओं ने जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया। गंगवंश के 700 वशों के शासन काल में ही विश्व प्रसिद्ध बाहुबली स्वामी की प्रतिमा का निर्माण सेनापति चामुण्डराय ने सन् 981 में करवाया था।

श्रवणबेलगोला दो पहाड़ियों के मध्य इन्द्रगिरि (विंध्यगिरि-दोड्डबेट्टा) एवं चन्दगिरि (चिकबेट्टा) के बीच स्थित है। दोनों पहाडियाँ की तलहटी में पवित्र कल्याणी सरोवर है। जैनमत तक वाहन पहुँचते है इसके आस पास कई भव्य जिनालय एवं अतिथि निवास है।

इन्दगिरि पर पहुँचने के लिए 614 एवं चंद्रगिरि पर 200 सीढियां है। इंन्द्रगिरि पर बाहुबली प्रतिमा के अतिरिक्त त्यागदाबह्मदेव, ओदेगलबस्ती एवं सिद्धर बस्ती (विशालद्वार) दर्शनीय है। चंद्रगिरि पर विशाल प्रांगण में मंदिरों के समुह के की थी। चामुण्डराय बस्ती एवं महास्तम्भ की शिल्पकला दर्शनीय है।

तलहटी में भव्य जैन मट के निकट भंडारी बस्ती एवं अन्य मंदिर दर्शनीय है। कई प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार हो गया है।

विशेष:- महामस्तकाभिषेक के विशेष अवसरों पर आवास एवं आवागमन की सुविधाओं में बढ़ोत्तरी की जाती है। कर्नाटक पर्यटन हवाई अड्डों, बस सेंटर, रेल्वे स्टेशन पर सूचना एवं सहायता के लिये विशेष काउटंर चलाते है। कर्नाटक टूरिज्म श्रवणबेलगोला के अतिरिक्त एक से पांच दिन के कन्र्डक्टेड टूर्स भी आयोजित करते हैं।

सम्पर्क:- फोन नं. 080-22352901-03

वेब- karnataktourism.org/karnatakholidays.net

कर्नाटक मार्च से जून तक गर्म हो जाता है।

श्र.बे.गो. के जैन मठ के सूचना केन्द्र 0817-257226 /257258/1257293 तथा कर्नाटक टूरिज्म विभाग के फोन नं. 257254 से भी सम्पर्क किया जा सकता है।

पहाड़ की तलहटी में जूते रखने एवं शहर में ए.टी.एम की सुविधा उपलब्ध है।

मेट्रो शहरों में संचालित महामस्तकाभिषेक केन्द्रों से भी सम्पर्क किया जा सकता है।

समीपवर्त्ती धार्मिक एवं पर्यटक स्थल:-

धार्मिक स्थलों में कम्बदहल्ली, धर्मस्थल, वणूर, मूड़बिदी, गोम्मटगिरि, लारकल, कनकगिरि प्रमुख है। प्रमुख पर्यटक स्थल हैं। बेंगलोर, मैसूर श्री रंगपट्टन, मडिकेरी बेलूर हलेविड आदि प्रमुख है।

दूरस्थ धार्मिक स्थलों में हुमचा, नरसिंइराजपुर, हुबली, स्तवननिधि, सीदामठ, बीजापुर, हम्पी, बादामी, पट्टकदल एवं एहोले है। दूरस्थ पर्यटक स्थलों में प्रमुख है- चैन्नई, पांडिचेरी, उटी, कोडाई केनाल, मदुराई, कन्याकुमारी, रामेश्वर, गोवा, करवार, जोगफाल, मरुदेश्वर, तंजावुर, त्रिची आदि। तमिलनाडू में कई प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है- अर्हतगिरि, पोन्नूर, हिल्स एवं मेल चीतामूर एवं पांडिचेरी प्रसिद्ध धार्मिक एवं पर्यटक स्थल है।

श्रवणबेलगोला से प्रमुख दूरियाँ:- बैगलोर- 145, मैसूर-89, हसन-50 चैन्नरायपट्टन-12, आरसीकेर-70 धर्मस्थल-180, वेणर-200, मूडबिद्री-236, कारकल-263, मेंगलोर-222, श्री रंगपट्टन-73, हुबली-384 किमी है।

समीपवर्ती स्थल-

कम्बदहल्ली-क्षेत्र मंडया जिले में श्रवणबेलगोला से नागमंगला रोड पर 20 किमी. प्राचीन तीर्थ है। क्षेत्र की व्यवस्था भट्टारक श्री भानुकीर्ति स्वामी जी के अधीन है। प्राचीन नाम एक कोटि जिनालय है। पंचकूट जिनालय, शांतिनाथ मंदिर, चंद्रस्वामी मंदिर दर्शनीय है। मंदिर के सामने मानस्तम्भ में ब्रह्मदेव विराजमान है। सम्पर्क-94813-02393

जिननाथपुर:- श्रवणबेलगोला से 1 किमी. पर ऊँचे फार्म पर शांतिनाथ मंदिर शिल्पकला का सुंदर नमूना है।

पारसधाम:- बैंगलोर से हसन रोड पर 110 किमी पर नवीन क्षेत्र पारस ज्ञानतीर्थ बेलूर क्रास से 6किमी. तथा मेडिकल कालेज से 2 किमी है। भगवान पार्श्वनाथ कि 34 प्रतिमा स्थापित है। सम्पर्क: श्री संजय जैन-9845014827

कनकगिरि:- हाल के कुछ वर्षों में सर्वाधिक विकसित एवं प्रचारित प्राचीन क्षेत्र मैसूर से उटी मार्ग पर नजंनगुड से मलेयुर ग्राम में होते हुये 55

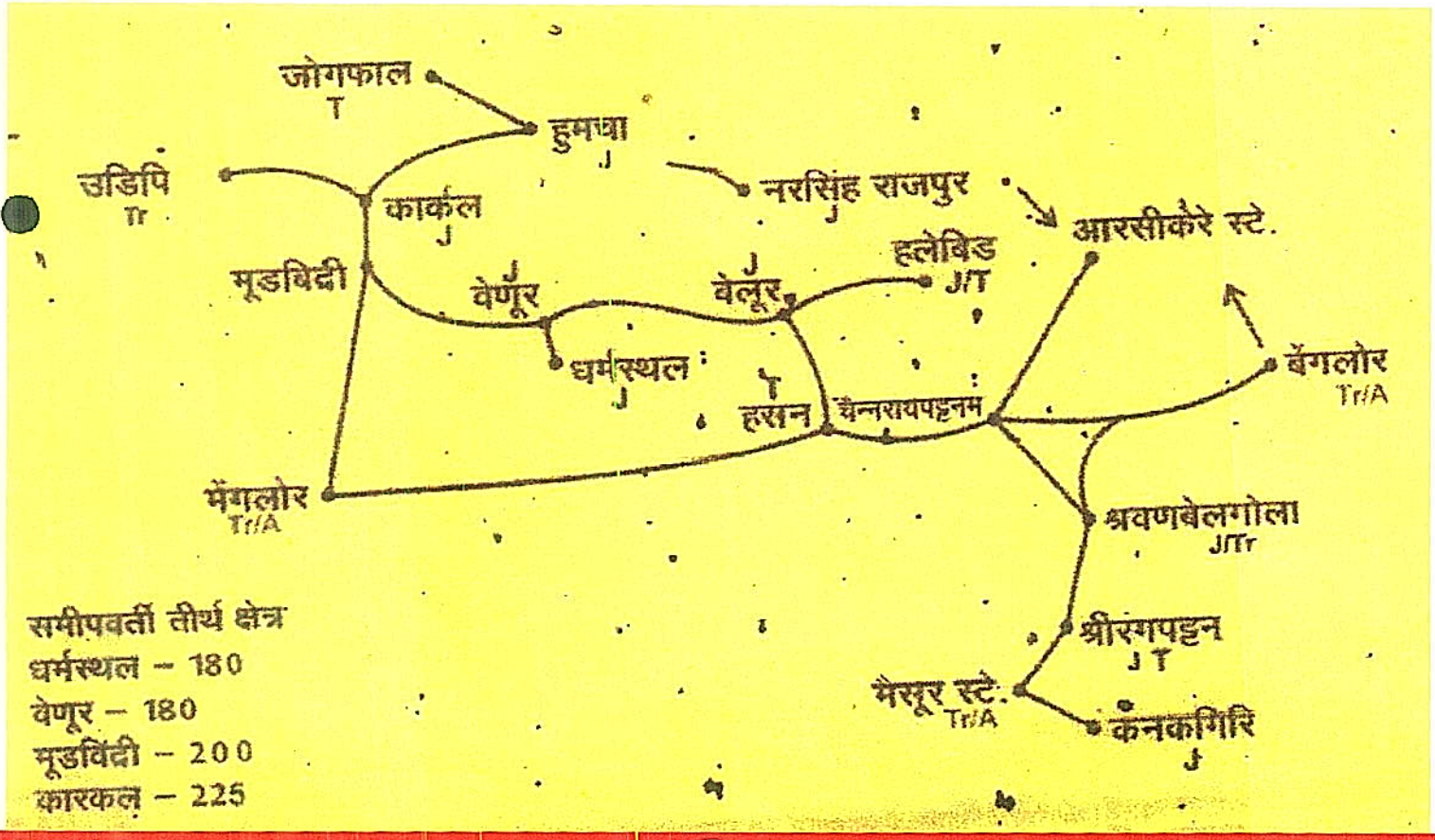

किमी. है। आधुनिक आवास व्यवस्था है एवं भोजन सुविधा निशुल्क है। आचार्य पूज्यपाद की तपाभूमि एवं समाधिस्थल है। अन्य कई समाधियों के बारे 22 शिलालेख है। क्षेत्र पहाड़ी पर है- पार्श्वनाथ मंदिर, कुष्मांडिनी, पदमावती, धरणेन्द्र, ज्वालामालिनी की प्रतिमायें आकर्शक है। संस्था- भट्टारक श्री भुवन कीर्ति स्वामी जी के अधीन कार्यरत है। सम्पर्क:-0821-2735181. मोबाईल 82226-96786

बेलूर:- होयसल साम्राज्य की राजधानी चक्रेश्वर मंदिर के कारण प्रसिद्ध है। हसन से धर्मस्थल के रास्ते में श्रवणबेलगोला से 88 किमी है। हसन 38, बैगलोर-224 किमी है। शिल्पकला अद्भुत है।

हेलिविड:- बेलूर से पूर्व दिशा में 16 किमी. पर उत्कृष्ट शिल्प का सुंदर वैष्णव मंदिर हेलिविड प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। पास में जैन मंदिर है। मुख्य मंदिर में कसौटी के 14 स्तम्भ है। जिनके बजाने पर संगीत निकलता है। यहाँ की शिल्पकला विश्व प्रसिद्ध है। जैनेतर लोग इसे दक्षिण काशी कहते हैं।

धर्मस्थल:- नैत्रावती नदी किनारे प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर सभी धर्मों की स्थली श्रवणबेलगोला से 188 किमी. मेंगलोर-75 मूडबिद्री-55 एवं हसन से 70 किमी. पर क्षेत्र बाहुबली प्रतिमा के अतिरिक्त मेगाकिचन के कारण विश्व प्रसिद्ध है। कार म्यूजियम, उद्यान, मंजूनाथ स्वामी मंदिर दर्शनीय है।

वेणूर:- धर्मस्थल से 33 किमी. पर बाहुबली की 35 प्रतिमा के अतिरिक्त कई मंदिर है। आवास सुविधा उपलब्ध है।

सम्पर्क:- 08256-226078/286288। यहाँ से कारकल सीधे जा सकते है।

मूडबिद्री:- वेणूर से 22 किमी. पर दक्षिण की काशी मूडबिद्री में सुंदर सुविधायें है। 18 बसदियों में चंद्रनाथ मंदिर (त्रिभुवन तिलक चूडामणि) में 1000 स्तम्भ दर्शनीय है। जैन मठ के पास रत्नों की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हैं। भट्टारक श्री. चारुकीर्ति स्वामी जी के अधीन क्षेत्र पर हस्तलिखित आगम ग्रंथों की पाडूलिपियाँ सुरक्षित है। सम्पर्क:- फोन 08258-236418 मो-09902206905

काकल (कारकल):- जैन मठ मूडबिद्री से 18 मेंगलोर से 53 किमी. है। उत्तर भारत से आने वाले मेंगलोर से टेक्सी हायर कर कर्नाटक की सम्पूर्ण यात्रा कर सकता है। क्षेत्र सन् 1432 में निर्मित बाहुबली प्रतिमा के कारण दर्शनीय हैं अन्य कई मंदिर प्राचीन एवं भव्य है। आवास सुविधा है। क्षेत्र पर नया महावीर मंदिर का निर्माण हुआ हैं जहाँ आवास एवं भोजन सुविधा उपलब्ध है। पास में नल्लूर एवं केरियावासी में जैन मंदिर है। सम्पर्क:- 08258-233977 मो-094836-22035

अन्य दूरस्थ धार्मिक एवं पर्यटन स्थल:-

बादामी, पट्टकदल, एहोल, हम्पी, बीजापुर विश्व धरोहर के पर्यटक एवं धार्मिक स्थल है कर्नाटक पर्यटन विभाग कन्डक्टेड टूर्स-प्रायोजित करता है। हुमचाँ, नरसिंहिराजपुर, सौदामठ, हुबली (नवग्रह मंदिर) प्राचीन प्रसिद्ध क्षेत्र है। बादामी श्रवणबेलगोला से 510 किमी. पर चालुक्य राजाओं के शिल्प कला के सवोत्कृष्ट स्थल है। सरोवर के किनारे गुफाओं में सर्वधर्म आकर्षक प्रतिमायें हैं। बादामी में कई स्तरीय होटल हैं।

पट्टकदल-बादामी से 26 किमी. एवं एहोल 35 किमी. है। कर्नाटक सरकार के पुरातत्व विभाग के अधीन प्राचीन जैन मंदिर संरक्षित किये हुये हैं। नजदीक एयरपोर्ट बेलगांव हैं। बैंगलोर 523, बीजापुर-140, हुबली-102 किमी. पर है।

बीजापुर:-बेलगांव से 217 किमी. है। क्षेत्र महाराष्ट्र-कर्नाटक की सीमा पर स्थित सहस्त्र फणी पार्श्वनाथ (महेन्द्रगिरि) एवं विश्वस्तरीय कलात्मक स्मारको के लिये प्रसिद्ध षैं। आदिलशाह का विशाल मकबरा एवं इब्राहिम रोजा प्रसिद्ध और दर्शनीय हैं सुविधायुक्त आवास एवं भोजन सुविधा सम्पर्क-08352-224871, मो-099011-79108

हम्पी:- विजयनगर साम्राज्य की राजधानी बैल्लारी जिले में स्थित है। जैन-अजैन यात्रियों के लिये विश्व-धरोहर-होसपेट स्टेशन से 12 किमी. है। कर्नाटक टूरिज्म का गेस्ट हाउस हैं। बैगलोर से कन्डस्टेडटूर से भी आया जा सकता है। श्रीमद् राजचंद आश्रम में आवास एवं भोजन सुविधा उपलब्ध हो सकती हैं। अन्य कई स्तरीय होटल एवं लांज भी है।

विशेष:- बैंगलोर-मैसूर को मुख्य केन्द्र बना कर भी यात्रायें की जा सकती है। बैंगलोर कर्नाटक की राजधानी में मंदिर दर्शनों की अतिरिक्त कई दर्शनीय स्थान हैं। प्रमुख है- लालबाग बोटेनिकल गार्डन, कब्बन पार्क, विधानसौधा, संग्रहलय, टीपू सुल्तान का महल एवं किला। चंदन रोजवुड तथा हाथी दांत के दस्तकारी वस्तुयें तथा मैसूर सिल्क गाड़ी खरीददारी के लिये प्रसिद्ध है। हर स्तर के होटल लाज एवं धर्मशाला उपलब्ध हैं। स्टेशन के निकट जैन धर्मशाला के लिये सम्पर्क:- 080-22911890, जैन भ[illegible] 080-26624056 कर्नाटक टूरिज्म-2275864/2275883

मैसूर सभी दूरस्थ शहरों से हवाई, सड़क मार्ग, एवं ट्रैन से जुड़ा है। कर्नाटक का प्रमुख पर्यटक शहर बेंगलोर से 140 श्रवणबेलगोंला 89, वृंदावन गार्डन 20, चामुंडी पहाड़ी-13, श्री रंगपट्टनम (प्रसिद्ध पर्यटक स्थल/जैन मंदिर)-16, सोमनाथ वैष्णव मंदिर-32 किमी. हैं राजमहल प्रसिद्ध हैं। जैन मंदिर स्टेण्ड से 1 किमी. चंद्रगुप्त रोड पर स्थित है तथा शान्तिनाथ मंच मंदिर महल के निकट है।

सम्पर्क:- श्री विनोद बाकलीवाल मंत्री, तीर्थक्षेत्र कमेटी मो-0990042001

नोट: अन्य दूरस्थ पर्यटक स्थानों के लिये कर्नाटक टूरिज्म से सम्पर्क किया जा सकता है। तीर्थक्षेत्रों की सम्पूर्ण जानकारी लेखक की पुस्तक जैन तीर्थ वंदना एवं दर्शनीय स्थल से प्राप्त की जा सकती है।

भगवान बाहुबली की विशाल मूर्ति

नगर श्रवणबेगोला में प्रथम जैन तीर्थकर भगवान ऋषभदेव के पुत्र भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा दूर से ही दिखाई देती है, बहुत ही सुन्दर मुखाकृति एवं दैवी प्रकृति के धनी भगवान बाहुबली ने अपने भाई भरत जो अनेकों राज्यों को जीतकर अब अपने भाई बाहुबली का राज्य भी जीतना चाहते थे, के साथ युद्ध का विरोध किया।

भगवान बाहुबली के अनुरोध पर महासंहार को रोकने के लिए भरत अपने भाई बाहुबली के साथ तीन प्रकार का युद्ध करने पर सहमत हो गए। पहला दृष्टि युद्ध, बिना आँख झपकाये एक दूसरे की ओर एकटक देखना, दुसरा जलयुद्ध एक दूसरे के मुख पर पानी फेकना, तीसरा मलयुद्ध एक दूसरे से कुश्ती लड़ना। जब तीनों युद्धों में बाहुबली जीत गए तो क्रोधित होकर भरत ने बाहुबली पर चक्र चला दिया, कहा जाता है कि चक्र बगैर कुछ किए उनके पास लौट आया।

विजयी परन्तु उदास बाहुबली ने अपनी सारी सम्पत्ति भरत को सौंप दी और अपने राज्य को छोड़कर सन्यासी बन गये। कहा जाता है कि बाहुबली एक वर्ष तक दिगम्बर ध्यानमग्न खड़े रहे और अपने पिता तीर्थकर ऋषभदेव से बहुत पहले ही केवल ज्ञान और मोक्ष प्राप्त कर लिया।

पहाड़ी पर करीने से उकेरी गई प्रतिमा यह सब कुछ दर्शाती है, उनकी शांत मुख मुद्रा, उनके तप एवं त्याग को एवं प्राणी मात्र के प्रति उनकी करुणा और प्रेम को सिर से कंधों तक जाते उनके घुँघराले बाल, उनके पैरों के आस–पास सांपों ने अपनी बांबियाँ बना ली थी। बेले उनके शरीर पर चढ़ आई थी क्योंकि बाहुबली एक वर्ष तक बिना हिले–डुले अपनी तपस्या में लीन खड़े रहे।

कहा जाता है, कि भगवान बाहुबली की प्रतिमा की स्थापना राजा चामुण्डराय द्वारा रविवार मार्च 13, 981 को की गई। तब से लेकर हर 12 वर्ष के उपरांत प्रतिमा का नियमित रूप से महामस्तकाभिषेक किया जाता है।

अगले वर्ष फरवरी 7 से 26 के मध्य ऐसा ही 88वाँ महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोला के जैन मठाधीश भट्टारक स्वामी चारूकीर्ति जी के द्वारा किया जाएगा जो बड़े उत्साह के साथ इसकी तैयारियों मे लगे हैं। स्वामी जी 1970 में मठाधीश बने और 1981 में उन्होंने भगवान बाहुबली की मूर्ति स्थापना के 1000 वें साल का और महामस्तकाभिषेक का आयोजन किया। बाद में वर्ष 1993 एवं 2006 में भी इसकी पुनरावृति हुई।

इस महान आयोजन को जन कल्याण के साथ जोड़ते हुए जैन

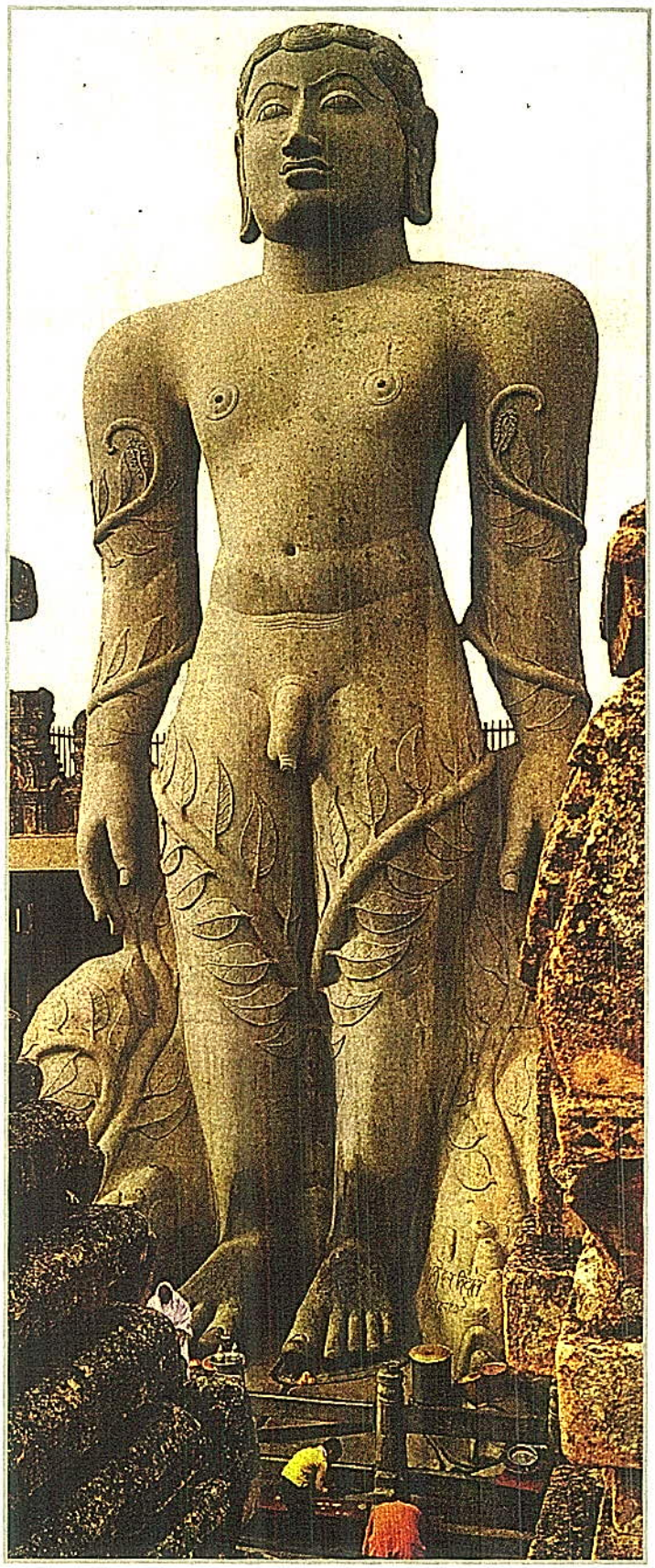

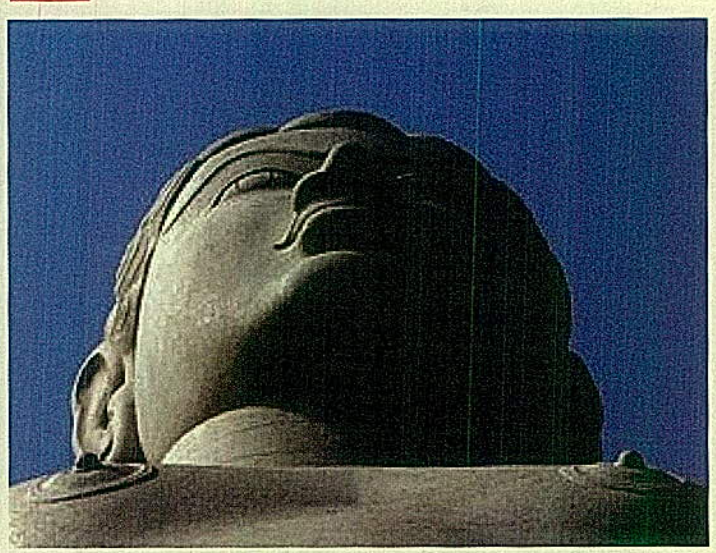

मठ सेवा के निम्न कार्य करता आ रहा है–

1981– एक हजार लोगों के मुफ्त मोतिया बिन्द आपरेशन।

1993– चार सौ लोगों को कृत्रिम अंगों का वितरण।

2006– पच्चास बिस्तर वाले एक बच्चों के अस्पताल और एक इंजीनियरिंग कालेज के लिए धन एकत्रित करना।

2018– अस्पताल में और 200 बिस्तर के विस्तार के लिए और धन एकत्रित करना।

इस प्रकार से 12 वर्ष में एक बार होने वाला यह आयोजन केवल भक्ति पूजा या तीर्थयात्रा न होकर समाज कल्याण के कार्यों को बढ़ावा देना भी है। स्वामी जी कहते हैं कि भक्ति और पूजा हमारी संस्कृति है भगवान बाहुबली ने भी कहा है कि बिना भेद भाव के सेवा करो क्योंकि हम सभी दुःख का पीड़ा का अनुभव करते हैं। परोपकार और निःस्वार्थ सेवा के बिना भक्ति और पूजा अधूरे हैं।

अभिषेक के पहले दिन प्रथम कलश पर सर्वाधिक दान आता है। सन् 2006 में आर0 के0 मार्बल्स राजस्थान के श्री अशोक पाटनी जी ने प्रथम कलश पर 1.80 लाख रू0 दान में दिए थे, जिससे श्रवणबेलगोला में एक अस्पताल का निर्माण किया गया। प्रतिदिन यहाँ पर 150 बच्चों का इलाज मुफ्त में किया जाता हैं।

भट्टारक जी कहते हैं– इससे जैन समाज में एक नई क्रान्ति आ गई– सामाजिक क्रान्ति भगवान के अभिषेक का विशेषाधिकार उन लोगों को दिया जाता था, जो निःस्वार्थ सेवा के लिए तत्पर थे। भगवान आदिनाथ ने प्रजा के हित के लिए उन्हें असि, मसि, एवं कृषि–तीन विद्याएं सिखाई।

यहाँ श्रवणबेलगोला में हम जन – कल्याण के कार्य करते हैं, जैसा कि भगवान बाहुबली ने सिखाया उन्होंने बिना शस्त्र प्रयोग के युद्ध जीता वे निःशस्त्रीकरण एवं शान्ति की कीमत जानते थे। अतः शान्ति की एवं अध्यात्म की ऐसी समृद्धि परम्परा से भारत जगद्गुरू बन सकता है।

स्वामी जी आगे कहते हैं कि वर्ष 2018 के महामस्तकाभिषेक का दो मुख्य विषय हैं– शिक्षा और सेवा, हम मन्दिर के पैसे को दानादि कार्यों के लिए उपयोग करने का प्रयत्न करते हैं। केन्द्र एवं राज्य सरकारें भी ऐसे कार्यों के लिए धन का सहयोग करती हैं। विन्ध्यागिरि पहाड़ी पुरातत्व विभाग के आधीन है क्योंकि यह एक राष्ट्रीय सम्पत्ति है। संसार का आश्चर्य है। पहाड़ी के चारों ओर बाड़ लगाने को स्वीकृति मिल गई है और तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए चट्टान पर नई सीढ़ियाँ बनाई जा रही है। सुरक्षा के भी पुख्ता इन्तजाम किए जाएंगे जैसे कि कुम्भ आदि मेलों के दौरान किए जाते हैं। अस्थाई आवास भोजनालय एवं चिकित्सा सुविधाओं का भी प्रबन्ध किया जायेगा।

स्वामी जी कहते हैं कि हम महामस्तकाभिषेक के दौरान प्रतिदिन पहाड़ी पर लगभग 8000 लोगों का प्रबन्ध कर पायेंगे और अन्य बहुत से लोग इस उत्सव का विंध्यागिरि के सामने वाली चन्द्रगिरि पहाड़ी से आनन्द ले पायेंगे। भक्तों के बैठने के लिए लकड़ी के तख्तों का और मचान का प्रबन्ध किया जायेगा और जो लोग कलश लेते हैं वे सीधे मूर्ति तक जाकर भगवान बाहुबली का मस्तकाभिषेक कर सकें, ऐसी उचित व्यवस्था की जायेगी।

एक हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी ग्रेनाइट पत्थर की यह मूर्ति ऐसी प्रतीत होती है, मानो कल ही उकेरी गई हो, कोई दाग–धब्बा नहीं है, एकदम स्वच्छ, भट्टारक जी कहते हैं, ऐसा ही प्रश्न अंग्रेजों के मस्तिष्क में भी आया था। उन्होनें यह जाँचने के लिए कि मूर्ति पहाड़ी का हिस्सा है अथवा अलग – अलग टुकड़ों से बनी है। एक आयोग का गठन किया था, लेकिन उन्होंने पाया कि मूर्ति और पहाड़ी दोनो एक ही रचना है। उन्होंने पाया कि मूर्ति एक जीवित मूर्ति है, क्योंकि यह पहाड़ी से अथवा जमीन से अलग होकर नहीं बनी है। ऐसा ही सभी वैज्ञानिकों का भी अभिमत है।

भट्टारक जी ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू जब यहाँ आए थे तो उन्होंने कहा था कि यहाँ आकर भगवान बाहुबली के आगे मस्तक झुकाने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यहाँ आकर मस्तक खुद–ब–खुद झुक जाता है।

यह भगवान बाहुबली का प्रताप है, निर्मल, बलशाली, करूणामय जैसे कि उनकी मूर्ति अथवा विश्व के करोड़ो श्रद्धालुओं के हृदय में विराजमान उनको निःस्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित करते हुए।

स्वराज जैन
(द् टाइम्स ऑफ इण्डिया)

'गोमटेश दर्शन से हो जाती है सारे तनावों से मुक्ति'

-डॉ अनेकांत कुमार जैन,नई दिल्ली

कर्नाटक के हासन जिले में चेनरायपट्टन के पास श्रवणबेलगोला एक ऐसा तीर्थ स्थान है जहाँ जाने मात्र से मनुष्य अनेक शारीरिक और मानसिक रोगों से मुक्त हो सकता है। मानसिक सुख और शांति के लिए द्रव्य,क्षेत्र, काल, भाव सभी की शुद्धि और मंगल आवश्यक है । ऐतिहासिक दृष्टि से यह महज एक संयोग मात्र नहीं है कि हजारों सालों से यह स्थान साधना और सल्लेखना का मुख्य केंद्र रहा है,बल्कि यह इस क्षेत्र की आध्यात्मिक और भौगोलिक पवित्रता का प्रभाव रहा कि साधना के अनुकूल मानसिक और आत्मिक सुख और शांति के लिए यह स्थान समस्त मुनि परंपरा के लिए आकर्षण का केंद्र रहा। समाधिमरण के यहाँ के शिलालेखीय दस्तावेज इस बात के सबसे बड़े प्रमाण हैं कि जीवन के अंत में मानसिक शांति पूर्वक संयम और साधना के साथ देह विसर्जित करने के लिए इस स्थान को सर्वश्रेष्ठ माना गया।

यहाँ दो पर्वत हैं – १.विन्ध्यगिरी पर्वत २. चंद्रगिरी पर्वत । विन्ध्यगिरी पर्वत की संरचना कुछ इस प्रकार की है कि नंगे पैर वंदना करने से मनुष्य के भीतर के सभी आज्ञाचक्र स्वतः क्रिया शील हो उठते हैं । मनुष्य न अधिक थकता है और न अधिक भार महसूस करता है । श्वास की गति तीव्र होने से अन्दर की धमनियों में रक्त प्रवाह तीव्र हो उठता है जिससे शरीर के सभी अंगों, प्रत्यंगों में क्रिया शीलता स्वतः बढ़ जाती है। यहाँ की आरंभिक सीढियाँ पर्वत के पत्थर को ही काट कर निर्मित की गयीं हैं अतः वे न तो ज्यादा बड़ी हैं न ज्यादा छोटी अतः उच्च रक्त चाप तथा हृदय के रोगियों के लिए धीरे धीरे मध्यम गति से वंदना करने से उनके स्वास्थ्य के लिए ये वरदान हैं।

श्वासोच्छ्वास स्वतः ही कभी तीव्र कभी मंद हो जाता है उसे करना नहीं पड़ता अतः यह स्वाभाविक प्राणायाम मस्तिष्क के तंतुओं को जागृत कर देता है जिससे सिर दर्द तनाव आदि में लाभ होता है ।

मध्य में जो जिनालय आते हैं उनमें झुक कर जाना तथा तीन आवर्त पूर्वक वंदना मुद्रा में बैठ कर तीन बार शिरो वंदन करना अपने आप में एक अद्भुत योग है ।जिनालयों की प्राचीन विशाल प्रतिमाओं का पवित्र आभा मंडल हमारे आभा मंडल में प्रवेश कर जाता है तथा वह इतना शक्ति शाली होता है कि हमारे आभा मंडल में संग्रहीत नकारात्मक उर्जा को सकारात्मक उर्जा में परिवर्तित कर देता है।

मध्य जिनालयों तथा मार्ग स्थित शिलालेखों में प्राचीन कन्नड़ लिपि में उत्कीर्ण अक्षर विन्यास का दर्शन हमारी मानसिक उलझनों को अनायास ही खींच कर संतुलित कर देता है । उसके अनंतर सीडियां कुछ बड़ी हो जाती हैं जो हमारे उत्कर्ष और पुरुषार्थ की भावना को उठाती हैं ।

हम जब उन्हें पार करते हैं तो प्रथम द्वार से ही गगन चुम्बी उत्तुंग बाहुबली की मूर्ती का वीतरागी प्रशांत मुद्रा युक्त चेहरा हमारे समस्त विकल्प जालों को ख़ारिज करता हुआ हमें निर्विकल्प दर्शन की ओर ले जाता है । पुनः एक छोटा सा द्वार हमें झुकाता है और फिर विशाल बाहुबली का दर्शन हमें इतना उठा देता है कि जन्मों जन्मों का मिथ्यात्व एक क्षण में नष्ट हो जाता है और हमें पता लगता है कि यही है –

सम्यक्दर्शन । राग स्वतः नष्ट होने लगता है ।

बाहुबली हमें अपने वैराग्य के बाहुपाश में मानो खींच लेते हैं। थोड़ी देर को सही पर हम भी वीतरागी हो जाते हैं । उस परिकर में मनुष्य और उसका अहंकार स्वतः ही बहुत छोटा हो जाता है । हर दर्शनार्थी को लगता है कि मैं ,मेरा मान ,मेरा वैभव,मेरा ज्ञान,मेरा कुल,मेरी परंपरा,मेरी परेशानियाँ,मेरा तनाव सब छोटे हैं ,तुच्छ हैं ।

वैराग्य और वीतरागता के समुन्दर में गोते लगाता हुआ दर्शनार्थी मानसिक तनाव जैसे तुच्छ रोगों को पास भी नहीं फटकने देता । मूर्ति का विशालकायत्व और शक्तिशाली प्रभाव हमारी जनम जनम की सभी वासनाओं को तिरोहित कर के शुद्धता की प्राप्ति करने में बहुत बड़ा निमित्त बन जाता है ।

चंद्रगिरि पर्वत भी अपनी बनावट और अद्भुत शिल्प सौंदर्य के साथ मनुष्यों की उस प्यास को बुझाने का काम करता है जो उसे सांस्कृतिक बोध के अभाव में तड़फा रही है । शब्द,चेतना और कला की बारीकियां जब मनुष्यों के भाव अस्तित्व से लुप्त होने लगती हैं तो इनसे रीता उसका कोरा अध्यात्म उसे त्राण नहीं दे पाता है यहाँ आकर उसे लगता है कि वह आचार्य भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त से बातें कर सकता है,ज्ञान विज्ञान का प्राचीन वैभव देखकर उसका आत्म वैभव जागृत होता है।

संसार ,शरीर और भोगों से विरक्त हजारों ज्ञानियों के चरण हजारों वर्षों से जिस पर्वत पर आचरण का इतिहास लिख रहें हों ,उस पर्वत पर जब हमारे चरण पड़ते हैं तो हम भी कब उस आचरण की गंगा में तैरने लगते हैं ,हमें स्वयं पता नहीं लगता । यहाँ के वसदियों में हजारों सालों तक मन्त्रों के उच्चारण हुए हैं ,आगमों की गाथाएं गाई गयीं हैं,स्तुतियों के कीर्तिमान रचे गए हैं । यहाँ के एक एक परमाणुओं में वे शब्द ,वे ध्वनियाँ खचित प्रतीत होतीं हैं । जब हम उन वसदियों में प्रवेश करते हैं तो वे शब्द,वे ध्वनियाँ हमारे कानों में गूजनें लगती हैं ।

हम उन शताब्दियों में विचरण करने लगते हैं जब भद्रबाहु, कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, पूज्यपाद, नेमिचंद्र आदि महामुनि रहा करते थे। ऐसे वातावरण की अनुभूति करने वाला कभी तनाव में नहीं रह सकता और अवसाद तो आसपास भी नहीं फटक सकता।

Prabhavana Rathyatra of the Mahamastakabhisheka flagged off

Belgaum: 'The message of peace and non-violence propagated by Bhagwan Bahubali must be spread across the world since it is so relevant to each one of us and we all must follow it' said former minister and AICC Secretary Satish Jarkiholi, MLA, while flagging off the Prabhavana Rathyatra at Bogarves on Sunday 10th September 2017. The Rath Yatra commenced its weeklong journey in Belagavi taluka with a view to create awareness about the Mahamastakabhishek Mahotsava celebrations of Gommateshwar Bhagwan Shri Shri Shri Bahubali Swami to be held from 17th to 25th February 2018 at Shravanbelagola.

These celebrations are held once every 12 years at Shravanbelagola. The Karnataka Government has assured to provide all the facilities to the lakhs of devotees who would be visiting the holy place during the period of the celebrations in February. Mr. Jarkiholi also expressed that this is a matter of great pride for all of us since this Rath Yatra has elicited a holy environment throughout the district.

Shri P.Y. Rajendrakumar, Vice President of Karnataka Jain Association and President of the Publicity Committee of the Mahamastakabhishek in his inaugural address said that the state govt. has already sanctioned Rs. 175 crores for the celebrations which shall be utilized for the development of the town of Shravabelagola as also for providing basic facilities for the lakhs of devotees who would arrive at the town during the celebrations. This Prabhavana RathYatra is traversing across the state as per the guidance of His Holiness Jagadguru Karmayogi Swastishri Charukirti Bhattarak Mahaswamiji to create awareness about the celebrations. This Rath shall travel across Belagavi and 25 surrounding villages and towns this week.

Shri Firoz Sait, MLA, Former MLA Shri Abhay Patil, Shri Vinod Doddanavar- National Secretary of the Gommateshwar Bhagwan Shri Shri Shri bahubali Swami Mahamastakabhsihek Committee, KPCC Secretary Sunil Hanmannavar, Rajeev

Satish Jarkiholi flagging off the Rathyatra. Also seen Rajendra Jain, Firoz Sait and Vinod Doddanavar

Doddanavar-Secretary-Bharatesh Education Trust, Kirtikumar Kagwad, Pankaj Patil, Sanathkumar V.V., Rajendra Jain graced the stage. Shri Mithun Shastri welcomed the guests and anchored the program.

The Prabhavana Rathyatra travelled from Bogarves through Kirloskar Road, Maruti Galli, Basvan galli, Tilak Chowk, Anantshayan Galli, Kulkarni Galli, Sheri galli, Math Galli, Kalmath Road and ended at Bharatesh Education Trust. The Yatra shall cover Gandhinagar, Dharmanath Bhavan, Srinagar, ramtirthnagar on 11th Sept, Balekundri, Mutga, basvan Kudchi on 12th Sept, Alarwad, Bastwad, Halaga on 13th Sept, Old Belgaum, Hosur, Shahapur on 14th Sept, Hindwadi, Tilakwadi, Channammanagar on 15th Sept, Peeranwadi, Kuttalwadi, Macche on 16th Sept and Angol and Mazgaon on 17th September 2017.★★★★

क्या दो मिनिट हैं आपके पास

क्षुल्लक चन्द्रदत्त सागर

जैन धर्म मात्र 100 साल का बचा है। जैन एक शब्द नहीं एक संस्कृति और आचार-विचार का नाम है। सम्पूर्ण विश्व में हम अपने खान-पान व उच्च आचरण से अपनी अलग ही पहचान रखते हैं परन्तु आज अनादिकाल की संस्कृति को स्वयं ही खुद मिटाने में लगे हुये है हमारा धर्म मात्र 100 साल का रह गया है। विचार करो आज हमारी आबादी मात्र 40 लाख है और प्रतिदिन दो प्राणी मात्र एक संतान को जन्म देंगे तो 25 वर्ष बाद 20 लाख और फिर 25 वर्ष बाद 10 लाख, फिर 25 वर्ष बाद 5लाख, फिर 25 वर्ष पश्ताच् मात्र 2/2 लाख वो नहीं बचेगे क्योकि हर सौ जोड़ो में 2 बच्चे एक्सीडेन्ट, बीमारी, आत्महत्या एवं कुछ नपुसंक व कुछ ब्रह्मचारी संत एवं कुछ लड़किया घर से भागकर अजैनों में विवाह तो कुछ साध्वी बन जाती है। बताओं कितनी कम जनसंख्या और फिर हम तेरह, बीस, संतवाद पंथवाद, दिगम्बर श्वेताम्बर, कहान पंथी, तारण पंथी जातीवाद में उलझकर कर आपस में कषाय कर अपने धर्म को समाप्त करने में लगे हैं सोचो विचारों अगर समाजिक शीर्षस्थ संस्थाओं के कार्यकर्ताओं व आचार्यों व संतों ने मिलकर इस पर विचार नहीं किया तो हमारे तीर्थों मंदिरों व धर्मशालाओं की सम्पत्ति को कौन संभालेगा। आचार्य श्री समन्तभद्र जी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में लिखा है न धर्मो धार्मिक बिना धार्मिक व्यक्ति के बिना धर्म टिक नहीं सकता। मन्दिर तीर्थ के बिनातो हम घर में पाठ स्वाध्याय आदि कर लेंगे पर धार्मिख धर्मात्मा ही नहीं होंगे संतान ही नहीं होगी मन्दिर तीर्थ व घर में कौन पूजा, स्वाध्याय दर्शन करेगा। हमें जनसंख्या बढाने के उपाय खोजकर इस पर गंभीर चर्चा पारस चैनल व जिनवाणी चैनल पर देना होगा व सभी संतों के पास एक प्रतिनिधि मंड़ल बनाकर जाना होगा व इस चिंताजनक विषय को रखना होगा सन संत आचार्य गण उपाध्याय मुनिजी एवं आर्यिका माताजी क्षुल्लिका श्री ऐलक क्षुल्लकजी महाराज त्यागीव्रती विद्वान समाप्त के प्रकट अध्यक्ष कार्यकताओं सभी विचार कर गोमठी मिटिंग कर इस को समाप्त मे लाये। कुछ शब्द गलत लिखे तो क्षमा प्रार्थी हूँ।

★★★★

गोमटेश बाहुबली भगवान

–आचार्य प्रज्ञसागर मुनि

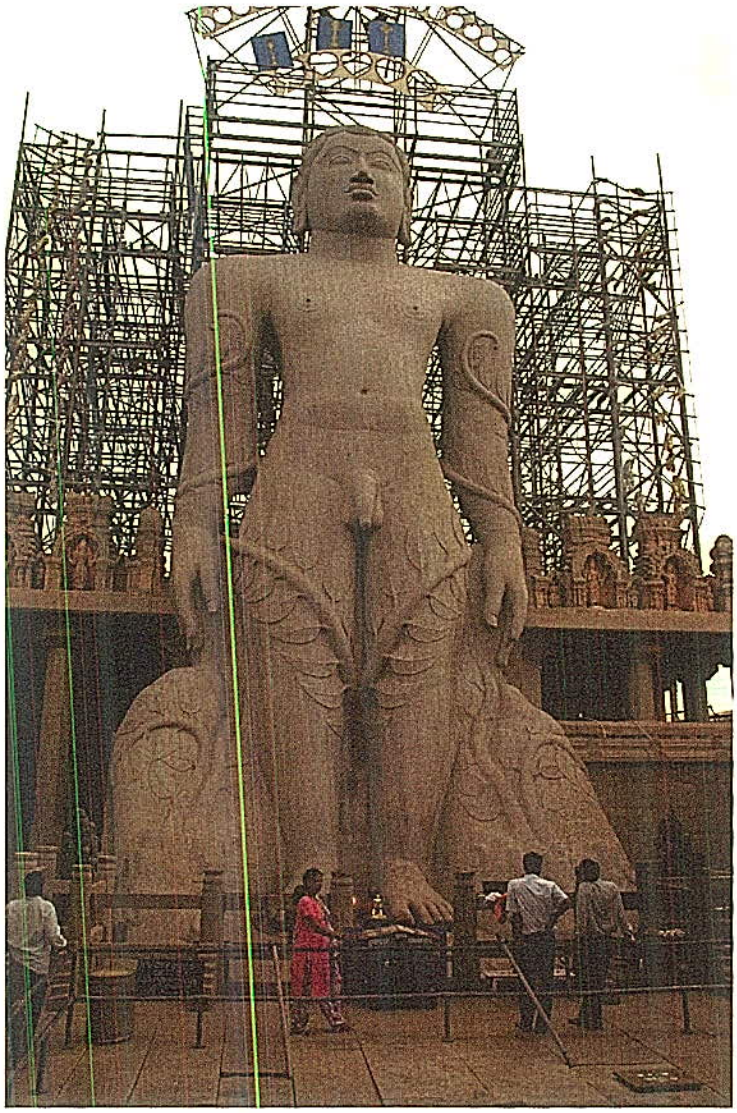

कृतयुग की आदि में अंतिम कुलकर महाराजा नाभिराज हुए हैं। उनकी महारानी मरुदेवी की पवित्र कुक्षि से इस युग के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म हुआ है। वैदिक परम्परा में इन्हें अष्टम अवतार माना गया है। ऋषभदेव के दो रानियाँ थीं-यशस्वती और सुनन्दा। यशस्वती के भरत, वृषभसेन आदि सौ पुत्र हुए और ब्राह्मी नाम की कन्या हुई हैं। सुनन्दा बाहुबली नाम के एक पुत्र को और सुंदरी नाम की कन्या को जन्म दिया। वृषभदेव ने ब्राह्मी और सुन्दरी इन दोनों पुत्रियों को सर्वप्रथम विद्याभ्यास कराया। दाहिनी तरफ बैठी हुई ब्राह्मी को अपने दाहिने हाथ से 'अ आ इ ई' सिखाई और बायीं तरफ बैठी हुई सुन्दरी को १, २, ३ आदि संख्याएँ लिखकर गणित विद्या सिखाई। ऋषभदेव ने स्वयं ही इन दोनों कन्याओं को सर्व विद्याओं में पारंगत करके साक्षात् सरस्वती का अवतार बना दिया। इसी तरह भरत, बाहुबली आदि एक सौ एक पुत्रों को भी सर्व विद्याओं में, सर्व कलाओं में, सर्व शास्त्रों और शस्त्रों में भी निष्णात बना दिया। ऋषभदेव ने प्रजा को असि, मसि आदि षट् क्रियाओं का उपदेश दिया जिससे प्रजा उन्हें युगादि पुरुष, युगस्रष्टा, विधाता, प्रजापति आदि नामों से पुकारने लगी। किसी समय ऋषभदेव राजपाट से विरक्त हो वन को जाने लगे तब उन्होंने भरत को अयोध्या का राज्य सौंपा और बाहुबली को पोदनपुर का अधिकारी बनाया। इसी तरह अन्य निन्यानवे पुत्रों को भी अन्य देशों का राज्य देकर आप मुनिमार्ग को बतलाने के लिए निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनि हो गये।अनेक वर्षों बाद भरत महाराज के दरबार में एक साथ तीन संदेशवाहक आते हैं। एक कहता है-राजन! आपके पूज्य पिता ऋषभदेव को केवलज्ञान प्रगट हुआ है। दूसरा कहता है-राजाधिराज! आपकी आयुधशाला में चक्ररत्न उत्पन्न हुआ है पुन: तीसरा समाचार पुत्ररत्न की उत्पत्ति का आता है। इन हर्षवर्धक तीनों समाचारों को एक साथ सुनकर भरतराज मन में विचार करने लगे कि पहले कौन सा उत्सव मनाना चाहिए। पुन: वे सोचते हैं पहले केवलज्ञान उत्सव की पूजा करना अत: वे भगवान ऋषभदेव के समवसरण में पहुँचकर भगवान की पूजा करके दिव्य उपदेश श्रवण करते हैं। उसी समय भरत के तीसरे भाई वृषभसेन आकर दीक्षा लेकर भगवान के प्रथम गणधर हो जाते हैं। बहन ब्राह्मी-सुन्दरी भी आर्यिका दीक्षा लेकर आर्यिकाओं में प्रमुख बन जाती हैं। भरत महाराज वहाँ से आकर चक्ररत्न की पूजा करके पुत्र जन्म के उत्सव को सम्पन्न करते हैं। पुन: चक्ररत्न को आगे कर दिग्विजय के लिए प्रस्थान कर देते हैं। दशों दिशाओं के सभी राजाओं को अपने अधीन करके भरत साठ हजार वर्ष बाद अयोध्या में प्रवेश करना चाहते हैं कि इसी समय उनका चक्ररत्न अयोध्या के गोपुर द्वार पर रुक जाता है। जब भरत को पता चलता है कि अभी हमारी दिग्विजय यात्रा अधूरी है, हमारे भाई ही हमारे अधीन नहीं हैं तब वे अपने अनंतविजय आदि अट्ठानवे भाइयों के पास दूत भेजते हैं। इस अवसर पर वे सभी भाई भरत की अधीनता स्वीकार न कर पूज्य पिता ऋषभदेव के पास जाकर मुनि बन जाते हैं पुन: भरत बाहुबली के पास भी दूत भेजते हैं किन्तु बाहुबली भी भरत को राजाओं का राजा चक्रवर्ती मानकर अधीनता स्वीकार करना नहीं चाहते हैं। तब दोनों पक्ष में युद्ध का तुमुल बज उठता है, इस दृश्य को देख दोनों पक्ष के मंत्री विचार करते हैं कि यह महायुद्ध महान हिंसा को कराने वाला होगा अत: इन दोनों भाइयों में ही आपस में धमर्युद्ध क्यों न हो जावे, मंत्रियों की प्रार्थना को स्वीकार कर भरत-बाहुबली के बीच दृष्टि युद्ध, जल युद्ध और मल्ल युद्ध इन तीन युद्धों का निणर्य हो जाता है। भरत का वर्ण सुवर्ण सदृश है और ऊँचाई पाँच सौ धनुष प्रमाण है। बाहुबली का वर्ण मरकतमणि के समान हरा है और ऊँचाई सवा पाँच सौ धनुष है। दृष्टियुद्ध में दोनों

भाई अपलक दृष्टि से एक-दूसरे को देख रहे हैं। कुछ क्षण बाद भरत की पलक झपक जाती है अत: बाहुबली की विजय मान ली जाती है। दोनों भाई सरोवर में उतरकर एक-दूसरे पर जल उछालते हैं। यहाँ भी भरत कद में नीचे होने से व्याकुल हो उठते हैं तब बाहुबली की जीत हो जाती है। ऐसे ही मल्ल युद्ध में भी बाहुबली भरत को उठा लेते हैं। पुन: सोचते हैं बड़े भाई का अविनय करना उचित नहीं है अत: वे उन्हें जमीन पर न पटक कर अपने वंधे पर बिठा लेते हैं। उस समय बाहुबली के पक्ष में जयकारे की ध्वनि होने लगती है और भरत के पक्ष में राजा लोग मस्तक नीचा कर लेते हैं। इधर बाहुबली भरत को अपने वंधे से उतारकर उच्चासन पर बिठा देते हैं। उस समय भरत अपमान से संतप्त हो उठते हैं और अपना चक्ररत्न बाहुबली के ऊपर चला देते हैं। तब सभी जनता के मुख से हाहाकार शब्द निकलने लगते हैं। बड़े-बड़े राजागण कह उठते हैं-राजन! बस हो, बस हो, आपका यह अतिसाहस बस हो। उधर चक्ररत्न बाहुबली की तीन प्रदक्षिणा देकर उन्हीं के पास खड़ा रह जाता है। इस घटना से बाहुबली का हृदय विरक्त हो उठता है। अहो! मेरे बड़े भाई भरत ने यह क्या किया ? जब इन्हें मालूम है कि चक्ररत्न अपने स्वजनों का घात नहीं कर सकता, तब पुन: क्रोध के आवेश में आकर यह लोकनिंद्य कार्य कैसे कर डाला ? बाहुबली कहते हैं-हे भाई! जिस नश्वर राज्य के लिए आपने यह साहस किया है वह आप का ही रहे, मैंने जो भी अपराध किया है उसे क्षमा करो, अब मैं जैनेश्वरी दीक्षा लेना चाहता हूँ। भरत का हृदय पानी-पानी हो जाता है, वह पश्चात्ताप करते हुए बार-बार बाहुबली को रोकना चाहते हैं परन्तु बाहुबली अपने बड़े पुत्र महाबली को राज्य देकर वन में जाकर नग्न दिगम्बर दीक्षा लेकर एक वर्ष के उपवास का नियम लेकर एक ही जगह निश्चल खड़े हो जाते हैं। इधर चक्रवर्ती का चक्ररत्न अयोध्या में प्रवेश करता है, भरत का साम्राज्य पद पर अभिषेक होता है। वह चक्रवर्ती इस छह खण्ड पृथ्वी के एकछत्र स्वामी बन जाते हैं। इधर बाहुबली योग साधना में लीन हैं। सर्पों ने उनके चरणों के निकट वामियाँ बना ली हैं। लताएँ चरणों के आश्रय से उन्हें वेष्टित करती हुई कंधे पर जा पहुँची हैं। बासंती बेल के सफेद-सफेद पुष्प उनके ऊपर पड़ते हुए अतिशय सुन्दर दिख रहे हैं। बाहुबली के ध्यान के प्रभाव से उस वन के क्रूर हिंसक सिंह, व्याघ्र आदि अपनी क्रूरता छोड़कर हरिण, गाय, मोर, नेवला आदि के साथ-साथ घास चरते हैं और क्रीड़ा करते हैं। सर्प भक्ति में विभोर हो नाच रहे हैं। उसी समय मयूर भी अपने पंख फैला कर नाचते हैं। सिंहनी हरिणी के बच्चे को दूध पिलाती है तो गाय शेरनी के बच्चे को दूध पिलाती है। सभी जात विरोधी जीव आपस में परम प्रीति को प्राप्त हो गये हैं। आकाश मार्ग में विद्याधर के विमान रुक जाते हैं, तब वे नीचे आकर बाहुबली महामुनि की भक्ति करके अतिशय पुण्य कमा लेते हैं। कभी-कभी स्वर्ग में देवों के आसन कंपने लगते हैं, तब वे अवधिज्ञान से बाहुबली के ध्यान का माहात्म्य समझकर उस तपोवन में आकर उनकी पूजा करते हैं। उस समय उनकी ध्यान की मुद्रा को देखकर ऐसा भास होता है कि-

करना नहीं रहा कुछ भी कृतकृत्य प्रभो! भुजलंबित हैं।
नहीं भ्रमण करना जग मे, अतएव-चरण युग अचलित हैं।।
देख चुके सब जग की लीला अंतरंग अब देख रहे।
सुन-सुन करके शांति न पाई अत: विजन में खड़े हुए।।

इस तरह अपनी आत्मा का ध्यान करते हुए उन महामुनि को एक वर्ष पूर्ण हो चुका है, उसी दिन भरतेश्वर आकर उनकी पूजा करते हैं, तब तत्क्षण ही बाहुबली को केवलज्ञान प्रगट हो जाता है। बाहुबली के मन में कभी-कभी यह विकल्प हो जाया करता था कि "भरत को मुझसे क्लेश हो गया है।" इसी कारण से केवलज्ञान होने में भरत के पूजन की अपेक्षा हुई थी।

केवलज्ञान होने के बाद इंद्र की आज्ञा से कुबेर गंधकुटी की रचना कर देते हैं। बाहुबली भगवान अपने दिव्य उपदेश से असंख्य भव्य जीवों को मोक्षमार्ग में लगाते हैं अनंतर श्री ऋषभदेव के पहले ही शेष कर्मों का नाश कर अक्षय, अनंत, अविनाशी मोक्षपद को प्राप्त कर लेते हैं। ये बाहुबली इस युग के चौबीस कामदेवों में प्रथम कामदेव हुए हैं और सर्वप्रथम ही मोक्ष गये हैं तथा इनके एक वर्ष के ध्यान की विशेषता भी अपने आप में विलक्षण ही रही है। यही कारण है कि चक्रवर्ती भरत उनके निर्वाण गमन के बाद उन बाहुबली की सवा पाँच सौ धनुष प्रमाण पन्ने की मूर्ति बनवाते हैं। इस इतिहास को आज असंख्य वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।

आज से १००० वर्ष पूर्व दक्षिण प्रान्त के गंगवंशी राजा राचमल्ल के प्रधानमंत्री और सेनापति श्रावक शिरोमणि चामुण्डराय हुए हैं। कहा जाता है कि एक दिन जब उन्हें पता चला कि भगवान बाहुबली की मूर्ति के दर्शन हेतु मेरी माता ने दूध का त्याग कर रखा है, तब वे पोदनपुर के लिए प्रस्थान कर देते हैं। मार्ग में श्रवणबेलगोल में पड़ाव डालते हैं। रात्रि में वष्माण्डिनी देवी के स्वप्न देने पर गुरुदेव आचार्य श्री नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती की आज्ञा से चामुण्डराय ५७ फुट ऊँची इस विशालकाय मूर्ति का निर्माण कराते हैं। ईसवी सन् ९८१ में इस गोम्मटेश बाहुबली मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई है।

बाहुबली का योग

आदि ब्रह्मा भगवान् ऋषभदेव के पुत्र कामदेव बाहुबली द्वितीय होकर भी अद्वितीय थे। उन्होंने एक वर्ष तक योग साधना के द्वारा अनेक ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त करके अपने में ही परम ज्योति स्वरूप केवलज्ञान को प्रगट किया था।

जब महामुनि बाहुबली ध्यान में खड़े थे, तब उनके शरीर पर पूरी वर्षा व्यतीत हो गई, ठण्डी ने बर्प और तुषार से उनके शरीर को ढ़क दिया और गर्मी ने भी सूर्य की संतप्त किरणों से उनके शरीर को संतप्त करने में कोई कमी नहीं रखी किन्तु बाहुबली बराबर ३६५ दिन तक निश्चल खड़े रहे। सर्पों ने वामियाँ बना लीं, लताएं उनके शरीर से

लिपट गईं और चिड़ियों ने घोंसले बना लिये फिर भी वे आत्मतत्त्व के चिंतन में और परमात्म तत्त्व के ध्यान में स्थिर थे, धर्मध्यान के अंतर्गत पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत ध्यान के बल से अपनी आत्मा को शुक्लध्यान के सन्मुख ले जाने में तत्पर थे। उनकी मुखमुद्रा उनके मन के आल्हाद को व्यक्त कर रही थी।

हम उनकी मूर्ति को देखकर उनका इतिहास पढ़कर २४ घंटे भी ऐसे निश्चल खड़े होने का अभ्यास करें। नहीं तो एक घंटा भी निश्चल पद्मासन मुद्रा से बैठने का ही अभ्यास करें। इतना भी नहीं कर सकते, तो कम से कम ५ मिनट भी शरीर को निश्चल करें, वाणी से मौन रहें और मन को इधर-उधर जाने से रोवे।

पदस्थध्यान के अंतर्गत "ह्रीं" एक बीजपद है। यह पाँच रंग का है और चौबीस तीर्थंकर का वाचक है। इसके पाँचों वर्णों में मन को घुमावें पुन: किसी एक वर्ण पर मन को रोकें-केन्द्रित करें। इस ह्रीं का वशेषण इस प्रकार है-

"ह" पीत वर्ण का है, इसमें स्वर्ण सदृश वर्ण वाले सोलह तीर्थंकर स्थित हैं। 'ई' हरित है इसमें हरे वर्ण वाले दो तीर्थंकर विराजमान हैं। कला "-" लाल वर्ण की है, इसमें लालवर्ण वाले दो तीर्थंकर स्थित हैं। नाद-अर्धचंद्राकार श्वेत वर्ण का है, इसमें श्वेतवर्ण वाले दो तीर्थंकर स्थित हैं और बिन्दु नीलवर्ण की है, इसमें नील वर्ण वाले दो तीर्थंकर स्थित हैं। इसके चारों तरफ किरणें निकल रही हैं। ऐसे इस बीजपद को अपने हृदय में विराजमान करके ऐसा चिंतवन करें, इस मंत्र पद की किरणों से मेरा सर्वांग व्याप्त हो रहा है। इस मंत्र का ध्यान करने से तमाम कर्मों की निर्जरा हो जाती है।

वैदिक परम्परा के अनुसार इन पाँच वर्णों को पाँच तत्त्व रूप से घटित किया जा सकता है। पीतवर्ण पृथ्वीतत्त्व है, हरितवर्ण जलतत्व है, लालवर्ण अग्नितत्त्व है, श्वेतवर्ण वायुतत्त्व है और नीलवर्ण आकाश तत्त्व है। वैसे यह पौद्गलिक शरीर भूतचतुष्टय से बना हुआ है। कोई-कोई इसमें आकाश तत्त्व को भी गर्भित करते हैं तथा अपनी पाँचों इन्द्रियों को इन पाँच तत्त्वों से संबंधित कहते हैं। इन तत्त्वों के दूषित होने से ही शरीर और इन्द्रियों में नाना प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। उन-उन वर्णों के ध्यान से उन-उन संबंधी व्याधियाँ भी नष्ट हो जाती हैं।

इस "ह्रीं" के उन-उन वर्णों में उन्हीं-उन्हीं वर्ण वाले तीर्थंकरों के नाममंत्र भी लिखे जाते हैं। इसका विशेष स्पष्टीकरण गुरुओं से समझना चाहिए। 'ध्यान साधना' पुस्तक से भी जानकारी ले सकते हैं।

भगवान् बाहुबली का दर्शन करने के लिए और उनका अभिषेक देखने के लिए आप लोग अति उत्सुक रहते हैं। उन्होंने जिस योग साधना के द्वारा आत्मसिद्धि प्राप्त की है, उसका प्रारंभिक विंचित् मात्र अंश यह बीजपद है। इसी प्रकार से 'ॐ' 'अर्हं' आदि अनेक बीजपद होते हैं। इनके ध्यान से, चिंतन से अथवा जाप से चिरसंचित पापों का नाश होता है, पुण्य का संचय होता है, अनेक मनोरथ सफल हो जाते हैं। सांसारिक सुख, संतति, संपत्ति की समृद्धि होती है। दु:ख, दारिद्र्य, रोग, शोक आदि नष्ट हो जाते हैं। मस्तिष्क का तनाव खत्म होता है। मानसिक शांति होती है और ब्लडप्रेशर, हृदय रोग आदि शांत हो जाते हैं। भूत, व्यंतर आदि के प्रकोप भी शांत हो जाते हैं और परम्परा से यह आत्मा अपने आपको परमात्मा भी बना लेता है अत: यह "ह्रीं" बीजपद रूप एकाक्षरी मंत्र का ध्यान अथवा जाप्य हमें उन महामना बाहुबली के निकट पहुँचाने वाला है, ऐसा दृढ़ विश्वास करके इसका ध्यान करना चाहिए।

क्या बाहुबली के शल्य थी ?

भगवज्जिनसेनाचार्य ने महापुराण में भगवान बाहुबली के ध्यान के बारे में जैसा वर्णन किया है उसके आधार से उनके शल्य मानना अवर्णवाद है। सो ही देखिए- "एकल विहारी अवस्था को प्राप्त बाहुबली ने एक वर्ष तक के लिए प्रतिमायोग धारण किया१। वे रस गौरव, शब्द गौरव और ऋद्धि गौरव इन तीनों से रहित थे, अत्यंत नि:शल्य थे२ और दस धर्मों के द्वारा उन्हें मोक्षमार्ग में अत्यंत दृढ़ता प्राप्त हो गई थी।"

तपश्चरण का बल पाकर उन मुनिराज के योग के निमित्त से होने वाली ऐसी अनेक ऋद्धियाँ प्रगट हो गई थीं। मतिज्ञान की वृद्धि से कोष्ठ बुद्धि आदि ऋद्धियाँ एवं श्रुतज्ञान की वृद्धि से समस्त अंग पूर्वों के जानने की शक्ति का विस्तार हो गया था। वे अवधिज्ञान में परमावधि को उलुंघन कर सर्वावधि को और मन:पयर्य में विपुलमति मन:पयर्यज्ञान को प्राप्त हुए थे।[२]

सिद्धान्त ग्रंथ का यह नियम है कि भावलिंगी व वृद्धिंगत चारित्र वाले मुनि के सर्वावधिज्ञान होता है तथा विपुलमति मन:पयर्य तो वर्द्धमान चारित्र वाले एवं किसी न किसी ऋद्धि से समन्वित मुनि के ही होता है।[२]

आगे भगवान जिनसेन सभी प्रकार की ऋद्धियों की प्रगटता मानते हुए कहते हैं। "उनके तप के प्रभाव से आठ प्रकार की विक्रिया ऋद्धि प्रगट हो गई थी। आमर्शौषधि, जल्लौषधि, क्ष्वेलौषधि आदि औषधि ऋद्धियों के हो जाने से उन मुनिराज की समीपता जगत का उपकार करने वाली थी। यद्यपि वे भोजन नहीं करते थे तथापि शक्तिमात्र से ही उनके रस ऋद्धि प्रगट हुई थी।[३]

उनके शरीर पर लतायें चढ़ गई थीं। सर्पों ने वामियाँ बना ली थीं और वे निर्भीक हो क्रीड़ा किया करते थे। परस्पर विरोधी तिर्यंच भी क्रूर भाव को छोड़कर शांतचित्त हो गये थे। विद्याधर लोग गति भंग हो जाने से उनका सद्भाव जान लेते थे और विमान से उतरकर ध्यान में स्थित मुनिराज की बार-बार पूजा करते थे। तप की शक्ति के प्रभाव से देवों के आसन भी बार-बार कंपित हो जाते थे जिससे वे मस्तक झुकाकर नमस्कार करते रहते थे।" कभी-कभी क्रीड़ा के लिए आई हुई विद्याधरियाँ उनके सर्व शरीर पर लगी हुई लताओं को हटा जाती थीं।[४]

इस प्रकार धारण किए समीचीन धर्मध्यान के बल से जिनके तप की शक्ति उत्पन्न हुई है, ऐसे वे मुनि लेश्या की विशुद्धि को प्राप्त होते हुए

शुक्लध्यान के सन्मुख हुए। एक वर्ष का उपवास समाप्त होने पर भरतेश्वर ने आकर जिनकी पूजा की है, ऐसे महामुनि बाहुबलि केवलज्ञान ज्योति को प्राप्त हो गये। यह भरतेश्वर मुझसे संक्लेश को प्राप्त हो गया, यह विचार बाहुबली के हृदय में रहता था इसीलिए केवलज्ञान ने भरत की पूजा की अपेक्षा की थी। प्रसन्नबुद्धि सम्राट भरत ने केवलज्ञान के उदय के पहले और पीछे विधिपूर्वक उनकी पूजा की थी। भरतेश्वर ने केवलज्ञान के पहले जो पूजा की थी वह अपना अपराध नष्ट करने के लिए की थी और केवलज्ञान के बाद जो पूजा की थी वह केवलज्ञान की उत्पत्ति का अनुभव करने के लिए की थी।[५]

इस प्रकार महापुराण के इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि भगवान बाहुबली को कोई शल्य नहीं थी। मात्र इतना विकल्प अवश्य था कि "भरत को मेरे द्वारा संक्लेश हो गया है, सो भरत के पूजा करते ही वह दूर हो गया।

आप जाइये, कहाँ जायेंगे, भरत की भूमि पर ही तो रहेंगे, ऐसे मंत्रियों के द्वारा व्यंगपूर्ण शब्द के कहे जाने पर बाहुबली कुछ क्षुब्ध से हुए और मान कषाय को धारण करते हुए चले गये तथा दीक्षा ले ली। उस समय से लेकर उन के मन में यही शल्य लगी हुई थी कि "मैं भरत की भूमि में खड़ा हूँ अत: उन्हें केवलज्ञान नहीं हो रहा था, तब भरत ने जाकर भगवान वृषभदेव से प्रश्न किया कि बाहुबली को एक वर्ष के लगभग होने पर भी अभी तक केवलज्ञान क्यों नहीं हुआ है। भगवान ने कहा- भरत! उसके मन में शल्य है अत: तुम जावो और समझाओ कि भला यह पृथ्वी किसकी है ? हमारे जैसे तो अनंतों चक्रवर्ती हो चुके हैं, फिर भला यह पृथ्वी मेरी कैसे है ? इत्यादि समाधान करने पर बाहुबली की शल्य दूर हुई और उन्हें केवलज्ञान प्रगट हो गया।

यह किवदंती महापुराण के आधार से तो गलत है ही, साथ ही सिद्धान्त की दृष्टि से भी बाधित ही है। जैसे कि शल्य तीन होती हैं-माया, मिथ्या और निदान। माया का अर्थ है वंचना-ठगना, छल, कपटपूर्ण व्यवहार करना। सो तो उन्हें थी नहीं। मिथ्याशल्य-मिथ्यात्व को कहते हैं।" मैं भरत की भूमि पर खड़ा हूँ, यह विपरीत मानना ही मिथ्यात्व शल्य कही जा सकती है। सो भी बाहुबली के मानना संभव नहीं है क्योंकि मिथ्यादृष्टि साधु के सर्वावधिज्ञान, मन:पयर्य ज्ञान और अनेकों ऋद्धियाँ प्रगट नहीं हो सकती थीं।" निदान शल्य का अर्थ है आगामी काल में भोगों की वांछा रखते हुए उसी का चिंतन करना। सो भी उन्हें नहीं मानी जा सकती है।

दूसरी बात यह है कि तत्त्वार्थसूत्र में श्री उमास्वामी आचार्य ने कहा है कि "नि:शल्योव्रती" जो माया, मिथ्यात्व और निदान इन तीनों शल्यों से रहित होता है, वही व्रती कहलाता है। पुन: यदि बाहुबली जैसे महामुनि के भी शल्य मान ली जावे तो वे महाव्रती क्या अणुव्रती भी नहीं माने जा सकेंगे। पुन: वे भावलिंगी मुनि नहीं हो सकते और न उनके ऋद्धियों का प्रादुर्भाव माना जा सकता है।

यदि कोई कहे कि पुन: एक वर्ष तक ध्यान करते रहे और केवलज्ञान क्यों नहीं हुआ, सो भी प्रश्न उचित नहीं प्रतीत होता। एक वर्ष का ध्यान तो अन्य महामुनियों के भी माना गया है। जैसे कि उत्तरपुराण में भगवान शांतिनाथ के पूर्वभवों में एक उदाहरण आता है- "वज्रायुध ने विरक्त हो सहस्रायुध को राज्य दिया पुन: क्षेमंकर तीर्थंकर के पास जैनेश्वरी दीक्षा ले ली और बाद में उन्होंने "सिद्धिगिरि" पर्वत पर जाकर एक वर्ष के लिए प्रतिमायोग धारण कर लिया। उनके चरणों का आश्रय पाकर बहुत से वमीठे तैयार हो गये। उनके चारों तरफ लगी हुई लतायें भी मुनिराज के पास जा पहुँचीं। इधर वज्रायुध के पुत्र सहस्रायुध ने भी विरक्त हो अपना राज्य शतबली को दिया और दीक्षा ले ली। जब एक वर्ष का योग समाप्त हुआ तब वे अपने पिता वज्रायुध के पास जा पहुँचे। अनंतर पिता-पुत्र दोनों ने चिरकाल तक तपस्या,[६] की, पुन: वैभार पर्वत पर पहुँचकर अन्त में सन्यास विधि से मरण कर अहमिन्द्र हो गये। यह प्रकरण भगवान शांतिनाथ के पाँचवें भव पूर्व का है। यह घटना पूर्व विदेह क्षेत्र की है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि विदेहादि क्षेत्रों में ऐसे-ऐसे महामुनि एक-एक वर्ष का योग लेकर ध्यान किया करते हैं।

भगवान बाहुबली चतुर्थकाल की आदि में क्या तृतीयकाल के अन्त में जन्मे थे और ध्यान में लीन हुए थे तथा मुक्ति भी तृतीय काल के अंत में प्राप्त की थी अत: उनमें एक वर्ष के ध्यान की योग्यता होना कोई बड़ी बात नहीं है, पुन: शल्य थी इसलिए केवलज्ञान नहीं हुआ, यह कथन संगत नहीं प्रतीत होता है। रविषेणाचार्य ने भी बाहुबली के शल्य का वर्णन नहीं किया है। यथा-"उन्होंने उसी समय सकल भोगों का त्याग किया और निर्वस्त्र.....दिगम्बर मुनि हो गये तथा एक वर्ष तक मेरु पर्वत के समान निष्प्रकंप खड़े रहकर प्रतिमायोग धारण कर लिया। उनके पास अनेक वामियाँ लग गईं जिनके बिलों से निकले हुए बड़े-बड़े सांपों और श्यामा आदि की हरी-हरी लताओं ने उन्हें वेष्टित कर लिया, इस दशा में उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हो गया।[७] अतएव भगवान बाहुबली के शल्य नहीं थीं।

कोई कहते हैं कि भरत के साथ ब्राह्मी-सुंदरी बहनों ने भी जाकर उन्हें संबोधा जब उनकी शल्य दूर हुई। यह कथन भी नितांत असंगत है क्योंकि भगवान वृषभदेव को केवलज्ञान होने के बाद पुरिमतालनगर के स्वामी भरत के छोटे भाई वृषभसेन ने भगवान से दीक्षा ले ली और प्रथम गणधर हो गये। ब्राह्मी ने भी दीक्षा लेकर आर्यिकाओं में प्रमुख गणिनी पद प्राप्त किया एवं सुंदरी ने भी दीक्षा ले ली।[८] इसके बाद चक्रवर्ती ने घर आकर चक्ररत्न की पूजा करके दिग्विजय के लिए प्रस्थान किया जहाँ उन्हें साठ हजार वर्ष लग गये। अनंतर आकर बाहुबली के साथ युद्ध हुआ है। अत: भगवान बाहुबली का आदर्श जीवन महापुराण के आधार से लेना चाहिए। चूँकि यह ग्रंथराज ऋषि प्रणीत होने से "आर्षग्रंथ" माना जाता है।

भगवान बाहुबली की मूर्तियाँ

दक्षिण कर्नाटक में मूडबिद्री के उत्तर में कारकल में एक बाहुबली की प्रतिमा विराजमान है जो कि ४१ फुट प्रमाण है। इसका निर्माण लगभग सन् १४३२ में हुआ है। मूडबिद्री से कुछ दूर वेणूर में ३५ फुट ऊँची बाहुबली की प्रतिमा है। इसका निर्माण सन् १६०४ में हुआ है। मैसूर के पास 'गोम्मटगिरि' नामक एक टीले पर १८ फुट ऊँची बाहुबली प्रतिमा है जो कि कुछ वर्ष पूर्व ही उपलब्धि में आई है।

कर्नाटक के बीजापुर जिले के 'बादामिपर्वत' शिखर के उत्तरी ढाल पर चार शैल में उत्कीर्ण गुहा-मंदिर है। उनमें से चौथे गुहा मंदिर के मण्डप में तीर्थंकर मूर्तियों के मध्य एक भगवान बाहुबली की मूर्ति है। यह ७ फुट ६ इंच है। इस मूर्ति की केशसज्जा दर्शनीय है। एक कांस्य मूर्ति भगवान बाहुबली की लगभग डेढ़ फुट ऊँची है। जो आज 'प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय, मुम्बई' में (क्र. १०५) रखी हुई है।

कालक्रम से तृतीय बाहुबली मूर्ति ऐहोल के इंद्रसभा नामक बत्तीसवें गुहा मंदिर की अर्द्धनिर्मित वीथि में उत्कीर्ण है। बीजापुर जिले के इस राष्ट्रकुलकालीन केन्द्र का निर्माण आठवीं-नवमी शती में हुआ है। इसी गुहा मंदिर में नौवीं-दशवीं शती में जो विविध चित्रांकन प्रस्तुत किये गये हैं उनमें एक बाहुबली का चित्र भी है। बाहुबली का इस रूप में यह प्रथम और संभवत: अंतिम चित्रांकन है। ऐसे ही अन्य स्थानों पर भी बाहुबली की मूर्तियाँ उपलब्ध होती हैं।

उत्तर भारत में भी जूनागढ़ संग्रहालय में एक मूर्ति बाहुबली की है जो नवमी शताब्दी की है, प्रभास पाटन से प्राप्त हुई है। खजुराहो में पार्श्वनाथ मंदिर की बाहरी दक्षिणी दीवार पर बाहुबली की मूर्ति उत्कीर्ण है जो दशवीं शताब्दी की है। लखनऊ संग्रहालय में एक मूर्ति १०वीं शताब्दी की है, जिसके चरण-मस्तक खण्डित हैं।

देवगढ़ में प्राप्त १०वीं शताब्दी की मूर्ति है जो वहीं के 'साहू जैन संग्रहालय' में रखी है। देवगढ़ में बाहुबली की ६ मूर्तियाँ प्राप्त हैं। बिलहरी (जिला-जबलपुर) म.प्र. से एक शिलापट्ट प्राप्त हुआ है जिस पर बाहुबली का प्रतिबिम्ब उत्कीर्ण है।

बीसवीं शताब्दी में आरा, फिरोजाबाद, धर्मस्थल-कर्नाटक, गोम्मटगिरि-इंदौर, सागर, हस्तिनापुर आदि स्थानों पर बाहुबली की प्रतिमा विराजमान हैं। भगवान ऋषभदेव के साथ भी बाहुबली-भरत मूर्तियों की परम्परा रही है। देवगढ़ में, खजुराहो में, ग्वालियर की गुफाओं में ऐसी मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं। एलोरा की गुफाओं में भगवान पार्श्वनाथ और बाहुबली की मूर्तियाँ कई जगह उत्कीर्ण हैं। कहीं-कहीं पर बाहुबली की मूर्तियों पर लता के साथ-साथ सांप और बिच्छू भी चढ़ते हुए दिखाए गये हैं। कहीं-कहीं पर दो महिलाएँ लता को थामे हुए दिखाई गई हैं। दक्षिण की बाहुबली मूर्तियों में प्राय: सांप की वामियाँ अवश्य रहती हैं।

यद्यपि भगवान बाहुबली तीर्थंकर नहीं थे फिर भी उनकी मूर्तियों का निर्माण, उनकी पूजा की परम्परा अतीव प्राचीन है। यह उनके अप्रतिम त्याग और तपश्चरण का ही प्रभाव है जो कि आज उनकी मूर्ति की स्थापना से दिगम्बरत्व के गौरव को सर्वतोमुखी कर रहा है।

टिप्पणी

१. मतिज्ञानसमुत्कर्षात् कोष्ठबुद्ध्यादयोऽभवन। श्रुतज्ञानेन विश्वांङ्गपूर्वविस्तारादिविस्तर:।।१४६।। परमावधिमुल्लंघ्य स सर्वावधिमासदत। मन:पर्यय्यबोधे च संप्रापद् विपुलां मतिम।१४७।।

२.तत्त्वार्थराजवार्तिक, अ,

३. विक्रियाऽष्टतयी चित्रं प्रादुरासीत्तपोबलात.....।।१५२।। प्राप्तौषधर्द्धेरस्यासीत् सन्निधिर्जगते हित:। आमर्श क्ष्वेलजल्लाद्यै: प्राणिनामुपकारिण:।।१५३।। अनाशुषोऽपि तस्यासीद् रसर्द्धि:शक्तिमात्रत:। तपोबल समुद्भूता बलर्द्धिरपि पप्रथे।।१५४।।

४.विद्याधर्य: कदाचिच्च क्रीड़ाहेतोरुपागत:। वल्लीरूद्वेष्ट्यामासुर्मुने: सर्वाङ्गसंगिनी:।।१८३।।

५. इत्युपारूढसद्ध्यनबलोद्भूततपोबल:। स लेश्या शुद्धिमास्कंदन् शुक्लध्यानोन्मुखोऽभवत।१८४।। वत्सरानशनस्यान्ते भरतेशेन पूजित:। स भेजे परमज्योति: केवलाख्यं यदक्षरम।१८५।। संक्लिष्टो भरताधीश: सोऽस्मत्त इति यत्किल। हृद्यस्य हार्दं तेनासीत् तत्पूजाऽपेक्षि केवलम।।१८६।। केवलाकीदयात् पाक्च पश्चाच्च विधिवद् व्यधात सपर्यां भरताधीशो योगिनोऽस्य प्रसन्नधी:।।१८७।। स्वाग:प्रमार्जनार्थेज्या प्राक्तनी भरतेशिन:। पाश्चात्त्याऽत्यायताऽपीज्या केवलोत्पत्तिमन्वभूत।१८८।।

६.अथ वज्रायुधाधीशो नप्तृकैवल्यदर्शनात लब्धबोधि: सहस्रायुधाय राज्यं प्रदाय तत।१३१।। दीक्षां क्षेमंकराख्यान तीर्थकर्तुरुपान्तग:। प्राप्य सिद्धिगिरौ वर्ष प्रतिमायोगमास्थित:।।१३२।। तस्य पादौ समालम्ब्य वाल्मीकं वह्वर्तत। वद्धच्यन्ति महात्मान: पादलग्नानपि द्विष:।।१३३।। व्रतिनं तं व्रतत्योऽपि मार्दवं वा समीप्सव:। गाढं रूढा: समासे दुराकण्ठमभितस्तनुम।१३४।। किञ्चित्कारणमुद्दिश्य वज्रायुधसुतोऽपि तत राज्यं शतबलि न्युच्चैर्निधाय निहतस्पृह:।।१३८।। संयमं सम्यगादाय मुनीन्द्रात् पिहिताश्रवात योगावसाने स प्रापद्वज्रायुधमुनीश्वरम।१३९।। तावुभौ सुचिरं कृत्वा प्रव्रज्यां सह दु:स्सहाम.....।।१४०।। (उत्तर पुराण पर्व-६३)

७. संत्यज्य स ततो भोगान् भूत्वा निर्वस्त्रभूषण:। वर्ष प्रतिमया तस्थौ मेरुवन्नि:प्रकम्पक:।।७५।। वल्मीकविवरोद्यातैरत्युग्रै: स महोरगै:। श्यामादीनां च वल्लीभि: वेष्टित: प्राप केवलम।।७६।। (पद्मपुराण, पर्व ४।)

८.महापुराण, पर्व २४।

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक – 2018

पंथवाद से विमुक्त हो विद्वानों ने किया भगवान बाहुबली का अक्षराभिषेक

578 विद्वान राष्ट्रीय जैन विद्वत सम्मेलन में हुए सम्मिलित

श्रवणबेलगोला। गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक महोत्सव 2018 के पूर्व आयोजित सम्मेलन श्रृंखला में राष्ट्रीय जैन विद्वत सम्मेलन 1 से 5 अक्टूबर 2017 तक श्रुतकेवली भद्रबाहु मण्डप, गोम्मटनगर, श्रवणबेलगोला में सम्पन्न हुआ। जिसमें अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद, विद्वत परिषद, तीर्थंकर ऋषभदेव विद्वत–शास्त्रि परिषद संस्थान, टोडरमल स्नातक परिषद, जैन विद्वत महासंघ, प्रभावना जनकल्याण परिषद, कर्नाटक दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद सहित देशभर की विद्वत संस्थाओं के 578 से अधिक विद्वानों ने सपरिवार सहभागिता कर एक इतिहास रचा। सभी विद्वानों ने गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबलीजी के चरणों में बैठकर श्रवणबेलगोला में चातुर्मासरत आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज सहित 84 पिच्छीधारी संतो के सान्निध्य व जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामी श्रवणबेलगोला के नेतृत्व में अपनी भावना को लिपिबद्ध कर गद्य–पद्य–आलेखों के माध्यम से गोम्मटेश्वर का 'अक्षराभिषेक' कर अपनी भक्ति–श्रद्धा–आस्था–विश्वास का अर्घ समर्पित कर बताया कि गोम्मटेश्वर के चरणों में केवल दिगम्बरत्व की जय–जयकार है यहाँ संकीर्ण मानसिकता व पंथवाद को कोई स्थान प्राप्त नहीं है। दिगम्बरत्व का विश्वमान्य तीर्थ श्रवणबेलगोला दिगम्बरत्व का महासागर है जो हमें मुक्तिपथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है ।

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के. जैन, कार्याध्यक्ष एस. जितेन्द्रकुमार, जनरल सेक्रेटरी सतीशचंद जैन, सम्मेलन प्रभारी सेक्रेटरी विनोद दोडण्णवर, सुरेश पाटील, विनोद बाकलीवाल, अशोक सेठी के साथ सम्मेलन की संयोजना अखिल भारतीय शास्त्री परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष व विद्वत सम्मेलन के सर्वाध्यक्ष डॉ. श्रेयांसकुमार जैन बड़ौत, अध्यक्ष अशोक बड़जात्या इन्दौर, संचालक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत' टीकमगढ़, ने सम्मेलन को निर्विवाद व समुचित व्यवस्थाओं के साथ सुन्दर रूप प्रदान किया।

अभूतपूर्व वेशभूषा में निकली शोभायात्रा

1 अक्टूबर को चामुण्डराय मण्डप में अभूतपूर्व नजारा था, समागत विद्वानों को विद्वानों की ड्रेस कुर्ता, धोती–दुपट्टा प्रदान किये गए थे, सभी एक जैसी वेशभूषा में आए। वहाँ पगड़ी लगाकर व जिनागम की चाबी भेंटकर सम्मानित किया गया। आचार्य संघ की उपस्थिति में अभिषेक पूजा, कलश स्थापना हुई

विद्वत सम्मेलन की झलकियां

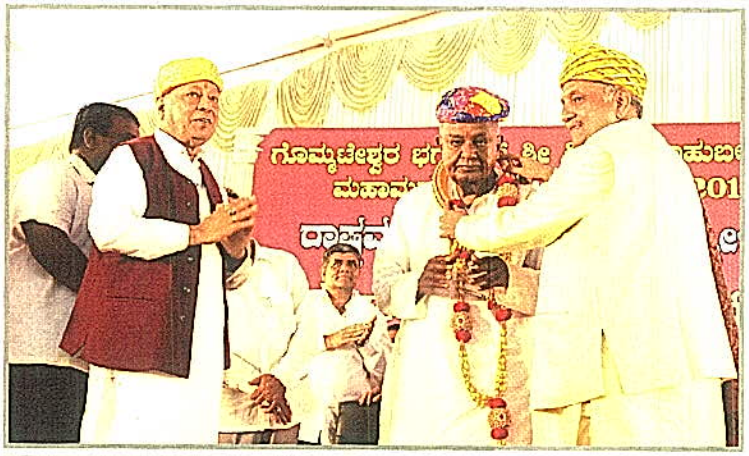

और भव्य शोभायात्रा निकाली गई। ड्रेस हेतु पूज्य स्वामीजी ने अपनी कल्पना अनुरूप पण्डित प्रवर टोडरमलजी द्वारा पहने जाने वाले राजस्थानी कुर्ते को पसंद किया गया था, जो सभी विद्वानों ने पहना, एक जैसी ड्रेस में समागत विद्वान अत्यंत उत्साहित नजर आ रहे थे।

द्वादशांग श्रुत स्कंध के साथ 23 भागों में थी शोभायात्रा

शोभायात्रा की कल्पना हम अपनी ऑखों से नहीं कर सकते, मैंने तो मेरे जीवन में जिनवाणी का इतना बहुमान पहली बार देखा, जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी की सोच अनुरूप द्वादशांग श्रुत स्कंध चांदी की पालकी में, पॉच तरह के बेण्ड, बैनर, झण्डे, लोगो, कलश, नादस्वर, मयूरा नृत्य, भजन ग्रुप, पूर्णकुंभ कलश आदि के साथ सुसज्जित रथ में सम्मेलन के सर्वाध्यक्ष व जैन जगत के सर्वमान्य प्रतिष्ठित विद्वत रत्न, श्रुताराधक डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत सपत्नीक बैठे थे, सुन्दर ट्राली में विशिष्ट विद्वानों में डॉ. शीतलचंद जैन जयपुर, पं. शिवचरणलाल जैन मैनपुरी, डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल जयपुर, डॉ. प्रेमसुमन जैन उदयपुर, ब्र. जयनिशांत टीकमगढ़, डॉ. अनुपम जैन इन्दौर, डॉ. जयकुमार जैन, डॉ. नलिन के. शास्त्री बोधगया, डॉ. ऋषभचंद जैन फौजदार वैशाली, डॉ. वीरसागर शास्त्री दिल्ली, पं. ऋषभसेन शास्त्री सांगली आदि विद्वान सम्मिलित थे। अभूतपूर्व शोभायात्रा को पूज्य स्वामीजी ने रवाना किया। जो भक्तिभाव से भक्ति–नृत्य करते हुए श्रुतकेवली भद्रबाहु सभा मण्डप गोम्मटनगर पहुँची।

दुर्लभ ग्रंथों की प्रदर्शनी

आयोजन स्थल पर प्राचीन विद्वानों के चित्र एवं जीवन परिचय, 185 दुर्लभ ग्रंथों की पाण्डुलिपियों का प्रदर्शन, व वर्तमान विद्वानों द्वारा रचित शास्त्रों की प्रदर्शनी बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत की गई थी, जिसका उद्घाटन पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी की उपस्थिति में प्रसिद्ध उद्योगपति आर.के. जैन रानेका इन्दौर ने किया। इस अवसर पर प्रचार उप–समिति के अध्यक्ष पुनीत जैन व स्वराज जैन (टाईम्स ऑफ इण्डिया) दिल्ली भी उपस्थित थे। इस हेतु पांडुलिपियां कुंदकुंद ज्ञानपीठ, इंदौर लश्करी गौड मंदिर एवं मारवाड़ी मंदिर इंदौर से ले जाई गई थी।

श्रवणबेलगोला विश्व गौरव तीर्थ – देवेगौड़ा

राष्ट्रीय जैन विद्वत सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए अपने प्रेरणादायी वक्तव्य में पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी. देवेगौड़ा ने कहा कि विद्वत सम्मेलन का उद्घाटन करना मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन है। सम्यक्दर्शन–ज्ञान–चारित्राणि मोक्षमार्गः का तीन बार उल्लेख करते हुए कहा कि श्रवणबेलगोला भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व का गौरवतीर्थ है। अत्यंत भावपूर्ण उद्बोधन में श्री देवेगौड़ा ने बताया कि जैन फिलासाफी व भगवान महावीर के सिद्धान्तों की जरूरत सम्पूर्ण विश्व को है, उस सिद्धान्त को फैलाने वाले समस्त विद्वानों को नमस्कार वंदन करता हूँ। पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी की सद्भावना, सदाशयता को प्रणाम करते हुए उन्हौंने स्वामीजी की तीन बार चरण वंदना कर उन्हें जैन संस्कृति का गौरव बताया।

अक्षर, शब्द, छंद, गद्य–पद्य से बाहुबलीजी का अक्षराभिषेक – पूज्य भट्टारक स्वामीजी

परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि विद्वत सम्मेलन महामस्तकाभिषेक के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित की जाने वाली घटना है। आज यहॉ सैकड़ो विद्वानों ने सहभागिता कर यह सिद्ध किया है कि भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक केवल जल–चंदन–दूध, अष्टगंध से ही नहीं गद्य–पद्य–छंद, व्याकरण, रोला, सोरठा आदि अक्षरों से भी किया जा सकता है। गोम्मटेश का विद्वानों के द्वारा यह अक्षराभिषेक महोत्सव है। पूज्य स्वामीजी ने सभी कार्यकर्ताओं का नामोल्लेख भी किया। मंगलाचरण सौम्या सर्वेश जैन श्रवणबेलगोला ने किया।

श्रवणबेलगोला की भूमि पर अनेक ग्रंथों का प्रणयन हुआ – डॉ. श्रेयांस जैन

सम्मेलन सर्वाध्यक्ष डॉ. श्रेयांसकुमार जैन बड़ौत ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह भूमि अनेक उपाधियों से विभूषित आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती के कारण भी प्रसिद्ध है, यहॉ अनेक ग्रंथों का प्रणयन हुआ है, गोम्मटसार जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड, लब्धिसार, त्रिलोकसार, क्षपणासार आदि ग्रंथों का प्रणयन हुआ है। पूज्य स्वामीजी विद्वानों के प्रति अपूर्व स्नेह रखते है, उनका वात्सल्य ही है कि इतने विद्वान यहॉ उपस्थित हुए है।

सम्मेलन व्यवस्थापन समिति के अध्यक्ष श्री अशोक बड़जात्या इन्दौर ने कहा कि विद्वतजन स्वयं एक ग्रंथ होते है, श्लोक करंड होते है, स्वपर प्रकाशक होते है, जो अपने शिष्यवृंदो एवं समाज को प्रकाशित करने का कार्य भी करते है। विद्वान सर्वत्र पूजे जाते है। सामाजिक निर्माण में विद्वानों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मुख्य अतिथि जस्टिस बालचंद्र वग्यानि

मुम्बई ने प्राकृत विश्वविद्यालय खोलने की अपील की। कन्नड़ साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता कर चुकी डॉ. कमला हम्पाना बैंगलूरू ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं का विमोचन श्री देवेगौड़ा, पूज्य स्वामीजी व विधायक सी.एन. बालकृष्ण, एम.ए. गोपाल स्वामी, नारायण गौड़ा, डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल, आर.के.जैन रानेका व मंचासीन अतिथियों ने किया। द्वादशांग रजत जिनवाणी व भद्रबाहु मुनि के प्रतिमा विग्रह का अनावरण व पूजन अतिथियों ने किया। अ.भा. दि.जैन शास्त्रि परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं विद्वत सम्मेलन अध्यक्ष डॉ.श्रेयांस कुमार जैन (बड़ौत) का भावभीना अभिनंदन पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामी के साथ पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी.देवेगौड़ा ने किया, जो विद्वत जगत के लिए अत्यंत गौरव का क्षण था ।

विद्वानों के बिना समाज दृष्टिविहीन – सरिता एम.के.जैन

सम्मेलन का प्रस्ताविक वक्तव्य देते हुए महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन ने कहा कि विद्वान समाज का मस्तिष्क है, उनके बिना उत्कृष्ट समाज की कल्पना नहीं की जा सकती, विद्वानों के बिना समाज दृष्टि विहीन है। सम्मेलन को संस्कृति संरक्षण, भक्ति का अद्भुत पर्व भी उन्होंने बताया व महोत्सव कमेटी की ओर से समागत विद्वानों का अभिनंदन किया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. संगीता विनायका इन्दौर, डॉ. सी.पी.कुसुमा जैन श्रवणबेलगोला ने व धन्यवाद ज्ञापन संयोजक सुरेन्द्र जैन बाकलीवाल इन्दौर ने किया।

उद्घाटन के बाद सम्पन्न प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. शीतलचन्द जैन ने की, जिसमें प्रो. प्रेमसुमन जैन, डॉ. जयकुमार जैन, डॉ. अनुपम जैन, डॉ. नलिन के. शास्त्री एवं डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल के उद्बोधन हुए। डॉ. भारिल्ल एवं डॉ. अनुपम का उद्बोधन सभी को वितरित किया गया।

विद्वान गहराई से चारों अनुयोगों का अध्ययन करें – आ. वर्धमानसागरजी

3 अक्टूबर को दोपहर में श्रवणबेलगोला में चातुर्मासरत 84 पिच्छीधारी संतो के सान्निध्य में प्रवचन संगोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रारम्भ में ब्र. डॉ. डी.राकेश सागर ने सिद्धायतन तीर्थ सागर में विराजित 130 किलो वजनी गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज स्फटिक मणि की प्रतिमा की जानकारी दी। मंगलाचरण संघस्थ दीदियों ने किया। सर्वाध्यक्ष डॉ. श्रेयांस जैन व सम्मेलन अध्यक्ष अशोक बड़जात्या ने सम्बोधित करते हुए साधु वृंद से मार्गदर्शन हेतु निवेदन किया। पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी ने कहा कि साधु हमारे मंगलमूर्ति है, श्रवणबेलगोला व विद्वानों का अविनाभावी सम्बंध है, महामस्तकाभिषेक में प्रारम्भ से ही विद्वत सम्मेलन की परम्परा है, जब भी महामस्तकाभिषेक होगा विद्वत सम्मेलन अवश्य होगा।

आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ने कहा कि इस काल में मोक्ष भले ही न होता हो लेकिन रत्नत्रय की प्राप्ति बिना पुण्य के नहीं होती है, सभी विद्वान चारों अनुयोगों का अध्ययन गहराई से करे।

आर्यिका जिनदेवी माताजी ने कहा कि विद्वान ज्ञान कलश से अभिषेक कर रहे है। प्रज्ञाश्रमण **मुनिश्री अमितसागरजी** ने कहा कि भगवान बनने की शुरूआत भोजन शुद्धि से होती है, प्रथमानुयोग प्रोत्साहन है, करणानुयोग पढ़ाई है, चरणानुयोग परीक्षा है, द्रव्यानुयोग रिजल्ट है। **आचार्य चन्द्रप्रभसागरजी** ने कहा कि जिनवाणी कंठस्थ करने से नहीं समझने से फायदा होगा। **आचार्य पंचकल्याणकसागरजी** ने कहा कि जिसने अपनी आत्मा को जान लिया उसने सब कुछ जान लिया। **आचार्य वासूपूज्यसागरजी** ने कहा कि जिनवाणी पर विश्वास है तो जिनवाणी के अनुसार अपनी दिनचर्या बनाए। संचालन ब्र. प्रदीप–पीयूष व ब्र. सिद्धा दीदी ने किया।

29 सत्रों में 157 आलेख प्रस्तुत हुए

वृहद सम्मेलन में जिनागम के महत्वपूर्ण विषय सम्यग्दर्शन, स्याद्वाद, आधुनिक पीढ़ी एवं संस्कार, आत्मोत्थान मे व्रतों की भूमिका, जैन दर्शन व योग, अनेकांतवाद, श्रवणबेलगोल अभिलेख, ऐतिहासिकता जिनमंदिर और वास्तुशिल्प, रत्नत्रय, संस्कृति, श्रमण परम्परा, प्रतिष्ठा, न्यायशास्त्र, अहिंसा, जैन आगम, आधुनिक विज्ञान, तीर्थ और तीर्थंकर, आयुर्वेद, जैन व्याकरण, ज्योतिष, समाधिमरण, विविध आयाम विषयों पर डॉ. शीतलचंद जैन, डॉ. जयकुमार जैन, डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल, डॉ. नलिन के. शास्त्री, डॉ. अनुपम जैन, ब्र. जयनिशांत, डॉ. प्रेमसुमन जैन, पं. विनोद जैन, डॉ. फूलचंद प्रेमी, पं. शिवचरणलाल जैन, डॉ. कमलेश जैन, डॉ. ब्र. अनिल जैन, डॉ. सुनील संचय, डॉ. ज्योति बाबू, डॉ. ऋषभचंद जैन फौजदार, डॉ. सुशील जैन, डॉ. अशोक जैन, डॉ. आनंदप्रकाश शास्त्री, डॉ. वीरसागर शास्त्री, पं. अभयकुमार शास्त्री, पं. जतीशचंद शास्त्री, एडवोकेट अनूपचंद जैन, पं. कुमुद सोनी, पं. वृषभदास शास्त्री, प्रो. शुभचंद्र, डॉ. नीलम जैन, डॉ. महेन्द्र जैन 'मनुज', डॉ. पंकज जैन, इंजी. दिनेश जैन, डॉ. भरत बाहुबली शास्त्री, डॉ. ज्योति

विद्वत सम्मेलन की झलकियां

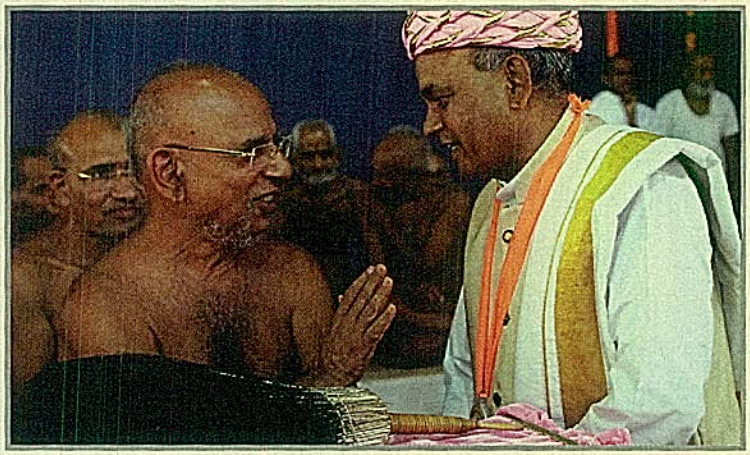

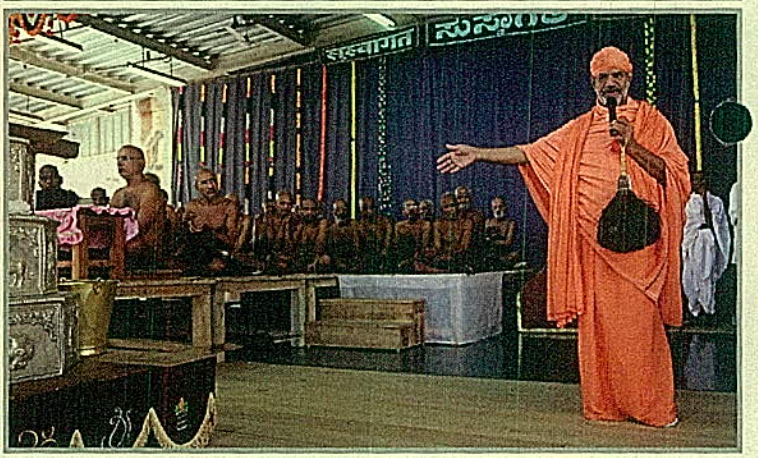

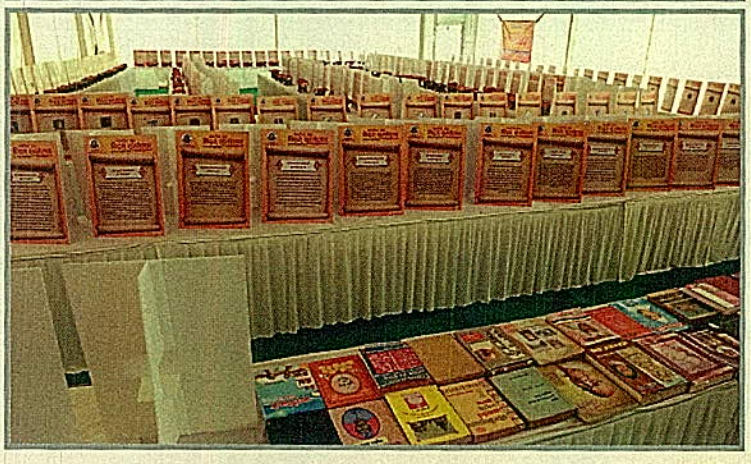

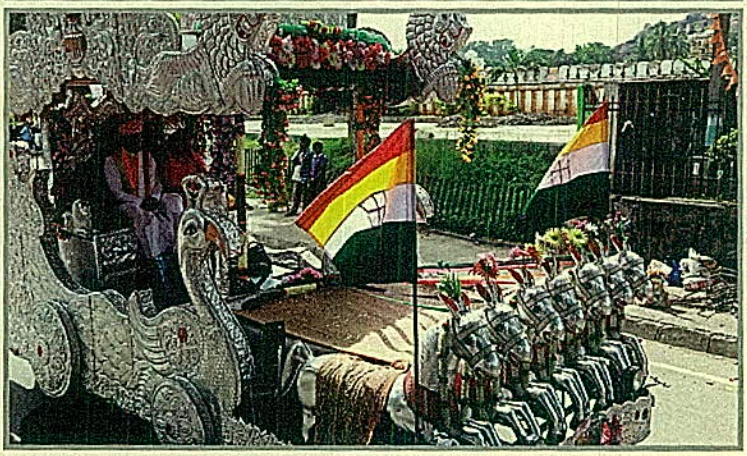

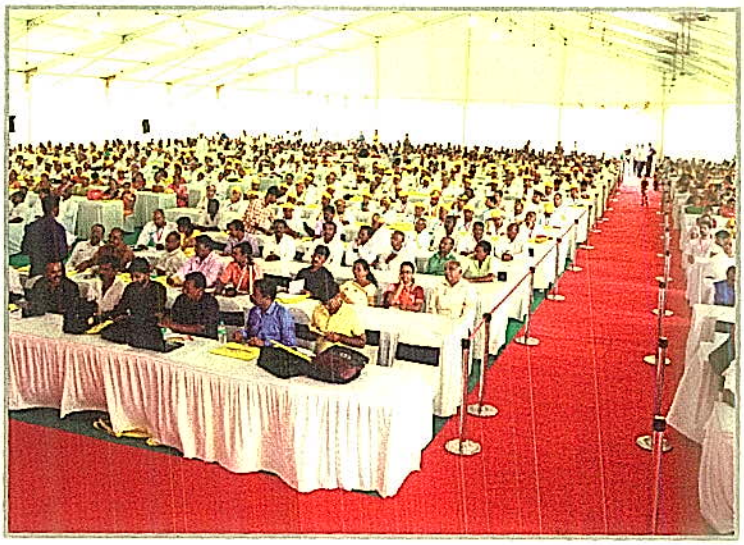

जैन, ब्र. डॉ. डी. राकेश, डॉ. संजीव गोधा, डॉ. अनेकांत जैन, ब्र. जिनेश मलैया, सुषमा जैन, डॉ. नरेन्द्र जैन, पं. भरत काला, डॉ. सनत जैन, पं. गौरव–सौरभ शास्त्री, वीर उमापति शास्त्री, पं. विनोद–सनत जैन, ब्र. समता दीदी, पत्रकार राजेन्द्र जैन 'महावीर', राजेन्द्र पाटिल, डॉ. सी.पी.कुसुमा, जम्बूकुमार जैन, डॉ. सुशील जैन, पं. सुरेश मारौरा, ब्र. प्रदीप पीयूष, प्राचार्य निहालचंद जैन, डॉ. राजेन्द्र बंसल, सुरेश जैन आई.ए.एस., डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा आदि 157 विद्वानों ने अपन आलेख प्रस्तुत किये। समागत समस्त विद्वतजनों को जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी की ओर से यथायोग्य सम्मान के साथ सम्मान निधि भेंट की गई । विद्वत सम्मेलन के संचालक अ.भा.शास्त्रि परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री प्रतिष्ठाचार्य ब्र.जय [illegible]ांत (टीकमगढ़) ने सभी के साथ समन्वय कर सुंदर समयानुकूल संचालन का दायित्व कुशलता पूर्वक निभाया ।

सभी विद्वान हुए हाईटेक मोबाईलधारी

समागत समस्त विद्वानों को सम्मेलन के मुख्य संयोजक नवीन जैन गजियाबाद के सौजन्य से 50 ग्रंथों से संग्रहित मोबाईल टेबलेट प्रदान किये गए।

उक्त टेबलेट में जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष सहित चारों अनुयोगों के अनेक मूलग्रंथ की पी.डी.एफ. लोड की गई है, जिन्हें विद्वान हमेशा अपने पास देख सकते है। प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भारतीय नृत्य कला शाला हासन, दिगम्बर जैन महिला मण्डल कालानी नगर इन्दौर व विश्व प्रसिद्ध नादयोग ग्रुप (रागीनी मक्खर) द्वारा कत्थक नृत्य मंचन व कुमारी कन्नगी (औरंगाबाद), आस्था–श्रद्धा जैन सनावद द्वारा नृत्य प्रस्तुति दी गई।

अहिंसा दिवस पर हुआ कवि सम्मेलन

2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिवस अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के अवसर पर उपस्थित विद्वानों में से कवि हृदय कवियों ने शानदार कवि सम्मेलन किया । सरस्वती व बाहुबली वंदना राजेन्द्र जैन 'महावीर'' ने की । डॉ. अल्पना जैन, डॉ.सुशील जैन आदि कवियों ने कविता पाठ किया । अध्यक्षता महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी ने कि व मुख्य अतिथि डॉ.श्रेयांस जैन (बड़ौत) थे । संचालन वरिष्ठ कवि डॉ. कैलाश मड़वैया (भोपाल) ने किया ।

समापन अवसर पर गोम्मटेश्वर महामस्तकाभिषेक महोत्सव राज्य सरकार समिति के प्रभारी मंत्री श्री ए.मंजू एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मलकुमार सेठी, विधायक सी.एन. बालकृष्ण, एम. ए. गोपालस्वामी, सम्मेलन के पदाधिकारीयों ने सभी का सम्मान किया। डॉ. एम. ए. जयचंद्र बेंगलूरू ने समापन भाषण दिया। संचालन पं. वृषभप्रसाद शास्त्री, ब्र. जयनिशांत, जैनेश झांझरी ने किया। विद्वत सम्मेलन कार्यकर्ता समूह के 71 युगल सदस्यों को सम्मानित किया गया । आभार सम्मेलन प्रभारी विनोद दोड्ण्णवर (बेलगॉव) ने व्यक्त किया। समागत विद्वानों को आसपास के तीर्थों की यात्रा दिनांक 6 से 8 अक्टूबर तक 13 आरामदायक बसों के माध्यम से कराई गई । समागत विद्वानों की आवास एवं भोजन की सुंदर व सुस्वादु व्यवस्था समयबद्ध तरीके से की गई। स्थानीय परम्परा के अनुसार डॉ.श्रेयांस जैन, श्रीमती ज्योति जैन का सम्मान श्रवणबेलगोला दि.जैन समाज ने किया ।

संलग्न चित्र : समारोह अवसर के ।

प्रेषक – अनुपमा जैन

राष्ट्रपति ने किया मूकमाटी के उर्दू संस्करण का विमोचन

रामटेक, भारत भूमि के प्रखर तपस्वी, चिंतक, कठोर साधक, लेखक, राष्ट्रसंत, दिगम्बर जैनाचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की दीक्षा के ५० वर्ष जून २०१८ में पूरे होने हैं । इसे 'संयम स्वर्ण महोत्सव' के रूप में देशभर में मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में साल भर अनेक कार्यक्रम पूरे भारतवर्ष के विभिन्न नगरों एवं ज़िलों में हो रहे हैं। इन दिनों चातुर्मास हेतु आचार्य श्री जी रामटेक, नागपुर में विराजमान हैं और प्रतिदिन हज़ारों की संख्या में देश और विदेशों से भक्तगण उनका आशीर्वाद प्राप्त करने पहुँच रहे है

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद जी ने भी आज अपनी व्यस्त दिनचर्या से कुछ बहुमूल्य समय आचार्य जी के सान्निध्य में बिताया और उनसे भारत और भारत के जनसामान्य के उत्थान, हथकरघा, स्वाबलंन व भारतीय भाषाओं के संरक्षण आदि विषयों पर चर्चा की । राष्ट्रपति कोविंद जी स्वयं प्रेरणा एवं ज्ञान के स्त्रोत हैं एवं उनकी और आचार्य जी की एक साथ श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, रामटेक के मंदिर में उपस्थिति, इस पावन भूमि के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगी । राष्ट्रपति जी ने आचार्य जी को श्रीफल भेंट कर आशीष ग्रहण किया।इस अवसर पर माननीय राष्ट्रपति ने मूकमाटी के उर्दू संस्करण का भी विमोचन भी किया आचार्य श्री जी ज्ञानी, मनोज्ञ तथा वाग्मी साधु हैं और साथ ही साथ में प्रज्ञा, प्रतिभा और तपस्या की जीवंत-मूर्ति भी हैं । कविता की तरह रम्य, उत्प्रेरक, उदात्त, ज्ञेय और सुकोमल व्यक्तित्व के धनी हैं विद्यासागर जी महाराज। राष्ट्रपति जी के साथ उनके साथ उनके बड़े भाई ने भी गुरुदेव के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री सी विद्यासागर राव जी, केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी व महाराष्ट्र के यशस्वी मुख्य मंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस ने भी आशीर्वाद प्राप्त किया। राष्ट्रपति जी व अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने गुरुदेव के दर्शन करने के बाद प्रसन्नता व्यक्त की।

इस दिनो भारत के सभी प्रमुख जैन मंदिरों में आचार्यश्री की विशेष संगीतमय पूजन का आयोजन हो रहा है। नगर-नगर वृक्षारोपण किया जाएगा, अस्पतालों/अनाथालयों/वृद्धाश्रमों में फल एवं जरूरत की सामग्री का वितरण, जरूरतमंदों को खाद्यान्न, वस्त्र वितरण आदि भी किया जा रहा है।

प्रदीप जैन

" श्रध्दांजली "

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के कोषाध्यक्ष श्री मनोजकुमारजी साहूजी औरंगाबाद इनके पिताश्री दुलीचंदसा नेमीचंदसा साहूजी (उम्र ९२ वर्ष) का देवलोकगमन दिनांक ०५ सितम्बर २०१७ को हुआ। यह समाचार जानकर अत्यंत दु:ख हुआ।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से हम हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं एवं विनम्र श्रध्दांजलि अर्पित करते हैं।

सिरि भूवलय पर दो दिवसीय शोध कार्यशाला

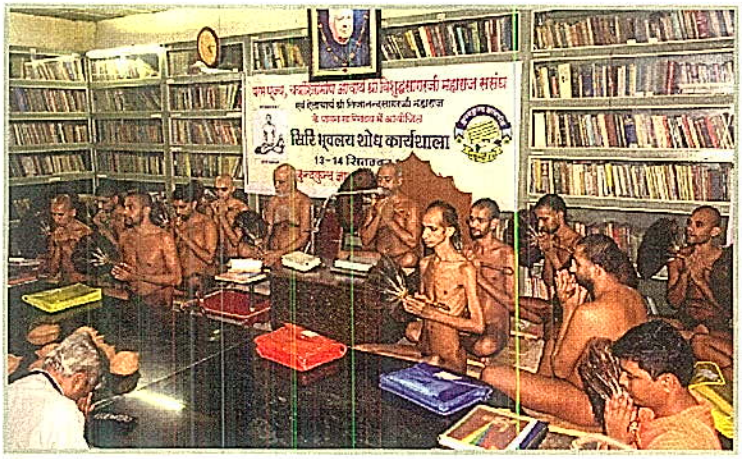

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर द्वारा मान्य शोध केन्द्र कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा तत्त्वचिंतन वर्षायोग समिति के सहयोग से आयोजित सिरि भूवलय पर दो दिवसीय शोध कार्यशाला पूज्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंघ, पूज्य ऐलाचार्य श्री निजानन्दसागर जी महाराज एवं एन.आर.पुरा के पूज्य भट्टारक श्री अनिभव लक्ष्मीसेन स्वामी जी के पावन सान्निध्य में कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ परिसर में 13–14 सितम्बर को सम्पन्न हुई। इसके 6 सत्रों में 12 आलेखों की प्रस्तुति दी गई।

दि.13.09.17 बुधवार / Wednesday, 9:30-10:45,

उद्घाटन सत्र / Inaugural Session

उद्घाटन सत्र में उपस्थित विद्वत्जन को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि 'संस्कृति की रक्षा के भाव संतान में ही होते हैं, लड़के तो मात्र संपत्ति के लिये लड़ते ही पाये जाते हैं। संपत्ति की रक्षा के बजाय संस्कृति को संरक्षित करें। जिस धर्म में दर्शन और साहित्य सुरक्षित हैं वही धर्म जिन्दा रहता है। जिस तरह ग्रंथ निर्ग्रंथ और अरिहंत किसी एक स्थान पर नहीं रहते ठीक उसी तरह सिरि भूवलय ग्रंथ किसी एक प्रांत का नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व में पुष्प की सुगंध की भांति फैला रहा है।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि लोकप्रिय विधायक **श्री महेन्द्र हार्डिया ने कहा** कि कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ समाज के लिये श्रेष्ठ कार्य कर रहा है और ऐसे ज्ञानपीठों की समाज को और आवश्यकता है। इसकी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान है। मैं डॉ. अनुपम जैन को बहुत समय से जानता हूँ। वे समर्पित होकर कार्य करते हैं।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के **कुलपति डॉ. नरेन्द्र धाकड़** ने कहा कि विश्वविद्यालय में बहाई पीठ एवं सिंधी पीठ है किन्तु जैन शोधपीठ नहीं है, इसकी आवश्यकता है। आपने आश्वस्त किया कि जैन धर्म के प्रचार एवं प्रसार हेतु विश्वविद्यालय स्तर पर जैन शोधपीठ की स्थापना हेतु हम हर संभव सहयोग प्रदान करेंगे। पहल जैन समाज को करनी है।

पूज्य ऐलाचार्य श्री निजानन्दसागर जी महाराज ने सिरि भूवलय की महत्ता बताते हुए कहा कि यह शास्त्रों का शास्त्र है। जिसमें विश्व की सारी मुख्य भाषायें उपलब्ध हैं। सभी प्रमुख विषय जैसे वास्तु, गणित, भौतिकी, आयुर्वेद, ज्योतिष, ऋग्वेद आदि का ज्ञान इसमें समाहित है।

एन. आर. पुरा कर्नाटक से पधारे भट्टारक श्री अभिनव लक्ष्मीसेन स्वामी जी ने सिरि भूवलय के अर्थ को समझाते हुए सिरि को संपत्ति, भ को भूमि एवं वलय को लोकाकाश बताते हुए कहा कि जो तकनीक इस ग्रंथ में अपनाई गई है उसके आगे आधुनिक तकनीक बोनी है।

डॉ. अनुपम जैन ने सिरि भूवलय की शोध के 70 वर्ष शीर्षक प्रास्ताविक उद्बोधन में सिरि भूवलय ग्रंथ का परिचय, ग्रंथ के कर्ता मुनि श्री कुमुदेन्दु जी का परिचय, संरक्षित पाण्डुलिपि की उपलब्धता, महत्ता तथा विगत 65–70 वर्षों में इस अद्वितीय ग्रंथ पर हुए शोध कार्यों की विस्तार से जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर देश एवं विदेश से पधारे सभी अतिथियों का स्वागत संस्था के अध्यक्ष डॉ.अजितकुमारसिंह कासलीवाल, श्री प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल, श्री आजाद जैन, श्री टी. के. वैद, श्री अशोक खासगीवाला श्री हसमुख जैन गाँधी, डॉ. अनुपमा विकास जैन, डॉ. सुरेखा मिश्रा, श्री प्रदीप गोयल आदि द्वारा किया गया।

सभा का शुभारंभ ब्र. अभय भैया के मंगलाचरण से हुआ। संगोष्ठी के संयोजक इंजी अनिल कुमार जैन द्वारा सिरि भूवलय पर कविता पाठ किया गया। सभा का सशक्त संचालन डॉ.

अनुपम जैन (निदेशक) द्वारा किया गया। स्वागत भाषण डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल द्वारा दिया गया। आभार श्री टी. के. वैद द्वारा व्यक्त किया गया। सभा में पं. रतनलाल शास्त्री, ब्र. अनिल जैन (अधिष्ठाता), प्रो. एस. के. बण्ड़ी, डॉ. संध्या जैन, डॉ. प्रगति जैन, डॉ. जितेन्द्र शर्मा, डॉ. सूरजमल बोबरा, डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, श्री रमेश कासलीवाल, श्री हेमन्त जैन पं.जयसेन जैन आदि शताधिक विद्वतजन् उपस्थित थे। इस अवसर पर राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, नई दिल्ली के सहयोग से सिरि भूवलय पर प्रकाशित एवं अप्रकाशित साहित्य की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उपस्थित जनसमुदाय द्वारा अवलोकन किया गया। सिरिभूवलय एक दुर्लभ पांडुलिपि है। कार्यशाला के 6 सत्रों में प्रस्तुत 12 आलेख निम्नानुसार है।

1. Dr. Anupam Jain, Indore
   सिरि भूवलय की शोध के 70 वर्ष
2. Sri Ajit Benadi, Germany
   Siribhoovalaya , what should be done?
3. Sri Nitin H.P., Bengaluru
   An Approach for Non-Kannada Scholars in Deciphering 'Siri Bhoovalaya'
4. Dr. Padmashree Anand, Bengaluru
   Challenges in the Research work on Siri Bhoovalaya
5. Dr. Mahendra Kumar Jain, Indore
   सिरि भूवलयः वैज्ञानिकों के लिए चुनौती
6. Er. Anil Kumar Jain, Indore
   सिरि भूवलय संरचना के कुछ पक्ष
7. Dr. Arvind Jain, Indore
   Software- Siri Bhoovalaya
8. Dr. Keval P.Jain, Bengaluru
   Brief introduction about Smt.Sharadadevi Adirajaiah Doddabele
9. Dr. M.G. Narsimhan, Bengaluru
   Indian Encryption Systems
10. Dr. Satish Kumar P. Kagwad, Bengaluru
    Scientific Perspective of Siri Bhoovalaya
11. Dr. S.P. Padmaprasad, Tumkuru
    Persian Language In Siri Bhoovalaya
12. Sri Dharnaendra Kumar S.J., Belagaavi
    Development in Siri Bhoovalaya Research

समापन सत्र / Valedictory Session, 3:30-04:30

डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न समापन सत्र को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि ' सिरि भूवलय ग्रंथ आगम की एक कृति है। उत्तर भारत जैन तीर्थंकरों की जन्म भूमि है, वहीं आगम की रक्षा का दायित्व दक्षिण भारत ने पूर्ण किया। जिसमें भट्टारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आदरणीय श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल को स्मरण करते हुए कहा कि उनके द्वारा स्थापित कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ की ख्याति आज देश में ही नहीं विदेशों में भी हो रही है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को संरक्षित करने हेतु जो महनीय कार्य आज कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा किये जा रहे हैं उनसे यह ज्ञानपीठ नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित होगी।'

इस अवसर पर पूज्य ऐलाचार्य श्री निजानन्दसागर जी महाराज ने 'सिरि भूवलय की महत्ता बताते हुए कहा कि यह शास्त्रों का शास्त्र है। विद्वानों को समर्पित होकर इसके शोध द को आगे बढ़ाना चाहिये। इस कार्य हेतु मेरा सहयोग एवं आशीर्वाद सदैव आपके साथ है और रहेगा।'

एन. आर. पुरा कर्नाटक से पधारे भट्टारक श्री अभिनव लक्ष्मीसेन स्वामी जी ने 'विद्वानों का सम्मान हमें क्यों करना चाहिये? पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि विद्वान समर्पित होकर हमारी संस्कृति, हमारे प्राचीन धरोहरों को सुरक्षित एवं संरक्षित करने का कार्य करते हैं। अतः हमारी समाज का भी यह दायित्व बनता है कि वह विद्वानों का सम्मान करें।

कार्यशाला के निदेशक डॉ. अनुपम जैन ने बताया कि 'प्रतिवर्ष सिरि भूवलय शोध कार्यशाला का आयोजन देश के विभिन्न प्रान्तों में किया जायेगा तथा इस कार्य को गति देने हेतु एक प्रारूप तैयार किया जा रहा है जिसमें समागत सभी विद्वानों के सुझावों को समाहित करते हुए इसे अन्तिम रूप प्रदान कि जायेगा एवं इसे शीघ्र प्रसारित किया जायेगा।

इस अवसर पर कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'जैन विज्ञान एवं आधुनिक विज्ञान' की प्रथम प्रति को पूज्य आचार्य श्री को समर्पित किया गया। इसका सृजन प्रो. एल. सी. जैन एवं सम्पादन डॉ. अनुपम जैन द्वारा किया गया है।

समागत सभी अतिथियों को प्रशस्ति पत्र एवं पूज्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज द्वारा लिखित साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यशाला संयोजक इंजी अनिल जैन को शाल, श्रीफल प्रशस्ति पत्र एवं साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यशाला में शताधिक विद्वानों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल के अध्यक्षीय संबोधन एवं आभार प्रदर्शन के साथ कार्यशाला संपन्न हुई।

श्री पावागढ़ दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र में गुरु मंदिर प्रतिष्ठा

- शिरीषचन्द्र शांतिलाल शाह

समाधिस्थ गुजरात संत केसरी आचार्य श्री 108 भरतसागरजी महाराज के गुरु मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव एवं ऊष्मा-सचि विश्रांति भवन का उद्घाटन समारोह।

मध्य गुजरात के एक मात्र सिद्धक्षेत्र जहां से लवकुश सहित पाँच करोड़ मुनि महाराज मोक्ष गए ऐसे पावागढ़ सिद्धक्षेत्र में श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर परिसर में समाधिस्थ गुजरात संत केसरी आचार्य श्री 108 भरतसागरजी महाराज के कमल गुरु मंदिर की प्रतिष्ठा एवं ऊष्मा-सचि विश्रांति भवन का उद्घाटन समारोह वि.सं. 2073 ज्येष्ठ कृष्ण 1 एवं 2, दिनांक 10-6-2017 से 11-6-2017 के दौरान मनाया गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में दिनांक 10-6-2017 शनिवार के दिन प्रात: 7.00 बजे मूल नायक 1008 श्री महावीर स्वामी भगवान तथा मूल नायक 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान के मंदिरों में अभिषेक तथा नित्य नियम पूजा की गई। तत्पश्चात दोपहर 12.30 बजे गुरु मंदिर वेदी शुद्धि अष्टकुमारिकाओं (1) विनुबेन राकेशमाई जैन (2) पूनम प्रतिकभाई शाह (3) दिव्या हेतल शाह (4) पलक मनन शाह (5) कोमल दीप शाह (6) रश्मिकाबेन जयेन्द्रभाई शाह (7) ज्योत्स्नाबेन रमेशभाई शाह (8) ग्रीषा गौरांग शाह, इसके अलावा पाँच इंद्रों की इंद्राणी (1) मीनाबेन महेशचंद्र शाह (2) धराबेन वर्धमान शाह (3) मीनाबेन गजेन्द्रभाई जैन (4) निर्मलाबेन सुभाषभाई परीख (5) रेखाबेन महेशभाई शाह (6) नयनाबेन हसमुखबाई शाह (7) विलासबेन हर्षदभाई शाह (8) रीटाबेन निरंजनभाई शाह (9) आरतीबेन जतीनभाई शाह (10) नीनाबेन कीर्तिकुमार शाह (11) पारुलबेन चिनूभाई शाह (15) कोकिलाबेन इन्द्रवदन भाई शाह के द्वारा की गई। इसके बाद वेदीन्यास, वेदी आच्छादन, वास्तुविधान एवं चतुर्दिक्षु हवन सौधर्म इन्द्र-इंद्राणी सहित पाचों इन्द्र इंद्राणी द्वारा की गई, सायंकाल 4.00 बजे ऊष्मा-सचि विश्रांति भवन का वास्तुविधान तथा हवन पांचों इन्द्र इंद्राणी द्वारा किया गया।

रात को 8.00 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम में (1) सोलो डांस कुमारी लब्धि सुरेशभाई शाह अहमदाबाद (2) टिप्पणी डांस अलकापुरी दिगंबर जैन समाज (वडोदरा) की 8 बहनों द्वारा किया गया। (3) गरबा वाडी (वडोदरा) महिला मण्डल की बहनो द्वारा किया गया।

ज्येष्ठ कृष्ण 2 रविवार दिनांक 16.6.2017 के दिन प्रात: 6.30 बजे ध्वजारोहण अजीतभाई जैन तथा अनिताबेन जैन द्वारा किया गया। ध्वजारोहण निर्ग्रंथ भट्टारक प्रात: स्मरणीय आचार्य श्री 108 जयसागरजी महाराज तथा बा.ब्र.क्षु. श्री 105 चंद्रमती माताजी के सान्निध्य में किया गया। तत्पश्चात सभी इंद्रों द्वारा सकलीकरण, अभिषेक तथा शांतिधारा की गई। प्रात: 8.00 बजे मंगल कलश स्थापना श्रीमति रेखाबेन बिपिनचन्द्र मनसुखलाल शाह द्वारा की गई। इसके बाद अखंड दीप प्रज्जवलन श्री जशवंतभाई विरचंदभाई शाह द्वारा किया गया। इसके बाद लघुयोग मण्डल विधान और शांति पाठ सभी इन्द्र-इंद्राणी द्वारा किया गया।

प्रात: 9.00 बजे गुरु मंदिर में सभी इन्द्र-इंद्राणीयों द्वारा आचार्य भरतसागरजी महाराज की मूर्ति की आकार शुद्धि विधि, पंचाचार के पाँच कलश, अनुयोग के चार कलश, एवं रत्नत्रय के तीन कलशों द्वारा शुद्धि की गई। तत्पश्चात् गुणारोपण, प्राण प्रतिष्ठा और उसके बाद मुखोद्घाटन श्री चिनूभाई चंदुलाल शाह द्वारा किया गया। बाद चन्दन लेपन सुवर्ण सौभाग्यवती बहनों (1) शीतलबेन हिमेशकुमार शाह (2) बिनिशबेन भरतेशभाई शाह (3) किंजलबेन हार्दिकभाई शाह (4) दीपाबेन शैलेशभाई शाह द्वारा किया गया। इसके बाद पंचामृत अभिषेक सौधर्म इन्दों द्वारा किया गया। अंत में शांतिधारा श्री वस्तुपालभाई सांकलचंद शाह द्वारा की गई। गुरुमंदिर के शिखर पर कलशारोहण श्री जतीनभाई प्रवीनचन्द्र शाह द्वारा किया गया।

कलशारोहण के बाद मुख्य मंडप में निर्ग्रंथ भट्टारक प्रात: स्मरणीय आचार्य श्री 108 जय सागरजी महाराज तथा बा.ब्र.क्षु. श्री 105 चंद्रमती माताजी के सान्निध्य में पधारे हुए महानुभावों की उपस्थिती में स्वागत गीत कुमारी लब्धि सुरेशभाई शाह ने गाया। आचार्य श्री भरतसागरजी महाराज के चित्र का अनावरण पुष्पाबेन प्रवीणचन्द्र शाह परिवार द्वारा किया गया। गुरुमंदिर नामकरण अनावरण श्री रमेशचन्द्र जोइताराम महेता, नरोडा द्वारा किया गया। गुरुदेव की आरती का लाभ श्री वस्तुपाल सांकलचंद शाह ने लिया।

स्वागत गीत के पश्चात मंच पर विराजमान महानुभावों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। उसके बाद आचार्य श्री 108 जयसागर महाराज ने संस्था के अध्यक्ष श्री महेशचन्द्र मगनलाल शाह को समाज गौरव पावागढ़ तीर्थ उद्धारक की पदवी से अलंकृत किया। पदवी का पठन पंडित श्री प्रदीपकुमारजी जैन मधुर द्वारा किया गया, जिसे उपस्थित समाज के भाई बहनों द्वारा तालियों से अनुमोदित किया। उपरांत आचार्य जय सागरजी महारा द्वारा श्री पार्श्व पद्मावती धाम बेड़िया की ओर से श्री महेशचन्द्र मगनलाल शाह का सर्टिफिकेट प्रदान कर सन्मानित किया। उसके बाद श्री पावागढ़ दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र कोठी की कार्यवाहक कमेटी द्वारा सन्मानपत्र देकर सन्मान किया। इस सन्मान पत्र का वांचन संस्था के महामंत्री श्री शिरीषचन्द्र शांतिलाल शाह द्वारा किया गया।

तत्पश्चात पंडित श्री प्रदीपकुमार जैन का सन्मान, संगीतकार पारस जैन, सभी गोड के प्रमुख, जैन युवा संघ के महानुभावों एवं इस कार्यक्रम में मददरूप अलग कमेटियों के कन्वीनरों का मेमेंटों/शाल/माला/श्रीफल से कार्यवाहक कमेटी के सभ्यो द्वारा कराया गया।

बाद पंडितजी श्री प्रदीपकुमार जैन ने प्रसंग के अनुरूप संबोधित किया। इसके बाद बा. ब्र. क्षु. श्री 105 चंद्रमती माताजी ने प्रचवन किया। अंत में आचार्य श्री जय सागरजी महाराजजी द्वारा प्रवचन किया गया। आचार्य श्री ने उपस्थित सभी महानुभावों को आशीर्वचन कहे।

संस्था के प्रमुख श्री जशवंतभाई विरचंदभाई शाह ने आधुनिक, वातानुकूलित ऊष्मा-सची विश्रांति भवन के उद्घाटन के लिए संस्था के अध्यक्ष श्री महेशचन्द्र मगनलाल शाह को विनंती की। साथ में ऊष्मा-सचि विश्रांति भवन के नामकरण के दाता श्री श्रेणिकभाई सुमंतलाल शाह एवं आचार्य श्री 108 जयसागरजी महाराज एवं बा.ब्र.क्षु. श्री 105 चंद्रमती माताजी के सान्निध्य में विश्रांति भवन का उद्घाटन किया।
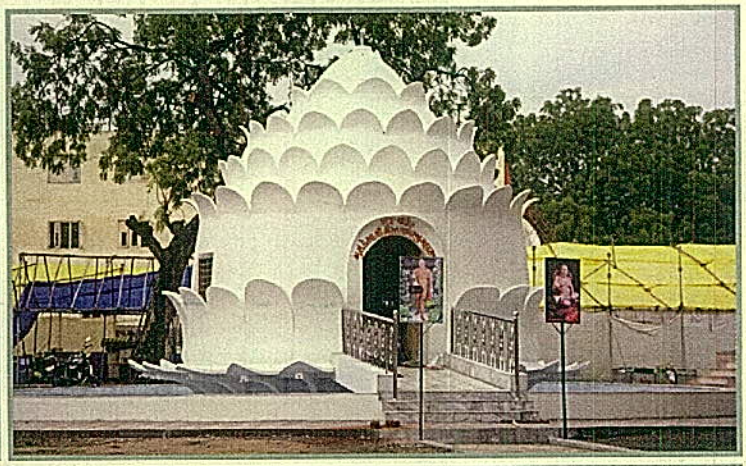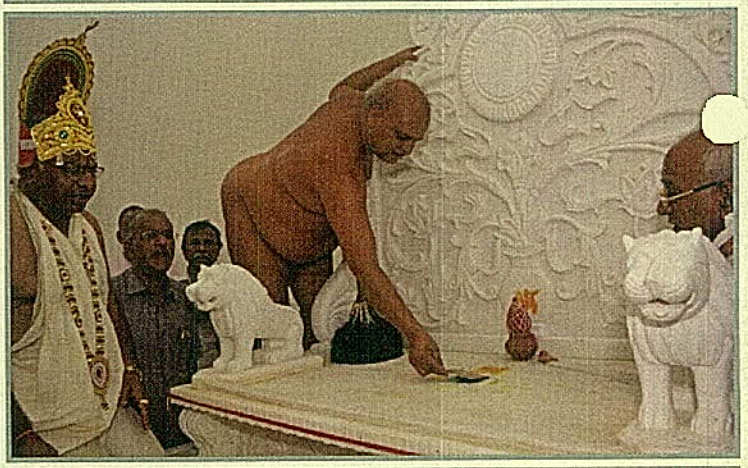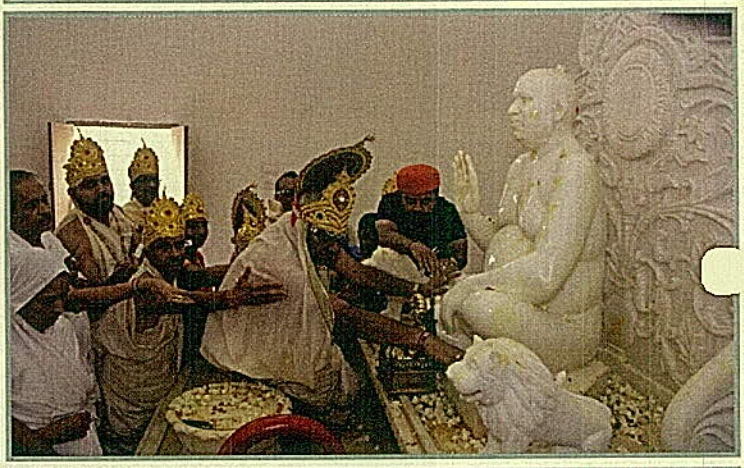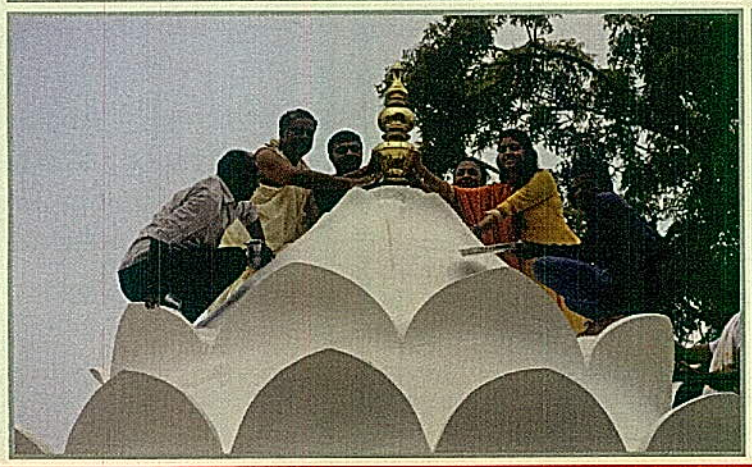
इस कार्यक्रम में भारत के विभिन्न राज्यों से धार्मिक भाई बहनों ने भाग लिया।